


TEST 03
Modern History

समय— 2 घंटे

उम्मीदवार का अनुक्रमांक

--	--	--	--	--	--	--

प्रश्न—पुस्तिका

प्रश्न पुस्तिका श्रृंखला

A

UPPSC 2026-27

पूर्णांक -200

प्रश्नों के उत्तर देने से पहले नीचे लिखे अनुदेशों को ध्यान से पढ़ ले

महत्वपूर्ण अनुदेश

1. इस प्रश्न पुस्तिका में कुल 150 प्रश्न हैं। सभी प्रश्नों पर समान अंक हैं। सभी प्रश्नों का प्रयास करें।
2. परीक्षा शुरू होने के तुरंत बाद, आपको अपनी प्रश्न पुस्तिका की जांच करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रश्न पुस्तिका श्रृंखला पुस्तिका के ऊपरी दाघे कोने पर छपी हुई है। यदि आप इस पुस्तिका में कोई त्रुटि पाते हैं, तो इसे तुरंत उसी श्रृंखला की पूरी पुस्तिका से बदलवा लें।
3. यदि मुद्रण या तथ्यात्मक प्रभुति की किसी भी प्रकार की गलती है, तो प्रश्नों के अंग्रेजी और हिंदी संस्करणों में से अंग्रेजी संस्करण को मानक माना जाएगा।
4. आपको इस पृष्ठ के शीर्ष पर दिए गए स्थान में अपना अनुक्रमांक अवश्य लिखना चाहिए। प्रश्न-पुस्तिका पर और कुछ न लिखें।
5. उत्तरों को चिह्नित करने के लिए निरीक्षक द्वारा आपको अलग से एक उत्तर पत्रक प्रदान किया जाएगा। आपको अपना नाम, रोल नंबर, प्रश्न पुस्तिका श्रृंखला और अन्य विवरण दिए गए उत्तर पत्रक के पृष्ठ-2 पर दिए गए स्थान में लिखना होगा, ऐसा न करने पर आपका उत्तर शीट का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।
6. आपको अपना रोल नंबर और प्रश्न पुस्तिका श्रृंखला ए, ए, बी या डी को कोड करना चाहिए क्योंकि यह प्रश्न पुस्तिका के ऊपरी दाघे कोने पर ब्लैक / ब्लू इंक बॉलपॉइंट पेन से आपके पृष्ठ-2 पर दिए गए स्थान पर मुद्रित है। उत्तर पत्रिका यदि आप अपनी प्रश्न पुस्तिका की सही श्रृंखला को एनकोड नहीं करते हैं या एनकोड करने में विफल रहते हैं, तो आपको उत्तर पुस्तिका का सही मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।
7. इस पुस्तिका में प्रश्न और उनके उत्तर अंग्रेजी और हिंदी संस्करणों में छपे हैं। प्रत्येक प्रश्न में पाँच उत्तर होते हैं: (ए), (बी), (सी), (डी), (डी)। आपको केवल एक सही उत्तर चुनने अपा प्रश्नों हैं और उसे अपनी उत्तर पुस्तिका में अंकित करना है। यदि आपको लगता है कि एक से अधिक सही उत्तर हैं, तो उस उत्तर को चिह्नित करें जो आपको सबसे अच्छा लगता है। किसी भी स्थिति में प्रत्येक प्रश्न के लिए केवल एक उत्तर चुनें। आपके कुल अंक उत्तर पत्रक में आपके द्वारा चिह्नित सही उत्तरों की संख्या पर निर्भर करेंगे। उत्तर पत्रक में, प्रत्येक प्रश्न के सामने पाँच गोल (A), (B), (C), (D), (D) हैं। प्रश्नों का उत्तर देने के लिए आपको प्रत्येक प्रश्न के लिए अपनी पसंद का केवल एक गोला काली/नीली स्याही के बॉलपॉइंट पेन से चिह्नित करना है। प्रत्येक प्रश्न के लिए केवल एक उत्तर का चयन करें और उसे अपनी उत्तर पत्रिका में चिह्नित करें।
8. उत्तर पत्रक में, प्रत्येक प्रश्न के सामने पाँच वृत्त हैं: (A), (B), (C), और (D)। प्रश्नों का उत्तर देने के लिए आपको प्रत्येक प्रश्न के लिए अपनी पसंद का केवल एक गोला काली/नीली स्याही के बॉलपॉइंट पेन से चिह्नित करना है। प्रत्येक प्रश्न के लिए केवल एक उत्तर का चयन करें और उसे अपनी उत्तर पुस्तिका में चिह्नित करें। यदि आप एक प्रश्न के लिए एक से अधिक वृत्त चिह्नित करते हैं, तो उत्तर को गलत माना जाएगा। उत्तर पत्रक में उत्तर अंकित करने के लिए केवल काली/नीली स्याही के बॉलपॉइंट पेन का ही प्रयोग करें। किसी भी मिथा या परिवर्तन की अनुमति नहीं है।
9. आपको प्रश्न-पुस्तिका में किसी भी शीट को हटाना या फाड़ना नहीं चाहिए। आपको परीक्षा के दौरान इस प्रश्न पुस्तिका और उत्तर पत्रक को परीक्षा हॉल से बाहर ले जाने की अनुमति नहीं है। परीक्षा समाप्त होने के बाद, आपको अपनी उत्तर पुस्तिका निरीक्षक को सौंपनी होगी। इसके बाद, आपको प्रश्न पुस्तिका अपने साथ ले जाने की अनुमति दी जाती है।
10. उपरोक्त किसी भी निर्देश का पालन करने में विफल रहने पर आप ऐसी कार्यवाही या दंड के लिए उत्तरदायी होंगे जो आयोग अपने विवेकानुसार तय कर

ध्यान दे: अनुदेशों का हिन्दी रूपान्तर इस पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ पर छपा है।

1 KREDOZ IAS ACADEMY www.kredoz.com Download App: kredoz – The learning AppPhone – 9582225699, 9648866818 Kredoz Mentorship Library Wazirabad Gali No. 06 Near Munafa Bazar, Sangam Vihar Road
H.O Office – Sector 52, Galaxy Vega Apartment Greater Noida, UP Brach office: Gali No 8/1 Wazirabad, Delhi 110084

1. प्लासी के युद्ध (1757) के संबंध में सही कथन चुनिए:

- (a) इसमें सिराजुद्दौला की सेना का नेतृत्व मीर जाफर ने किया और अंग्रेजों का साथ दिया
- (b) यह युद्ध वस्तुतः बिना किसी बड़े संघर्ष के ही निर्णायक हो गया, क्योंकि मीर जाफर, राय दुर्लभ व जगत सेठ पहले ही अंग्रेजों से मिल चुके थे
- (c) इस युद्ध में रॉबर्ट क्लाइव पराजित हुआ
- (d) इस युद्ध के पश्चात मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाया गया

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. बक्सर के युद्ध (1764) में अंग्रेजों ने मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला व मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के संयुक्त सेना को पराजित किया।
- 2. इस युद्ध के परिणामस्वरूप 1765 की इलाहाबाद संधि द्वारा कंपनी को बंगाल-बिहार-उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई। उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?
- (a) दोनों
- (b) केवल 2
- (c) केवल 1
- (d) कोई नहीं

3. निम्नलिखित में से कौन-सा युग बंगाल के नवाबों के सही कालानुक्रम को नहीं दर्शाता?

- (a) मुर्शिद कुली खाँ → अलीवर्दी खाँ → सिराजुद्दौला
- (b) सिराजुद्दौला → मीर जाफर → मीर कासिम
- (c) अलीवर्दी खाँ → सिराजुद्दौला → मुर्शिद कुली खाँ
- (d) मीर कासिम → मीर जाफर (द्वितीय बार) → नजमुद्दौला

4. मीर कासिम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. उसने राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित की।
- 2. उसने आंतरिक व्यापार शुल्क पूर्णतः समाप्त कर आंतरिक व बाह्य व्यापारियों के मध्य समानता स्थापित करने का प्रयास किया।
- 3. उसकी यह नीति अंग्रेज व्यापारियों के लिए लाभप्रद सिद्ध

हुई, जिससे संघर्ष टल गया।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

5. इलाहाबाद की संधि (1765) की शर्तों के संदर्भ में असत्य कथन चुनिए:

- (a) मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय को इलाहाबाद व कड़ा के जिले दिए गए
- (b) कंपनी को बंगाल-बिहार-उड़ीसा की दीवानी (राजस्व वसूली का अधिकार) प्राप्त हुई
- (c) अवध शुजाउद्दौला को पूर्णतः कंपनी में मिला लिया गया, कोई स्वतंत्र नवाब नहीं रहा
- (d) बादशाह को वार्षिक 26 लाख रुपये की पेंशन देने की व्यवस्था हुई

6. भारत में सर्वप्रथम आने वाली यूरोपीय शक्ति कौन-सी थी तथा उसका पहला व्यापारिक केंद्र कहाँ स्थापित हुआ?

- (a) डच — सूरत
- (b) पुर्तगाली — कालीकट (1498, वास्को द गामा)
- (c) अंग्रेज — मद्रास
- (d) फ्रांसीसी — पांडिचेरी

7. निम्नलिखित यूरोपीय कंपनियों को भारत आगमन के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:

- 1. डच ईस्ट इंडिया कंपनी
- 2. अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी
- 3. डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी
- 4. फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी

कूटः

- (a) 2-1-3-4
- (b) 1-2-3-4
- (c) 2-1-4-3
- (d) 1-2-4-3

8. निम्नलिखित युगों पर विचार कीजिए — यूरोपीय शक्ति व भारत में प्रमुख केंद्र:

1. पुर्तगाली — गोवा, दमन, दीव
 2. डच — पुलिकट, मसूलीपट्टनम
 3. डेनिश — सेरामपुर, ट्रांकेबार
 4. फ्रांसीसी — पांडिचेरी, चंद्रनगर
- इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) दो (b) तीन
(c) चारों (d) कोई नहीं

9. कर्नाटक युद्धों (Carnatic Wars) के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) द्वितीय कर्नाटक युद्ध में डूप्ले ने चंदा साहब व मुजफ्फर जंग का समर्थन किया, अंग्रेजों ने मुहम्मद अली का
(b) तृतीय कर्नाटक युद्ध वंडिवाश के युद्ध (1760) के साथ निर्णायक रूप से अंग्रेजों के पक्ष में समाप्त हुआ
(c) प्रथम कर्नाटक युद्ध यूरोप में हो रहे ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार युद्ध का ही विस्तार था
(d) उपर्युक्त सभी सही हैं

10. डूप्ले की भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप की नीति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. डूप्ले ने सर्वप्रथम भारतीय शासकों के आंतरिक उत्तराधिकार विवादों में हस्तक्षेप कर यूरोपीय प्रशिक्षित सेना की सहायता से अपने समर्थित उम्मीदवार को सत्तासीन करने की नीति अपनाई।
 2. यही तकनीक बाद में रॉबर्ट क्लाइव व अन्य अंग्रेज अधिकारियों ने भी अपनाई और अधिक सफलतापूर्वक क्रियान्वित की।
 3. डूप्ले को अंततः फ्रांसीसी कंपनी के निदेशकों ने वापस बुला लिया, क्योंकि उसकी नीतियाँ कंपनी के लिए आर्थिक रूप से लाभप्रद सिद्ध हुई थीं।
- उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) 1, 2 और 3 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 2 (d) केवल 1 और 3

11. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन पुर्तगालियों की भारतीय व्यापार-नीति (मुख्यतः अल्फांसो डी अल्बुकर्क के अधीन) के संदर्भ में सही नहीं है?

- (a) उनकी नीति विशुद्ध रूप से व्यापारिक थी, राजनीतिक विस्तार में उनकी कोई रुचि नहीं थी
(b) उन्होंने गोवा को अपनी राजधानी बनाया (1510 में जीता)
(c) उन्होंने 'कार्टाज़' (Cartaz) पद्धति द्वारा समुद्री व्यापार पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया
(d) उन्होंने हिंद महासागर में एकाधिकार स्थापित करने हेतु सैन्य शक्ति का प्रयोग किया

12. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन डच ईस्ट इंडिया कंपनी की भारत में गतिविधियों व उसके पतन के संदर्भ में सही है?

- (a) बेदरा का युद्ध (1759) में अंग्रेजों ने डचों को हुगली में निर्णायक रूप से पराजित किया, जिसके बाद बंगाल में डच शक्ति समाप्त हो गई
(b) दोनों (a) व (b) सही हैं
(c) डचों की मुख्य रुचि भारत के बजाय इंडोनेशिया (मसाला द्वीप समूह) में केंद्रित थी, अतः भारत में उन्होंने द्वितीयक भूमिका निभाई
(d) डच कंपनी का भारत में कोई सैन्य संघर्ष अंग्रेजों से कभी नहीं हुआ

13. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी को 1600 ई. में महारानी एलिजाबेथ प्रथम से चार्टर प्राप्त हुआ।
 2. भारत में कंपनी की प्रथम फैक्ट्री सूरत में 1613 ई. में स्थापित हुई, जिसकी अनुमति मुगल बादशाह जहाँगीर से सर टॉमस रो की सफल राजनयिक वार्ता (1615-19) के परिणामस्वरूप प्राप्त हुई मानी जाती है।
 3. वस्तुतः सूरत में फैक्ट्री-स्थापना की अनुमति टॉमस रो के आगमन से पूर्व ही, कैप्टन विलियम हॉकिन्स व अन्य के प्रारंभिक प्रयासों के आधार पर मिल चुकी थी; टॉमस रो की भूमिका मुख्यतः व्यापारिक सुविधाओं के औपचारिक सुदृढ़ीकरण तक सीमित थी।
- उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2 (b) 1, 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) केवल 2 और 3

14. महाराजा रणजीत सिंह के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) उन्होंने लाहौर पर अधिकार कर 1801 में स्वयं को महाराजा घोषित किया
- (b) उन्होंने अंग्रेजों के साथ 1809 में अमृतसर की संधि की, जिसमें सतलुज नदी को सीमा-रेखा माना गया
- (c) उनकी सेना 'फौज-ए-खास' यूरोपीय पद्धति से प्रशिक्षित थी
- (d) उपर्युक्त सभी सही हैं

15. हैदर अली व टीपू सुल्तान के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-69) मद्रास की संधि से समाप्त हुआ, जिसमें दोनों पक्षों ने युद्ध-पूर्व स्थिति बहाल करने पर सहमति दी।
- 2. द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान हैदर अली की मृत्यु हुई तथा युद्ध टीपू सुल्तान के नेतृत्व में मंगलौर की संधि (1784) से समाप्त हुआ।
- 3. तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध श्रीरंगपट्टनम की संधि (1792) से समाप्त हुआ, जिसमें टीपू को अपना आधा राज्य खोना पड़ा। उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) 1, 2 और 3
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 2
- (d) केवल 1 और 3

16. टीपू सुल्तान की प्रशासनिक व आर्थिक नीतियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. उसने भू-राजस्व वसूली में बिचौलियों (जमींदारों) की भूमिका को समाप्त कर राज्य द्वारा प्रत्यक्ष वसूली की व्यवस्था लागू की।
 - 2. उसने रेशम उत्पादन को प्रोत्साहन देकर मैसूर में रेशम उद्योग की नींव रखी।
 - 3. उसने फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित होकर स्वयं को 'नागरिक टीपू' घोषित किया तथा श्रीरंगपट्टनम में एक 'जैकोबिन क्लब' की स्थापना करवाई।
- उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) 1, 2 और 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) केवल 1 और 3

17. अंग्रेज-सिख युद्धों के संदर्भ में सुमेलित कीजिए:

- A. प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध — 1. लाहौर की संधि (1846)
- B. द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध — 2. पंजाब का विलय (1849)
- C. भैरोवाल की संधि — 3. 1846 (अल्पवयस्क दिलीप सिंह हेतु रीजेंसी व्यवस्था)

कूट:

- (a) A-3, B-1, C-2
- (b) A-2, B-1, C-3
- (c) A-1, B-2, C-3
- (d) A-1, B-3, C-2

18. 1857 के विद्रोह में विभिन्न केंद्रों के नेतृत्वकर्ताओं के संबंध में सुमेलित कीजिए:

A. दिल्ली —

- 1. बहादुर शाह द्वितीय
- B. कानपुर — 2. नाना साहेब
- C. झाँसी — 3. रानी लक्ष्मीबाई
- D. लखनऊ — 4. बेगम हजरत महल

कूट:

- (a) A-4, B-3, C-2, D-1
- (b) A-2, B-1, C-4, D-3
- (c) A-1, B-3, C-2, D-4
- (d) A-1, B-2, C-3, D-4

19. 1857 के विद्रोह के तात्कालिक कारण (चर्बी लगे कारतूस विवाद) के संबंध में सही कथन चुनिए:

- (a) एनफील्ड रायफल में प्रयुक्त कारतूसों में गाय व सुअर की चर्बी होने की अफवाह फैली
- (b) उपर्युक्त सभी सही हैं
- (c) इस विवाद ने हिंदू व मुस्लिम दोनों सैनिकों की धार्मिक भावनाओं को एक साथ आहत किया, जिससे व्यापक असंतोष फैला
- (d) मंगल पांडे ने बैरकपुर छावनी में इसी मुद्दे पर विद्रोह किया (मार्च 1857)

20. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सतारा (1848), झाँसी (1854) व नागपुर (1854) जैसे राज्यों का विलय लॉर्ड डलहौजी की 'व्यपगत सिद्धांत' (Doctrine of Lapse) नीति के अंतर्गत हुआ।

2. अवध का विलय (1856) भी इसी व्यपगत सिद्धांत के अंतर्गत हुआ, क्योंकि नवाब वाजिद अली शाह की कोई संतान नहीं थी।

3. अवध विलय से उत्पन्न असंतोष 1857 के विद्रोह के प्रमुख कारणों में से एक माना जाता है, विशेषतः क्योंकि बंगाल सेना के अधिकांश सैनिक अवध क्षेत्र से भर्ती किए जाते थे। उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) 1, 2 और 3 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) केवल 1 और 2

21. 1857 विद्रोह के दमन में निम्नलिखित में से किस अंग्रेज अधिकारी की भूमिका दिल्ली की पुनर्विजय से सर्वाधिक संबद्ध है?

- (a) आउट्रम (b) ह्यूरोज
(c) कैपबेल (d) जॉन निकोलसन व हडसन

22. 1857 के विद्रोह की प्रकृति (Nature) पर ऐतिहासिकों के मतों के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. सर जॉन सीले — केवल एक सैनिक विद्रोह (Sepoy Mutiny)
2. वी.डी. सावरकर — प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम
3. आर.सी. मजूमदार — न तो प्रथम, न राष्ट्रीय, न ही स्वतंत्रता संग्राम
4. एरिक स्टोक्स — सामंती प्रतिक्रिया (Elite/Feudal reaction), जनसाधारण की व्यापक भागीदारी नहीं
इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) चारों (b) तीन
(c) दो (d) कोई नहीं

23. निम्नलिखित में से कौन-सा केंद्र व उससे संबद्ध विद्रोही नेता का युग्म असंगत है?

- (a) बरेली — खान बहादुर खाँ
(b) फैजाबाद — मौलवी अहमदुल्लाह शाह

(c) बिहार (जगदीशपुर) — कुँवर सिंह

(d) इलाहाबाद — तात्या टोपे

24. गांधीजी के भारत में प्रारंभिक तीन आंदोलनों को सुमेलित कीजिए:

A. चंपारण सत्याग्रह (1917) —

1. नील की खेती करने वाले किसानों की समस्या
B. खेड़ा सत्याग्रह (1918) — 2. फसल-नष्ट होने पर भी लगान वसूली का विरोध
C. अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918) — 3. मिल मजदूरों की मजदूरी वृद्धि हेतु आंदोलन
कूट:

- (a) A-1, B-2, C-3 (b) A-2, B-1, C-3
(c) A-1, B-3, C-2 (d) A-3, B-2, C-1

25. रौलट सत्याग्रह (1919) व जलियाँवाला बाग हत्याकांड के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) रौलट एक्ट ने सरकार को बिना मुकदमा चलाए किसी भी व्यक्ति को नजरबंद करने का अधिकार दिया
(b) उपर्युक्त सभी सही हैं
(c) इस घटना के विरोध में रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी नाइटहुड की उपाधि त्याग दी
(d) जलियाँवाला बाग हत्याकांड 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी के दिन जनरल डायर के आदेश पर हुआ

26. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. चंपारण सत्याग्रह में गांधीजी ने 'तिनकठिया पद्धति' (जिसके अंतर्गत किसानों को अपनी भूमि के 3/20वें भाग पर नील की खेती करना अनिवार्य था) का विरोध किया।
2. इस सत्याग्रह में गांधीजी को राजकुमार शुक्ल के आमंत्रण पर चंपारण जाना पड़ा, जो स्वयं एक स्थानीय नील-किसान नेता थे।
3. इस आंदोलन की सफलता के फलस्वरूप 1918 में एक जाँच समिति गठित हुई, जिसकी सिफारिशों पर 'चंपारण कृषि अधिनियम' पारित हुआ।
उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) 1, 2 और 3 (b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3 (d) केवल 1 और 3

27. खिलाफत आंदोलन व असहयोग आंदोलन के संबंध के विषय में सही कथन चुनिए:

- (a) गांधीजी ने हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित करने हेतु खिलाफत आंदोलन को असहयोग आंदोलन के साथ जोड़ा
- (b) उपर्युक्त सभी सही हैं
- (c) अली बंधु (मुहम्मद अली व शौकत अली) खिलाफत आंदोलन के प्रमुख नेता थे
- (d) खिलाफत आंदोलन तुर्की के खलीफा की सत्ता व अधिकारों की रक्षा हेतु था, जो प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की की पराजय के बाद खतरे में पड़ गई थी

28. चौरी-चौरा कांड (फरवरी 1922) के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) इस घटना में क्रुद्ध भीड़ ने एक पुलिस थाने में आग लगा दी, जिसमें कई पुलिसकर्मी मारे गए
- (b) इस घटना के पश्चात गांधीजी ने असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया, क्योंकि यह अहिंसा के सिद्धांत का उल्लंघन था
- (c) इस निर्णय की आलोचना कुछ युवा नेताओं (जैसे सुभाष चंद्र बोस व जवाहरलाल नेहरू) ने की
- (d) उपर्युक्त सभी सही हैं

29. गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका प्रवास (1893-1914) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. उन्होंने वहाँ 'सत्याग्रह' शब्द व तकनीक का प्रथम प्रयोगात्मक विकास किया; इसका प्रारंभिक नाम 'निष्क्रिय प्रतिरोध' (Passive Resistance) ही था और बाद में इसे 'सत्याग्रह' नाम दिया गया।
 - 2. उन्होंने 'इंडियन ओपिनियन' नामक समाचार-पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया।
 - 3. 'टॉल्सटॉय फार्म' व 'फीनिक्स सेटलमेंट' नामक सामुदायिक बस्तियाँ भी इसी दक्षिण अफ्रीकी प्रवास के दौरान स्थापित हुईं।
- उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?
- (a) 1, 2 और 3
 - (b) केवल 2 और 3
 - (c) केवल 1 और 2
 - (d) केवल 1 और 3

30. ब्रह्म समाज व आर्य समाज के संस्थापकों को सुमेलित कीजिए:

- A. ब्रह्म समाज — 1. स्वामी दयानंद सरस्वती (1875)
- B. आर्य समाज — 2. राजा राममोहन राय (1828)
- C. प्रार्थना समाज — 3. आत्माराम पांडुरंग (1867)

कूट:

- (a) A-1, B-3, C-2
- (b) A-2, B-1, C-3
- (c) A-1, B-2, C-3
- (d) A-3, B-1, C-2

31. रामकृष्ण मिशन (1897) की स्थापना किसने की तथा इसका मुख्य उद्देश्य क्या था?

- (a) केशवचंद्र सेन — जाति-प्रथा का विरोध
- (b) राजा राममोहन राय — सती प्रथा का विरोध
- (c) ईश्वरचंद्र विद्यासागर — विधवा पुनर्विवाह
- (d) स्वामी विवेकानंद — सेवा व मानवतावादी वेदांत का प्रचार

32. आर्य समाज व ब्रह्म समाज के दार्शनिक दृष्टिकोण में अंतर के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) आर्य समाज वेदों को अंतिम प्रमाण मानता था तथा 'वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया
- (b) आर्य समाज ने शुद्धि आंदोलन के माध्यम से धर्मांतरित हिंदुओं की पुनः हिंदू धर्म में वापसी का कार्य किया
- (c) ब्रह्म समाज पश्चिमी तर्कवाद व एकेश्वरवाद से अधिक प्रभावित था, तथा मूर्ति-पूजा का विरोध करता था
- (d) उपर्युक्त सभी सही हैं

33. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए — सुधार आंदोलन व संस्थापक:

- 1. थियोसोफिकल सोसाइटी — मैडम एच.पी. ब्लावत्स्की व कर्नल एच.एस. ऑलकॉट (1875, अमेरिका में स्थापित, बाद में मुख्यालय अड्यार, मद्रास स्थानांतरित)
 - 2. अलीगढ़ आंदोलन — सर सैयद अहमद खाँ
 - 3. देव समाज — शिव नारायण अग्रिहोत्री
 - 4. सत्यशोधक समाज — ज्योतिबा फुले (1873, महाराष्ट्र)
- इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?
- (a) दो
 - (b) तीन
 - (c) चारों
 - (d) कोई नहीं

34. निम्नलिखित सामाजिक सुधार कानूनों को उनके कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. सती प्रथा निषेध अधिनियम
2. विधवा पुनर्विवाह अधिनियम
3. आयु सम्मति अधिनियम
4. शारदा अधिनियम/बाल विवाह निषेध अधिनियम

कूट:

- | | |
|-------------|-------------|
| (a) 1-2-3-4 | (b) 2-1-3-4 |
| (c) 1-3-2-4 | (d) 1-2-4-3 |

35. निम्नलिखित में से कौन-सा सुधारक-संगठन युग असंगत है?

- (a) ज्योतिबा फुले — सत्यशोधक समाज, जाति-प्रथा व ब्राह्मणवादी वर्चस्व के विरुद्ध आंदोलन
- (b) ज्योतिबा फुले — सत्यशोधक समाज की स्थापना बंगाल में की तथा यह मुख्यतः बंगाली भद्रलोक वर्ग तक सीमित रहा
- (c) नारायण गुरु — SNDP योग (श्री नारायण धर्म परिपालन योगम), केरल में एष्व जाति के उत्थान हेतु
- (d) पेरियार ई.वी. रामास्वामी — आत्म-सम्मान आंदोलन (Self-Respect Movement), तमिलनाडु

36. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. स्वामी दयानंद सरस्वती की प्रमुख रचना 'सत्यार्थ प्रकाश' है।
 2. आर्य समाज ने 1886 में लाहौर में दयानंद एंग्लो-वैदिक (DAV) कॉलेज की स्थापना की, जो पाश्चात्य व वैदिक शिक्षा के समन्वय का प्रतीक था।
 3. आर्य समाज पूर्णतः रूढ़िवादी संगठन था, जिसने आधुनिक/पाश्चात्य शिक्षा का हर रूप में विरोध किया, इसीलिए DAV कॉलेज की स्थापना नहीं हो सकी।
- उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?
- (a) केवल 1 और 2
 - (b) केवल 2 और 3
 - (c) केवल 1
 - (d) 1, 2 और 3

37. निम्नलिखित में से कौन 'यंग बंगाल आंदोलन' से संबद्ध थे?

- (a) देवेंद्रनाथ टैगोर
- (b) राजा राममोहन राय
- (c) केशवचंद्र सेन
- (d) हेनरी विवियन डेरोजियो

38. निम्नलिखित युगों पर विचार कीजिए — सामाजिक-धार्मिक आंदोलन व उनका क्षेत्रीय आधार:

1. वहाबी आंदोलन — सैयद अहमद बरेलवी, उत्तर भारत व पंजाब सीमा-प्रांत
 2. फरायजी आंदोलन — हाजी शरीयतुल्लाह, पूर्वी बंगाल
 3. अहमदिया आंदोलन — मिर्जा गुलाम अहमद, पंजाब (कादियान)
- इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) केवल एक
- (b) तीनों
- (c) केवल दो
- (d) कोई नहीं

39. सर सैयद अहमद ख़ाँ के अलीगढ़ आंदोलन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उन्होंने 1875 में मुहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना अलीगढ़ में की, जो बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (1920) बना।
 2. उन्होंने मुस्लिमों को अंग्रेजी शिक्षा व आधुनिक विज्ञान अपनाने हेतु प्रोत्साहित किया।
 3. उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का सक्रिय समर्थन किया तथा हिंदू-मुस्लिम एकता को कांग्रेस मंच पर बढ़ावा दिया।
- उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?
- (a) 1, 2 और 3
 - (b) केवल 2 और 3
 - (c) केवल 1 और 2
 - (d) केवल 1 और 3

40. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुधारक व उनके प्रमुख कार्यक्षेत्र/योगदान के संदर्भ में सुमेलित नहीं है?

- (a) ईश्वरचंद्र विद्यासागर — विधवा पुनर्विवाह हेतु आंदोलन, बंगाली वर्णमाला की पाठ्यपुस्तक रचना
- (b) बहरामजी मालाबारी — आर्य समाज के संस्थापक सदस्य, वेदों के अध्ययन हेतु समर्पित
- (c) पंडिता रमाबाई — महिला शिक्षा व विधवा-आश्रय (शारदा सदन) हेतु कार्य
- (d) बहरामजी मालाबारी — बाल-विवाह व जबरन वैधव्य के विरुद्ध अभियान (पारसी सुधारक)

41. निम्नलिखित में से किसने समाज-सुधार में सक्रिय भूमिका निभाते हुए 'गुलामगिरी' नामक पुस्तक लिखी?

- (a) पेरियार
- (b) बी.आर. आंबेडकर
- (c) ज्योतिबा फुले
- (d) नारायण गुरु

42. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. 1829 में सती प्रथा निषेध अधिनियम बंगाल प्रेसीडेंसी में लॉर्ड विलियम बैंटिक द्वारा लागू किया गया।
- 2. इस अधिनियम को लागू करवाने में राजा राममोहन राय के प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है।
- 3. इस अधिनियम के विरुद्ध रूढ़िवादी हिंदू संगठन 'धर्म सभा' (राधाकांत देव के नेतृत्व में) ने प्रिवी काउंसिल में अपील की, जो सफल रही और अधिनियम को अस्थायी रूप से निरस्त कर दिया गया।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) 1, 2 और 3
- (d) केवल 1

43. निम्नलिखित में से कौन-सा संगठन/आंदोलन दक्षिण भारत में जाति-विरोधी सुधार से संबंधित नहीं है?

- (a) आत्म-सम्मान आंदोलन (पेरियार)
- (b) SNDP योग (नारायण गुरु)
- (c) न्याय पार्टी (Justice Party)
- (d) प्रार्थना समाज (आत्माराम पांडुरंग)

44. भारत की सबसे पुरानी राजनीतिक संस्था मानी जाने वाली संस्था कौन-सी थी?

- (a) बंगभाषा प्रकाशिका सभा
- (b) ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन
- (c) जमींदारी एसोसिएशन/लैंडहोल्डर्स सोसाइटी
- (d) इंडियन एसोसिएशन

45. पूना सार्वजनिक सभा (1870) की स्थापना किसने की?

- (a) महादेव गोविंद रानाडे व गणेश वासुदेव जोशी
- (b) सुरेंद्रनाथ बनर्जी
- (c) दादाभाई नौरोजी
- (d) फिरोजशाह मेहता

46. निम्नलिखित संगठनों को उनकी स्थापना के कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:

- 1. बंबई एसोसिएशन
- 2. इंडियन एसोसिएशन
- 3. मद्रास महाजन सभा
- 4. बंबई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन

कूट:

- (a) 1-2-4-3
- (b) 2-1-3-4
- (c) 1-2-3-4
- (d) 2-1-4-3

47. सुरेंद्रनाथ बनर्जी व आनंद मोहन बोस द्वारा स्थापित 'इंडियन एसोसिएशन' (1876) के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) इसकी स्थापना का एक तात्कालिक कारण सिविल सेवा परीक्षा हेतु आयु-सीमा घटाया जाना था (19 वर्ष)
- (b) उपर्युक्त सभी सही हैं
- (c) यह संगठन बाद में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन में विलीन होने वाले प्रमुख संगठनों में से एक माना जाता है
- (d) इस संगठन ने 1883 में इल्बर्ट बिल विवाद के दौरान सक्रिय भूमिका निभाई

48. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन (1851) का गठन बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी व जमींदारी एसोसिएशन के विलय से हुआ था।
2. इस संगठन ने मुख्यतः जमींदार वर्ग व उच्च वर्ग के हितों का प्रतिनिधित्व किया, व्यापक जनसाधारण के मुद्दों से इसका सरोकार सीमित था।
3. इसी संगठन ने 1885 में सीधे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन का आयोजन करवाया।

उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) केवल 1 और 3 (b) केवल 2 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 1 और 2

49. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म संगठन व उसके संस्थापक/प्रमुख व्यक्ति के संदर्भ में सुमेलित नहीं है?

- (a) मद्रास महाजन सभा — एम. वीरराघवाचारी, जी. सुब्रमण्यम अय्यर
(b) बंबई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन — फिरोजशाह मेहता, के.टी. तेलंग, बदरुद्दीन तैयबजी
(c) पूना सार्वजनिक सभा — दादाभाई नौरोजी द्वारा बंबई में स्थापित
(d) इंडियन एसोसिएशन — सुरेंद्रनाथ बनर्जी, आनंद मोहन बोस

50. निम्नलिखित में से किस घटना/विवाद ने कांग्रेस-पूर्व काल में भारतीयों के राजनीतिक संगठनों को अखिल भारतीय स्तर पर एकजुट होने हेतु प्रेरित किया?

- (a) वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट (1878) (b) आर्म्स एक्ट (1878)
(c) इल्बर्ट बिल विवाद (1883) (d) उपर्युक्त सभी

51. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' की स्थापना 1866 में लंदन में दादाभाई नौरोजी द्वारा की गई थी, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश जनमत को भारतीय हितों के पक्ष में करना था।
 2. यह संगठन भारत में नहीं, बल्कि इंग्लैंड में सक्रिय था, अतः इसका भारतीय राजनीति के आंतरिक विकास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
- उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) कोई नहीं (b) केवल 2
(c) दोनों (d) केवल 1

52. अनुशीलन समिति की स्थापना किस उद्देश्य से व कहाँ हुई?

- (a) कलकत्ता, 1902 — क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रसार व शारीरिक-मानसिक प्रशिक्षण हेतु
(b) पंजाब, 1913 — विदेशों में बसे भारतीयों को संगठित करने हेतु
(c) बंगाल, 1928 — मजदूर आंदोलन हेतु
(d) महाराष्ट्र, 1897 — प्लेग-रोधी उपायों के विरुद्ध

53. गदर पार्टी (1913, अमेरिका) के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) इसकी स्थापना सोहन सिंह भाखना के नेतृत्व में हुई, तथा लाला हरदयाल इसके प्रमुख विचारक थे
(b) इसका मुख्यालय सैन फ्रांसिस्को में था तथा 'गदर' नामक पत्र का प्रकाशन होता था
(c) उपर्युक्त सभी सही हैं
(d) प्रथम विश्व युद्ध के प्रारंभ होने पर गदर पार्टी के सदस्यों ने भारत लौटकर सशस्त्र विद्रोह की योजना बनाई

54. काकोरी षड्यंत्र कांड (1925) व हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. काकोरी कांड में सरकारी खजाना लूटने की योजना राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में क्रियान्वित हुई।
 2. इस कांड में अशफाकउल्ला खाँ, राजेंद्र लाहिड़ी व रोशन सिंह को भी फांसी की सजा हुई।
 3. काकोरी कांड की असफलता व कठोर दमन के पश्चात HRA का पुनर्गठन 1928 में 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (HSRA) के रूप में हुआ, जिसमें भगत सिंह व चंद्रशेखर आजाद प्रमुख थे।
- उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) केवल 1 और 3 (b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

55. निम्नलिखित क्रांतिकारी घटनाओं को कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. अलीपुर बम कांड
 2. काकोरी कांड
 3. चटगाँव शस्त्रागार छापा
 4. भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त द्वारा असेंबली बम कांड
- कूट:

- (a) 1-2-4-3 (b) 1-2-3-4
(c) 2-1-4-3 (d) 1-4-2-3

56. निम्नलिखित युगों पर विचार कीजिए — क्रांतिकारी संगठन/घटना व संबद्ध व्यक्ति:

1. चटगाँव शस्त्रागार छापा (1930) — सूर्य सेन ('मास्टरदा')
 2. लाहौर षड्यंत्र कांड (1928-29, सांडर्स हत्या) — भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव
 3. अलीपुर बम कांड (1908) — अरविंद घोष, बारींद्र घोष
 4. मुजफ्फरपुर बम कांड (1908) — खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी — इसमें किंग्सफोर्ड को मारने का लक्ष्य था, किंतु गलती से एक अन्य ब्रिटिश महिला की मृत्यु हुई
- इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) दो (b) तीन
(c) चारों (d) कोई नहीं

57. 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना किसने की?

- (a) विनायक दामोदर सावरकर
(b) रासबिहारी बोस
(c) सचिंद्रनाथ सान्याल
(d) भगत सिंह

58. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भगत सिंह व उनके साथियों ने 'नौजवान भारत सभा' (1926, लाहौर) की स्थापना की।
2. भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त ने असेंबली में बम फेंकते समय 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा लगाया तथा भागने के बजाय स्वेच्छा से गिरफ्तारी दी, ताकि अपने विचारों का व्यापक प्रचार हो सके।

3. सांडर्स-हत्या व असेंबली बम कांड — दोनों मामलों में भगत सिंह को एक साथ, एक ही मुकदमे में फांसी की सजा सुनाई गई।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 1 और 2

59. स्थायी बंदोबस्त (Permanent Settlement, 1793) किसने व कहाँ लागू किया?

- (a) थॉमस मुनरो — मद्रास
(b) लॉर्ड डलहौजी — पंजाब
(c) लॉर्ड कार्नवालिस — बंगाल, बिहार, उड़ीसा
(d) होल्ट मैकेंजी — उत्तर भारत

60. भू-राजस्व व्यवस्थाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. स्थायी बंदोबस्त में सरकार ने जमींदारों को भूमि पर वंशानुगत अधिकार प्रदान किए, लेकिन भू-राजस्व की माँग को स्थायी रूप से निश्चित कर दिया।
 2. रैयतवाड़ी व्यवस्था में किसान भूमि का स्वामी माना जाता था, किंतु राजस्व निर्धारण में सरकार और किसान के बीच कोई मध्यस्थ जमींदार नहीं था।
 3. महालवाड़ी व्यवस्था में राजस्व की जिम्मेदारी केवल व्यक्तिगत किसान की होती थी तथा पूरे गाँव की सामूहिक जिम्मेदारी का कोई प्रावधान नहीं था।
 4. रैयतवाड़ी व्यवस्था में भू-राजस्व की दर स्थायी बंदोबस्त की तरह स्थायी नहीं थी, बल्कि समय-समय पर उसका पुनर्निर्धारण किया जा सकता था।
- उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1, 2 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4

61. दादाभाई नौरोजी के 'निकास सिद्धांत' (Drain of Wealth Theory) के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) इसे उनकी पुस्तक 'Poverty and Un-British Rule in India' में विस्तार से प्रस्तुत किया गया
(b) इस सिद्धांत के अनुसार भारत की संपत्ति का एक बड़ा भाग बिना किसी प्रत्यक्ष आर्थिक प्रतिफल के इंग्लैंड को हस्तांतरित हो रहा था
(c) रमेशचंद्र दत्त ने भी अपनी पुस्तक 'Economic History of India' में इस सिद्धांत का समर्थन व विस्तार किया
(d) उपर्युक्त सभी सही हैं

62. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत के 'निर्औद्योगीकरण' (De-industrialization) की प्रक्रिया मुख्यतः हस्तशिल्प व कुटीर उद्योगों (विशेषतः वस्त्र उद्योग) के पतन से संबद्ध मानी जाती है।
2. यह प्रक्रिया मुख्यतः ब्रिटेन से सस्ते मशीन-निर्मित वस्त्रों के आयात व भारतीय वस्त्रों पर ब्रिटेन में लगाए गए उच्च आयात-शुल्क के कारण हुई।
3. निर्औद्योगीकरण से बेरोजगार हुए कारीगर पूर्णतः आधुनिक औद्योगिक क्षेत्र में समाहित हो गए, अतः कृषि क्षेत्र पर कोई अतिरिक्त दबाव नहीं पड़ा।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 2 और 3
(b) केवल 1 और 2
(c) 1, 2 और 3
(d) केवल 1 और 3

63. निम्नलिखित में से कौन-सा अकाल आयोग/समिति व उसके अध्यक्ष का युग सुमेलित नहीं है?

- (a) प्रथम अकाल आयोग (1880) — रिचर्ड स्ट्रेची
(b) द्वितीय अकाल आयोग (1898) — जेम्स लायल
(c) तृतीय अकाल आयोग (1901) — एंथोनी मैकडॉनल्ड
(d) प्रथम अकाल आयोग (1880) — लॉर्ड कर्जन की अध्यक्षता में गठित, जिन्होंने अकाल-राहत संहिता प्रथम बार प्रस्तुत की

64. महालवाड़ी व्यवस्था के प्रवर्तक के रूप में निम्नलिखित में से किसे जाना जाता है?

- (a) थॉमस मुनरो
(b) होल्ट मैकेंजी
(c) लॉर्ड कार्नवालिस
(d) जॉन शोर

65. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. रैयतवाड़ी व्यवस्था के अंतर्गत राजस्व की दर सामान्यतः महालवाड़ी की तुलना में अधिक कठोर मानी जाती है, क्योंकि इसमें कोई बिचौलिया संरक्षण उपलब्ध नहीं था।
 2. रैयतवाड़ी व्यवस्था का प्रवर्तन मुख्यतः थॉमस मुनरो व कैप्टन रीड द्वारा मद्रास प्रेसीडेंसी में किया गया।
 3. इस व्यवस्था में भू-स्वामित्व सीधे किसान को प्राप्त होने के कारण यह किसानों के लिए स्थायी बंदोबस्त की तुलना में सदैव अधिक लाभप्रद सिद्ध हुई।
- उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) 1, 2 और 3
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 2
(d) केवल 1 और 3

66. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन (1885, बंबई) के अध्यक्ष कौन थे?

- (a) दादाभाई नौरोजी
(b) व्योमेश चंद्र बनर्जी
(c) ए.ओ. ह्यूम
(d) सुरेंद्रनाथ बनर्जी

67. कांग्रेस के नरमपंथी (Moderate) व गरमपंथी (Extremist) चरणों के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) 1885-1905 का काल सामान्यतः 'नरमपंथी काल' माना जाता है, जिसमें प्रार्थना-पत्र व संवैधानिक तरीकों पर बल दिया जाता था
(b) 1905 में बंगाल विभाजन के पश्चात गरमपंथी विचारधारा (लाल-बाल-पाल) का उदय तीव्र हुआ
(c) 1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस नरमपंथी व गरमपंथी गुटों में विभाजित हो गई
(d) उपर्युक्त सभी सही हैं

68. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 1916 के लखनऊ अधिवेशन में कांग्रेस व मुस्लिम लीग के मध्य समझौता हुआ, जिसे 'लखनऊ पैक्ट' कहा जाता है।
 2. इसी अधिवेशन में नरमपंथी व गरमपंथी गुटों का पुनर्मिलन भी हुआ।
 3. इस समझौते में मुस्लिम लीग ने पृथक निर्वाचिका (Separate Electorate) की माँग को पूर्णतः त्याग दिया तथा संयुक्त निर्वाचिका को स्वीकार किया।
- उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) 1, 2 और 3
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 2
- (d) केवल 1 और 3

69. निम्नलिखित में से कौन कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष थे?

- (a) मौलाना अबुल कलाम आजाद
- (b) बदरुद्दीन तैयबजी (1887, मद्रास अधिवेशन)
- (c) रहीमतुल्ला सयानी
- (d) हकीम अजमल खाँ

70. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए — कांग्रेस अधिवेशन व महत्वपूर्ण घटना:

1. कलकत्ता अधिवेशन (1906) — स्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार व राष्ट्रीय शिक्षा के प्रस्ताव पारित (दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता)
 2. सूरत अधिवेशन (1907) — कांग्रेस का विभाजन
 3. लाहौर अधिवेशन (1929) — पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव, जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता
 4. हरिपुरा अधिवेशन (1938) — सुभाष चंद्र बोस प्रथम बार अध्यक्ष निर्वाचित
- इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) दो
- (b) तीन
- (c) कोई नहीं
- (d) चारों

71. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के पीछे 'सेफ्टी वाल्व सिद्धांत' (Safety Valve Theory) का क्या अभिप्राय है?

- (a) यह सिद्धांत बताता है कि ए.ओ. ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना भारतीय असंतोष को एक नियंत्रित व सुरक्षित मंच देकर बड़े विद्रोह को रोकने हेतु की
- (b) यह सिद्धांत बताता है कि कांग्रेस की स्थापना पूर्णतः भारतीयों की स्वतःस्फूर्त पहल थी
- (c) यह सिद्धांत कांग्रेस की आर्थिक नीतियों से संबंधित है
- (d) यह सिद्धांत बंगाल विभाजन से संबंधित है

72. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कांग्रेस के प्रारंभिक (नरमपंथी) नेताओं की मुख्य माँगों में विधान परिषदों का विस्तार, सिविल सेवा परीक्षा भारत व इंग्लैंड में एक साथ आयोजित करना, तथा सैन्य व्यय में कमी शामिल थी।
2. नरमपंथियों ने ब्रिटिश शासन की मूल संरचना के प्रति पूर्ण अविश्वास व्यक्त करते हुए इसके तत्काल व पूर्ण उन्मूलन की माँग की।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) कोई नहीं
- (b) केवल 2
- (c) दोनों
- (d) केवल 1

73. भारत के प्रथम गवर्नर जनरल (बंगाल के गवर्नर जनरल के रूप में) कौन थे?

- (a) लॉर्ड कार्नवालिस
- (b) वारेन हेस्टिंग्स (1773)
- (c) लॉर्ड विलियम बैंटिक (भारत के प्रथम गवर्नर जनरल, 1833 अधिनियम अंतर्गत)
- (d) लॉर्ड कैनिंग

74. भारत के प्रथम वायसराय कौन थे तथा यह पद किस अधिनियम के अंतर्गत सृजित हुआ?

- (a) लॉर्ड लिटन — 1878
- (b) लॉर्ड डलहौजी — चार्टर एक्ट, 1833
- (c) लॉर्ड मिंटो — 1909 अधिनियम
- (d) लॉर्ड कैनिंग — भारत सरकार अधिनियम, 1858

75. निम्नलिखित गवर्नर जनरल/वायसराय व उनके कार्यकाल की प्रमुख घटना को सुमेलित कीजिए:

A. लॉर्ड विलियम बैंटिक —

1. सती प्रथा उन्मूलन (1829), अंग्रेजी शिक्षा नीति (मैकाले मिनट, 1835)
B. लॉर्ड डलहौजी — 2. व्यपगत सिद्धांत, रेलवे व टेलीग्राफ की शुरुआत
C. लॉर्ड कैनिंग — 3. 1857 विद्रोह, कंपनी शासन का अंत व ताज के प्रत्यक्ष शासन का प्रारंभ
D. लॉर्ड रिपन — 4. स्थानीय स्वशासन अधिनियम (1882), इल्बर्ट बिल

कूट:

- (a) A-1, B-3, C-2, D-4 (b) A-2, B-1, C-4, D-3
(c) A-1, B-2, C-3, D-4 (d) A-4, B-3, C-2, D-1

76. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. लॉर्ड कर्जन (1899-1905) के कार्यकाल में बंगाल का विभाजन (1905) हुआ, जिसका आधिकारिक कारण 'प्रशासनिक सुविधा' बताया गया, किंतु वास्तविक उद्देश्य बंगाली राष्ट्रवाद को कमजोर करना माना जाता है।
2. कर्जन ने प्राचीन स्मारकों के संरक्षण हेतु 1904 में 'प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम' भी पारित करवाया।
3. कर्जन की नीतियों को समग्रतः 'उदारवादी व भारतीय-हितैषी' माना जाता है, इसीलिए उनके कार्यकाल में किसी बड़े राष्ट्रवादी विरोध का सामना नहीं करना पड़ा।
उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 1 और 3

77. निम्नलिखित में से किस वायसराय के कार्यकाल में मॉर्ले-मिंटो सुधार (भारतीय परिषद अधिनियम, 1909) लागू हुए, जिसमें पृथक साम्प्रदायिक निर्वाचिका की शुरुआत हुई?

- (a) लॉर्ड चेम्सफोर्ड (b) लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय
(c) लॉर्ड मिंटो द्वितीय (d) लॉर्ड रीडिंग

78. निम्नलिखित युगों पर विचार कीजिए — वायसराय व संबद्ध सुधार/घटना:

1. लॉर्ड चेम्सफोर्ड — मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (1919), रौलट एक्ट, जलियाँवाला बाग हत्याकांड
2. लॉर्ड इरविन — साइमन कमीशन का भारत आगमन (1928), नमक सत्याग्रह (1930), गांधी-इरविन समझौता (1931)
3. लॉर्ड विलिंग्डन — सविनय अवज्ञा आंदोलन का द्वितीय चरण, सांप्रदायिक पंचाट (1932), पूना पैक्ट (1932)
4. लॉर्ड वेवेल — शिमला सम्मेलन (1945), कैबिनेट मिशन योजना का क्रियान्वयन
इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) दो
(b) तीन
(c) कोई नहीं
(d) चारों

79. लॉर्ड माउंटबेटन के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) उपर्युक्त सभी सही हैं
(b) उन्होंने 3 जून 1947 की योजना (माउंटबेटन योजना) प्रस्तुत की, जिसके अंतर्गत भारत विभाजन की रूपरेखा तय हुई
(c) मूल रूप से स्वतंत्रता जून 1948 हेतु प्रस्तावित थी, जिसे माउंटबेटन ने आगे बढ़ाकर अगस्त 1947 कर दिया
(d) वे भारत के अंतिम वायसराय व स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल दोनों रहे

80. निम्नलिखित में से कौन-सा युग वायसराय व उसके कार्यकाल में हुई घटना के संदर्भ में असंगत है?

- (a) लॉर्ड लिटन — वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट (1878), आर्म्स एक्ट (1878)
(b) लॉर्ड लैंसडाउन — भारतीय परिषद अधिनियम (1892)
(c) लॉर्ड लिटन — फैक्टरी एक्ट (1881) पारित करवाकर श्रमिक-हित में महत्वपूर्ण कार्य किया
(d) लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय — दिल्ली दरबार (1911), राजधानी का कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरण

81. निम्नलिखित में से कौन गवर्नर जनरल/वायसराय के पद पर अपेक्षाकृत सर्वाधिक विस्तारित समय तक रहा?

- (a) लॉर्ड कर्जन (b) लॉर्ड डलहौजी
(c) लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय (d) वारेन हेस्टिंग्स

82. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. लॉर्ड वेलेजली (1798-1805) ने 'सहायक संधि व्यवस्था' (Subsidiary Alliance System) को व्यवस्थित रूप से लागू किया।
2. हैदराबाद के निजाम इस व्यवस्था को स्वीकार करने वाले प्रथम भारतीय शासक थे (1798)।
3. यह व्यवस्था केवल सैन्य-सुरक्षा प्रदान करती थी, इसका भारतीय राज्यों की आर्थिक स्वायत्तता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था, क्योंकि सैन्य-व्यय का वहन पूर्णतः अंग्रेज सरकार स्वयं करती थी।

उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) केवल 2 और 3
(b) केवल 1 और 2
(c) 1, 2 और 3
(d) केवल 1 और 3

83. निम्नलिखित में से किस वायसराय के कार्यकाल में 'भारत छोड़ो आंदोलन' (1942) प्रारंभ हुआ?

- (a) लॉर्ड लिनलिथगो (b) लॉर्ड वेवेल
(c) लॉर्ड माउंटबेटन (d) लॉर्ड विलिंग्डन

84. 'बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट' के प्रवर्तक व इसकी शैली के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) अवनींद्रनाथ टैगोर — भारतीय पारंपरिक शैली व मुगल-राजपूत लघुचित्रण से प्रेरित, पाश्चात्य यथार्थवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया
(b) राजा रवि वर्मा — पाश्चात्य तैल-चित्रण तकनीक में पौराणिक विषयों का चित्रण
(c) नंदलाल बोस — अवनींद्रनाथ के शिष्य, शांतिनिकेतन से संबद्ध
(d) उपर्युक्त सभी सही हैं

85. निम्नलिखित युगों पर विचार कीजिए —

कला/स्थापत्य व संबंधित व्यक्ति:

1. शांतिनिकेतन (विश्व-भारती) — रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित, कला व संस्कृति का प्रमुख केंद्र
2. जयपुर घराना (चित्रकला/संगीत) — राजस्थानी परंपरा से संबद्ध
3. इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट (1907) — अवनींद्रनाथ टैगोर व उनके सहयोगियों द्वारा स्थापित इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?
(a) तीनों (b) केवल दो
(c) केवल एक (d) कोई नहीं

86. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ई.बी. हैवेल, जो कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट के प्रिंसिपल थे, ने भारतीय पारंपरिक कला-शैलियों के पुनरुत्थान में अवनींद्रनाथ टैगोर का सक्रिय समर्थन किया।
2. यह आंदोलन (बंगाल स्कूल) स्वदेशी आंदोलन (1905) के सांस्कृतिक-राष्ट्रवादी उभार से भी जुड़ा माना जाता है।
3. राजा रवि वर्मा को भी बंगाल स्कूल का प्रमुख प्रवर्तक माना जाता है, क्योंकि उनकी शैली भी पूर्णतः भारतीय पारंपरिक लघुचित्रण पर आधारित थी, पाश्चात्य तकनीक से मुक्त थी।
उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) केवल 2 और 3 (b) केवल 1 और 2
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 1 और 3

87. निम्नलिखित में से कौन-सा स्थापत्य/भवन व उसकी शैली का युग सुमेलित नहीं है?

- (a) विक्टोरिया मेमोरियल (कोलकाता) — इंडो-सारसेनिक शैली, विलियम एमर्सन द्वारा अभिकल्पित
(b) गेटवे ऑफ इंडिया (मुंबई) — इंडो-सारसेनिक शैली, जॉर्ज विटेट द्वारा अभिकल्पित
(c) विक्टोरिया मेमोरियल — पूर्णतः मुगल स्थापत्य शैली में निर्मित, इसमें किसी भी यूरोपीय स्थापत्य तत्व का समावेश नहीं है
(d) राष्ट्रपति भवन (नई दिल्ली) — एडविन लुटियंस द्वारा अभिकल्पित, भारतीय व पाश्चात्य तत्वों का समन्वय

88. निम्नलिखित में से कौन आधुनिक भारतीय शास्त्रीय संगीत व नृत्य के पुनरुत्थान से संबद्ध हैं?

- (a) रुक्मिणी देवी अरुंडेल — भरतनाट्यम के पुनरुत्थान व कलाक्षेत्र (चेन्नई) की स्थापना हेतु
- (b) पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर — गांधर्व महाविद्यालय की स्थापना, संगीत शिक्षा का व्यवस्थीकरण
- (c) पंडित विष्णु नारायण भातखंडे — भारतीय शास्त्रीय संगीत के सैद्धांतिक वर्गीकरण (राग-पद्धति) हेतु
- (d) उपर्युक्त सभी सही हैं

89. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए — साहित्यिक/सांस्कृतिक पुनर्जागरण व संबद्ध व्यक्ति:

- 1. बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय — 'आनंदमठ' उपन्यास, 'वंदे मातरम्' गीत की रचना
 - 2. भारतेन्दु हरिश्चंद्र — आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक माने जाते हैं
 - 3. सुब्रमण्यम भारती — तमिल राष्ट्रवादी कवि, स्वतंत्रता व सामाजिक सुधार दोनों पर लेखन
 - 4. भारतेन्दु हरिश्चंद्र — उन्होंने अंग्रेजी भाषा में लेखन को बढ़ावा दिया तथा हिंदी भाषा के प्रयोग का विरोध किया इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?
- (a) तीन (b) दो
(c) चारों (d) कोई नहीं

90. निम्नलिखित में से कौन-सा संग्रहालय/संस्था व उसके संस्थापक/स्थापना-वर्ष का युग्म सही है?

- (a) एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (1784) — विलियम जोंस
- (b) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (1861) — अलेक्जेंडर कनिंघम
- (c) उपर्युक्त सभी सही हैं
- (d) इंडियन म्यूजियम, कोलकाता (1814) — एशियाटिक सोसाइटी के अंतर्गत स्थापित

91. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. अबनींद्रनाथ टैगोर की प्रसिद्ध कृति 'भारत माता' (Bharat Mata) चित्रकला स्वदेशी आंदोलन के दौरान राष्ट्रवादी प्रतीक के रूप में लोकप्रिय हुई।

2. इस चित्र में भारत को एक देवी-सदृश स्त्री रूप में चित्रित किया गया, जो चार वस्तुएँ धारण किए हुए है — भोजन (अन्न), वस्त्र, ज्ञान (पुस्तक) व आध्यात्मिक मुक्ति (माला)।

3. यह चित्र यथार्थवादी पाश्चात्य तैल-चित्रण तकनीक में बनाया गया था, जल-रंग (Wash technique) तकनीक का इसमें कोई प्रयोग नहीं हुआ।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 2 और 3 (b) केवल 1 और 2
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 1

92. निम्नलिखित में से किसे 'भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का जनक' (Father of Indian Archaeology) कहा जाता है?

- (a) जेम्स प्रिंसेप (b) जॉन मार्शल
(c) विलियम जोंस (d) अलेक्जेंडर कनिंघम

93. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'हिंदू मेला' (1867, कलकत्ता) के संदर्भ में सही है?

- (a) इसका आयोजन नवगोपाल मित्र द्वारा किया गया, जिसका उद्देश्य स्वदेशी भावना व राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा देना था
- (b) इसमें स्वदेशी वस्तुओं, भारतीय खेलों व सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया जाता था
- (c) उपर्युक्त सभी सही हैं
- (d) यह प्रारंभिक सांस्कृतिक-राष्ट्रवाद की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति मानी जाती है, जो बाद के राजनीतिक राष्ट्रवाद से पूर्ववर्ती थी

94. संन्यासी विद्रोह (1770-1820 के दशक) के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) यह विद्रोह मुख्यतः बंगाल व बिहार क्षेत्र में हुआ, जिसमें संन्यासी व फकीर सम्मिलित थे
- (b) बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास 'आनंदमठ' में इसी विद्रोह की पृष्ठभूमि का चित्रण मिलता है
- (c) इसका एक कारण 1770 के बंगाल के भीषण अकाल के बाद उत्पन्न आर्थिक संकट भी माना जाता है
- (d) उपर्युक्त सभी सही हैं

95. नील विद्रोह (Indigo Revolt, 1859-60, बंगाल) के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) उपर्युक्त सभी सही हैं
- (b) इस विद्रोह के समर्थन में हरीश चंद्र मुखर्जी ने अपने पत्र 'हिंदू पैट्रियट' में सक्रिय भूमिका निभाई
- (c) दीनबंधु मित्र का नाटक 'नील दर्पण' इस विद्रोह पर आधारित है
- (d) किसानों ने नील बागान मालिकों की शोषणकारी नीतियों (जबरन नील की खेती व अनुचित मूल्य) के विरुद्ध विद्रोह किया

96. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. पागल पंथी विद्रोह मुख्यतः मैमनसिंह क्षेत्र (वर्तमान बांग्लादेश) में हुआ, जिसका नेतृत्व टीपू शाह ने किया।
 - 2. यह विद्रोह मुख्यतः जमींदारों द्वारा किसानों पर अत्यधिक कर-भार के विरुद्ध था।
 - 3. यह विद्रोह पूर्णतः धार्मिक प्रकृति का था, इसका कृषि-संबंधी आर्थिक शोषण से कोई संबंध नहीं था।
- उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?
- (a) 1, 2 और 3
 - (b) केवल 2 और 3
 - (c) केवल 1 और 2
 - (d) केवल 1

97. निम्नलिखित युगों पर विचार कीजिए — किसान/जनजातीय विद्रोह व नेतृत्व:

- 1. संधाल विद्रोह (1855-56) — सिद्धू व कान्हू
 - 2. मुंडा विद्रोह (उलगुलान, 1899-1900) — बिरसा मुंडा
 - 3. कोल विद्रोह (1831-32) — बुद्धू भगत
 - 4. रम्पा विद्रोह (1922-24, आंध्र) — अल्लूरी सीताराम राजू
- इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?
- (a) दो
 - (b) चारों
 - (c) तीन
 - (d) कोई नहीं

98. दक्कन दंगे (Deccan Riots, 1875, महाराष्ट्र) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. यह विद्रोह मुख्यतः किसानों द्वारा साहूकारों (Moneylenders) के विरुद्ध हुआ, जो अत्यधिक ब्याज दर व भूमि हड़पने की प्रवृत्ति के लिए उत्तरदायी थे।
 - 2. इस घटना की जाँच हेतु 'दक्कन रैयत आयोग' गठित हुआ, जिसकी सिफारिशों पर 1879 में 'दक्कन कृषक राहत अधिनियम' (Deccan Agriculturists' Relief Act) पारित हुआ।
 - 3. यह विद्रोह प्रत्यक्षतः ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध था, साहूकारों से इसका कोई संबंध नहीं था।
- उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?
- (a) केवल 1
 - (b) केवल 2 और 3
 - (c) 1, 2 और 3
 - (d) केवल 1 और 2

99. वहाबी आंदोलन के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) इसके प्रवर्तक सैयद अहमद बरेलवी थे, जिन्होंने इसे शुद्धतावादी इस्लामी सुधार आंदोलन के रूप में प्रारंभ किया
- (b) प्रारंभ में इसका उद्देश्य सिख शासन के विरुद्ध जिहाद था, बाद में इसका लक्ष्य अंग्रेज शासन बना
- (c) उपर्युक्त सभी सही हैं
- (d) बालाकोट के युद्ध (1831) में सैयद अहमद बरेलवी की मृत्यु सिखों के विरुद्ध लड़ते हुए हुई

100. निम्नलिखित में से कौन-सा युगम विद्रोह व उसके प्रमुख कारण के संदर्भ में सुमेलित नहीं है?

- (a) मोपला विद्रोह — यह विद्रोह पूर्णतः सांप्रदायिक था, इसका किसी भी प्रकार के भूमि-संबंधी आर्थिक कारण से कोई संबंध नहीं था
- (b) कूका आंदोलन (पंजाब) — नामधारी सिख संप्रदाय द्वारा गौ-हत्या विरोध व ब्रिटिश शासन-विरोधी गतिविधियाँ
- (c) पाबना विद्रोह (1873, बंगाल) — जमींदारों के विरुद्ध किसानों का संगठित प्रतिरोध, कृषक-सभाओं का गठन
- (d) मोपला विद्रोह (1921, मालाबार) — कृषि-संबंधी शोषण (जन्मी-कृषक विवाद) व खिलाफत आंदोलन का सांप्रदायिक रूप ले लेना

101. निम्नलिखित में से कौन-सा जनजातीय विद्रोह 'जल, जंगल, जमीन' के अधिकारों व वन-नीति के विरुद्ध सर्वाधिक प्रत्यक्ष रूप से केंद्रित था?

- (a) कूका आंदोलन
- (b) बिरसा मुंडा का उलगुलान आंदोलन
- (c) पाबना विद्रोह
- (d) नील विद्रोह

102. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. रामोसी विद्रोह का नेतृत्व वासुदेव बलवंत फड़के ने महाराष्ट्र में किया, जिनका उद्देश्य सशस्त्र विद्रोह द्वारा ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकना था।
 2. फड़के को प्रायः 'भारतीय सशस्त्र क्रांति के जनक' के रूप में वर्णित किया जाता है।
 3. फड़के का यह आंदोलन पूर्णतः सफल रहा तथा उन्होंने महाराष्ट्र में एक स्वतंत्र समानांतर सरकार की स्थापना कर ली, जो कई वर्षों तक अस्तित्व में रही।
- उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) 1, 2 और 3
- (d) केवल 1

103. 'केसरी' व 'मराठा' समाचार-पत्रों के संपादक/संस्थापक कौन थे?

- (a) गोपाल कृष्ण गोखले
- (b) बाल गंगाधर तिलक
- (c) महादेव गोविंद रानाडे
- (d) विष्णु शास्त्री चिपलूणकर

104. महात्मा गांधी द्वारा संपादित/प्रकाशित पत्रों को सुमेलित कीजिए:

A. यंग इंडिया —

1. गुजराती में प्रकाशित
- B. हरिजन — 2. अस्पृश्यता-निवारण व सामाजिक सुधार हेतु
- C. नवजीवन — 3. अंग्रेजी में, 1919-1932

कूट:

- (a) A-1, B-3, C-2
- (b) A-2, B-1, C-3
- (c) A-1, B-2, C-3
- (d) A-3, B-2, C-1

105. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए — पत्र/पत्रिका व संपादक:

1. 'अल-हिलाल' — मौलाना अबुल कलाम आजाद
 2. 'कॉमरेड' व 'हमदर्द' — मुहम्मद अली जौहर
 3. 'न्यू इंडिया' व 'कॉमनवील' — एनी बेसेंट
 4. 'बंगाली' — सुरेंद्रनाथ बनर्जी
- इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) दो
- (b) चारों
- (c) तीन
- (d) कोई नहीं

106. निम्नलिखित पुस्तकों व उनके लेखकों पर विचार कीजिए:

1. 'हिंद स्वराज' — महात्मा गांधी (1909, मूलतः गुजराती में लिखित, दक्षिण अफ्रीका से इंग्लैंड की समुद्री यात्रा के दौरान)
2. 'इंडिया डिवाइडेड' — राजेंद्र प्रसाद
3. 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' — जवाहरलाल नेहरू (अहमदनगर किले में नजरबंदी के दौरान लिखी गई)
4. 'हिंद स्वराज' — मूलतः अंग्रेजी में लिखी गई तथा बाद में इसका गुजराती अनुवाद हुआ उपर्युक्त में से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) तीन
- (b) दो
- (c) चारों
- (d) कोई नहीं

107. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म समाचार-पत्र व उसकी भाषा/क्षेत्र के संदर्भ में सुमेलित नहीं है?

- (a) 'अमृत बाजार पत्रिका' — बंगाली (बाद में अंग्रेजी में परिवर्तित), बंगाल
- (b) 'अमृत बाजार पत्रिका' — यह सदैव पूर्णतः अंग्रेजी भाषा में ही प्रकाशित हुई, कभी किसी भारतीय भाषा में नहीं
- (c) 'ट्रिब्यून' — पंजाब, दयाल सिंह मजीठिया द्वारा स्थापित
- (d) 'सुधारक' — गोपाल गणेश आगरकर, मराठी-अंग्रेजी, महाराष्ट्र

108. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म पुस्तक व उसके लेखक के संदर्भ में असंगत है?

- (a) 'पावर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया' — दादाभाई नौरोजी
(b) 'इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया' — रमेशचंद्र दत्त
(c) 'पॉवर्टी ऑफ इंडिया' — बाल गंगाधर तिलक (कृषि-अर्थशास्त्र पर आधारित मौलिक ग्रंथ, तिलक की प्रमुख आर्थिक रचना मानी जाती है)
(d) 'ग्रोथ ऑफ नेशनलिस्ट मूवमेंट' — कृपलानी जैसे इतिहासकारों द्वारा राष्ट्रवाद के विकास पर लेखन

109. 'बंगाली' पत्रिका के संपादक व 'द हिंदू' (मद्रास) के संस्थापकों के संदर्भ में सुमेलित कीजिए:

A. बंगाली —

1. सुरेंद्रनाथ बनर्जी
B. द हिंदू — 2. जी. सुब्रमण्यम अय्यर व अन्य (1878, मद्रास)
C. इंदु प्रकाश — 3. महादेव गोविंद रानाडे से संबद्ध, बंबई कूटः
(a) A-2, B-1, C-3
(b) A-1, B-2, C-3
(c) A-1, B-3, C-2
(d) A-3, B-2, C-1

110. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. बाल गंगाधर तिलक की पुस्तक 'गीता रहस्य' मांडले जेल (बर्मा) में उनकी नजरबंदी के दौरान लिखी गई।
2. उन्होंने अपनी दूसरी प्रमुख विद्वत्तापूर्ण रचना 'ओरायन' (The Orion) में वेदों की प्राचीनता को खगोलीय संदर्भों के आधार पर सिद्ध करने का प्रयास किया।
3. दोनों रचनाएँ मूलतः अंग्रेजी में लिखी गईं, क्योंकि तिलक का उद्देश्य पाश्चात्य विद्वानों को संबोधित करना था, भारतीय पाठकों को नहीं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 1 और 2

111. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म लेखक व उनकी राष्ट्रवादी/सामाजिक रचना के संदर्भ में सुमेलित नहीं है?

- (a) रवींद्रनाथ टैगोर — 'गीतांजलि' (नोबेल पुरस्कार, 1913), 'घरे-बाइरे'
(b) शरतचंद्र चट्टोपाध्याय — 'पथेर दाबी' (क्रांतिकारी विचारों से युक्त उपन्यास, ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित)
(c) प्रेमचंद — 'सोझ-ए-वतन' कहानी-संग्रह पर कभी कोई सरकारी प्रतिबंध नहीं लगा, यह पूर्ण रूप से गैर-राजनीतिक रचना थी
(d) प्रेमचंद — 'गोदान', 'रंगभूमि' — हिंदी-उर्दू के प्रमुख उपन्यासकार, किसान जीवन का यथार्थवादी चित्रण

112. निम्नलिखित में से किस पत्रिका को 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मुखपत्र' के रूप में देखा जाता था तथा यह किस भाषा-क्षेत्र से संबद्ध थी?

- (a) 'हिंदुस्तान रिव्यू' — अंग्रेजी
(b) 'इंडियन मिरर' — देवेंद्रनाथ टैगोर व केशवचंद्र सेन से संबद्ध, अंग्रेजी
(c) 'ट्रिब्यून' — पंजाब, अंग्रेजी
(d) उपर्युक्त सभी विभिन्न प्रकार से भारतीय राजनीतिक जनमत-निर्माण से संबद्ध थे

113. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए — क्रांतिकारी पत्र-पत्रिकाएँ व संबद्ध व्यक्ति/संगठन:

1. 'युगांतर' — बंगाल के क्रांतिकारियों (बारींद्र घोष व अन्य) द्वारा प्रकाशित बंगाली पत्र
2. 'वंदे मातरम्' (पेरिस से प्रकाशित पत्र) — मैडम भीकाजी कामा व श्यामजी कृष्ण वर्मा से संबद्ध
3. 'तलवार' — पेरिस-आधारित भारतीय क्रांतिकारियों का पत्र
4. 'युगांतर' — यह पत्र पूर्णतः अहिंसात्मक व संवैधानिक तरीकों की वकालत करता था, सशस्त्र क्रांति का कहीं भी समर्थन नहीं करता था
इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) दो (b) तीन
(c) चारों (d) कोई नहीं

114. 'इंडिया विंस फ्रीडम' नामक आत्मकथात्मक पुस्तक के लेखक कौन हैं?

- (a) जे.बी. कृपलानी (b) सी. राजगोपालाचारी
(c) राजेंद्र प्रसाद (d) मौलाना अबुल कलाम आजाद

115. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सुभाष चंद्र बोस की आत्मकथात्मक रचना 'द इंडियन स्ट्रगल' (The Indian Struggle) 1920-1942 के कालखंड की भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष की घटनाओं का विवरण देती है।
 2. इस पुस्तक पर ब्रिटिश सरकार ने भारत में प्रतिबंध लगा दिया था।
 3. इस पुस्तक में सुभाष चंद्र बोस ने गांधीवादी अहिंसात्मक रणनीति की पूर्ण व निर्विवाद प्रशंसा की तथा किसी भी वैकल्पिक रणनीति की आवश्यकता को नकारा।
- उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 2 और 3 (b) केवल 1 और 2
(c) 1, 2 और 3 (d) केवल 1

116. निम्नलिखित में से कौन-सा युग पत्रिका व भाषा के संदर्भ में सुमेलित नहीं है?

- (a) 'संवाद कौमुदी' — यह पत्र पूर्णतः अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होता था, इसमें बांग्ला भाषा का कोई प्रयोग नहीं था
- (b) 'मिरात-उल-अखबार' — फारसी, राजा राममोहन राय द्वारा संपादित
- (c) 'समाचार दर्पण' — बांग्ला, श्रीरामपुर मिशनरियों द्वारा प्रकाशित
- (d) 'संवाद कौमुदी' — बांग्ला, राजा राममोहन राय द्वारा संपादित

117. निम्नलिखित में से कौन-सा युग लेखक/पुस्तक व उसके विषय के संदर्भ में सुमेलित नहीं है?

- (a) जवाहरलाल नेहरू — 'ग्लिम्प्सेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री' — पुत्री इंदिरा को लिखे पत्रों का संकलन, विश्व-इतिहास पर
- (b) एनी बेसेंट — 'हाउ इंडिया रांग फॉर सेल्फ-गवर्नमेंट' — होमरूल आंदोलन संबंधी विचार
- (c) बी.आर. आंबेडकर — 'एनिहिलेशन ऑफ कास्ट' — जाति-प्रथा के उन्मूलन पर केंद्रित
- (d) जवाहरलाल नेहरू — 'ग्लिम्प्सेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री'

उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी के साथ कारावास के दौरान लिखी थी

118. 'हरिजन सेवक संघ' व 'हरिजन' पत्र के प्रकाशन के पीछे गांधीजी का मुख्य उद्देश्य क्या था?

- (a) केवल हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रचार
- (b) केवल आर्थिक स्वावलंबन (चरखा-खादी) का प्रचार
- (c) अस्पृश्यता-निवारण व दलित उत्थान संबंधी विचारों का प्रसार
- (d) केवल विदेश-नीति संबंधी विचारों का प्रचार

119. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए — पुस्तक, लेखक व उसका ऐतिहासिक महत्व:

1. 'नील दर्पण' — दीनबंधु मित्र — नील विद्रोह पर आधारित नाटक, इसके अंग्रेजी अनुवाद (जेम्स लॉन्ग द्वारा) पर मुकदमा भी चला
 2. 'आनंदमठ' — बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय — 'वंदे मातरम्' गीत का स्रोत
 3. 'भारत में अंग्रेजी राज' (Rule of the British in India) — सुनीति कुमार घोष द्वारा 20वीं सदी में रचित मार्क्सवादी विश्लेषण
 4. 'नील दर्पण' — यह नाटक मूलतः अंग्रेजी में लिखा गया तथा बाद में बांग्ला में अनूदित हुआ
- इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) दो
(b) कोई नहीं
(c) चारों
(d) तीन

120. निम्नलिखित में से किसने 'लाहौर से लेकर लंदन तक यात्रा जैसे संस्मरण अथवा 'माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ' (सत्य के प्रयोग) जैसी आत्मकथा लिखी, जो मूलतः गुजराती में रचित थी?

- (a) सरदार पटेल
(b) जवाहरलाल नेहरू
(c) महात्मा गांधी
(d) मौलाना आजाद

121. भारत में रेलवे की शुरुआत किस वायसराय/गवर्नर जनरल के कार्यकाल में हुई तथा प्रथम रेल मार्ग कौन-सा था?

- (a) लॉर्ड कैनिंग — कलकत्ता से दिल्ली
- (b) लॉर्ड डलहौजी — बंबई से थाणे (1853)
- (c) लॉर्ड रिपन — मद्रास से बंगलौर
- (d) लॉर्ड कर्जन — दिल्ली से लाहौर

122. भारतीय सिविल सेवा (ICS) परीक्षा में प्रथम भारतीय सफल होने वाले व्यक्ति कौन थे?

- (a) रोमेश चंद्र दत्त
- (b) सुरेंद्रनाथ बनर्जी
- (c) सत्येंद्रनाथ टैगोर (1863)
- (d) आनंद मोहन बोस

123. बुड्स डिस्पैच (1854) के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) उपर्युक्त सभी सही हैं
- (b) इसमें शिक्षा विभाग की स्थापना, विश्वविद्यालयों की स्थापना (कलकत्ता, बंबई, मद्रास — 1857) व शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों का सुझाव दिया गया
- (c) इसने 'डाउनवर्ड फिल्ट्रेशन थियरी' (Downward Filtration Theory) के स्थान पर व्यापक जन-शिक्षा (Mass Education) पर बल दिया
- (d) इसे 'भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा' कहा जाता है

124. निम्नलिखित शिक्षा-नीतियों/आयोगों को कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:

- 1. मैकाले मिनट
- 2. बुड्स डिस्पैच
- 3. हंटर आयोग
- 4. सैडलर आयोग

कूट:

- (a) 2-1-4-3
- (b) 2-1-3-4
- (c) 1-2-4-3
- (d) 1-2-3-4

125. निम्नलिखित में से कौन-सा युग आधुनिक भारत में शिक्षण संस्था व उसके संस्थापक के संदर्भ में सुमेलित नहीं है?

- (a) फर्ग्युसन कॉलेज — सर सैयद अहमद खाँ द्वारा अलीगढ़ में स्थापित
- (b) शांतिनिकेतन — रवींद्रनाथ टैगोर
- (c) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय — मदन मोहन मालवीय

(d) फर्ग्युसन कॉलेज (पुणे) — डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी (आगरकर, तिलक, चिपलूणकर द्वारा)

126. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. 1919 के मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार ने प्रांतों में 'द्वैध शासन' (Dyarchy) की व्यवस्था लागू की, जिसमें विषयों को 'हस्तांतरित' व 'आरक्षित' श्रेणियों में बाँटा गया।
 - 2. यह व्यवस्था 1935 के भारत सरकार अधिनियम द्वारा प्रांतीय स्तर पर समाप्त कर केंद्र में लागू की गई।
- उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 2
- (b) केवल 1
- (c) दोनों
- (d) कोई नहीं

127. साइमन कमीशन (1927) के बहिष्कार के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) उपर्युक्त सभी सही हैं
- (b) लाहौर में साइमन कमीशन विरोधी प्रदर्शन के दौरान लाला लाजपत राय पुलिस लाठीचार्ज में गंभीर रूप से घायल हुए, जिससे बाद में उनकी मृत्यु हो गई
- (c) इसी घटना के प्रतिशोध में भगत सिंह व राजगुरु ने सांडर्स की हत्या की (जॉन सॉन्डर्स को गलती से स्कॉट समझकर)
- (d) इसका मुख्य कारण यह था कि इस कमीशन में कोई भी भारतीय सदस्य सम्मिलित नहीं था

128. निम्नलिखित में से कौन-सा युग गोलमेज सम्मेलन व उसकी प्रमुख विशेषता के संदर्भ में सुमेलित नहीं है?

- (a) प्रथम गोलमेज सम्मेलन (1930-31) — कांग्रेस ने भाग नहीं लिया (सविनय अवज्ञा आंदोलन के कारण)
- (b) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931) — इसी सम्मेलन में सांप्रदायिक पंचाट (Communal Award) की घोषणा हुई तथा तत्काल पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर हुए
- (c) तृतीय गोलमेज सम्मेलन (1932) — कांग्रेस पुनः अनुपस्थित रही
- (d) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931) — गांधीजी ने कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया (गांधी-इरविन समझौते के पश्चात)

129. पूना पैक्ट (1932) के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) यह गांधीजी व बी.आर. आंबेडकर के मध्य हुआ समझौता था
- (b) इसमें दलित वर्गों (Depressed Classes) हेतु पृथक निर्वाचिका के स्थान पर संयुक्त निर्वाचिका के अंतर्गत आरक्षित सीटों की व्यवस्था स्वीकार की गई
- (c) यह गांधीजी के आमरण अनशन (थरवदा जेल में) के परिणामस्वरूप संभव हुआ
- (d) उपर्युक्त सभी सही हैं

130. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. भारत छोड़ो आंदोलन (अगस्त 1942) क्रिप्स मिशन की असफलता के पश्चात प्रारंभ हुआ।
 - 2. इस आंदोलन के दौरान अधिकांश प्रमुख कांग्रेसी नेता (गांधी, नेहरू, पटेल आदि) तत्काल गिरफ्तार कर लिए गए, जिसके कारण आंदोलन का नेतृत्व स्थानीय व युवा कार्यकर्ताओं (जैसे जयप्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली) के हाथों में चला गया।
 - 3. इसी आंदोलन के दौरान कुछ क्षेत्रों (जैसे बलिया, तामलुक, सतारा) में समानांतर सरकारें (Prati Sarkar) भी स्थापित हुईं। उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?
- (a) 1, 2 और 3 (b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3 (d) केवल 1 और 3

131. क्रिप्स मिशन (1942) के प्रस्तावों की असफलता के संदर्भ में सही कथन चुनिए:

- (a) कांग्रेस ने युद्धोत्तर 'डोमिनियन स्टेट्स' के प्रस्ताव को अपर्याप्त माना तथा तत्काल पूर्ण स्वतंत्रता व राष्ट्रीय सरकार की माँग की
- (b) गांधीजी ने इस प्रस्ताव को "उत्तर-तिथित चेक" (A post-dated cheque on a crashing bank) कहकर उपेक्षापूर्ण टिप्पणी की
- (c) मुस्लिम लीग ने प्रांतों के 'पृथक होने के अधिकार' (Right to secede) संबंधी प्रावधान को अपर्याप्त माना, क्योंकि इसमें पाकिस्तान की स्पष्ट स्वीकृति नहीं थी
- (d) उपर्युक्त सभी सही हैं

132. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए — मिशन/योजना व उसका मुख्य प्रस्ताव:

- 1. कैबिनेट मिशन योजना (1946) — त्रि-स्तरीय संघीय ढाँचा (केंद्र, प्रांत-समूह, प्रांत), पृथक पाकिस्तान की माँग को सीधे अस्वीकार
 - 2. माउंटबेटन योजना/3 जून योजना (1947) — भारत विभाजन व दो स्वतंत्र डोमिनियनों (भारत व पाकिस्तान) का सृजन
 - 3. वेवेल योजना/शिमला सम्मेलन (1945) — मुस्लिम लीग व कांग्रेस के मध्य समान प्रतिनिधित्व के मुद्दे पर असहमति के कारण असफल
 - 4. कैबिनेट मिशन योजना — इसमें भारतीय संविधान सभा के गठन का कोई प्रावधान नहीं था
- इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) तीन (b) दो
(c) चारों (d) कोई नहीं

133. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'आजाद हिंद फौज' (INA) व सुभाष चंद्र बोस के संदर्भ में सही नहीं है?

- (a) आजाद हिंद फौज का पुनर्गठन रासबिहारी बोस द्वारा किए गए प्रारंभिक प्रयासों के आधार पर सुभाष चंद्र बोस ने 1943 में सिंगापुर में किया
- (b) INA के मुकदमे (लाल किला ट्रायल, 1945-46) के प्रति भारतीय जनमानस उदासीन रहा, इसका राष्ट्रवादी भावनाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा
- (c) 'आजाद हिंद सरकार' (अस्थायी सरकार) की घोषणा सुभाष बोस ने 1943 में सिंगापुर में की
- (d) इसमें 'रानी झाँसी रेजिमेंट' नामक महिला ब्रिगेड भी शामिल थी, जिसका नेतृत्व कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने किया

134. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1. रॉयल इंडियन नेवी विद्रोह (Naval Mutiny, फरवरी 1946) बंबई में प्रारंभ हुआ तथा शीघ्र ही कराची व कलकत्ता जैसे अन्य नौसैनिक अड्डों तक फैल गया।
 - 2. इस विद्रोह ने ब्रिटिश सरकार को यह संदेश दिया कि भारतीय सशस्त्र बलों की निष्ठा अब पूर्णतः विश्वसनीय नहीं रही, जो 1947 में सत्ता-हस्तांतरण के शीघ्र निर्णय के पीछे के कारकों में से एक मानी जाती है।
- उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) दोनों (d) कोई नहीं

135. भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के संदर्भ में निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:

1. रेलवे एवं टेलीग्राफ का विस्तार
 2. आधुनिक शिक्षा एवं पाश्चात्य विचारों का प्रसार
 3. आधुनिक प्रेस एवं समाचार-पत्रों का विकास
 4. ब्रिटिश शासन द्वारा प्रशासनिक एवं राजनीतिक एकीकरण
- उपर्युक्त कारकों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सर्वाधिक उपयुक्त है?

(a) केवल 1 और 4 ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों के बीच संपर्क एवं एकीकरण को प्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा दिया, जबकि 2 और 3 ने मुख्यतः राष्ट्रीय चेतना के वैचारिक प्रसार में योगदान दिया।

(b) केवल 1 और 2 भौतिक/अवसंरचनात्मक कारक थे, जबकि 3 और 4 का राष्ट्रवाद के उदय में कोई योगदान नहीं था।

(c) केवल 2 और 3 भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के लिए उत्तरदायी थे, क्योंकि ब्रिटिश प्रशासनिक एकीकरण का प्रभाव केवल शासन तक सीमित था।

(d) उपर्युक्त सभी कारक केवल वैचारिक-सांस्कृतिक प्रकृति के थे।

136. निम्नलिखित युगों पर विचार कीजिए — कमीशन/समिति व उसका मुख्य कार्य:

1. हंटर कमीशन (1882) — प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा पर विशेष बल, निजी क्षेत्र की भागीदारी हेतु सुझाव
 2. वेल्ची कमीशन (1895) — भारत में सैन्य व असैन्य व्यय के मध्य वित्तीय संबंधों की जाँच, जिसमें दादाभाई नौरोजी भी सदस्य थे
 3. फॉरेस्ट/इल्बर्ट बिल समिति — यह समिति वन-संरक्षण नीति से संबंधित थी, इल्बर्ट बिल विवाद से इसका कोई संबंध नहीं था
 4. सार्वजनिक सेवा आयोग (एचिंसन कमेटी, 1886) — सिविल सेवाओं में भारतीयों की भागीदारी बढ़ाने संबंधी सुझाव
- इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) दो
- (b) कोई नहीं
- (c) चारों
- (d) तीन

137. निम्नलिखित में से कौन-सा युग व्यक्ति व उनकी उपाधि/उपनाम के संदर्भ में सुमेलित है?

- (a) बाल गंगाधर तिलक — 'लोकमान्य'
- (b) मदन मोहन मालवीय — 'महामना'
- (c) सुभाष चंद्र बोस — 'नेताजी'
- (d) उपर्युक्त सभी सही हैं

138. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 1946 में गठित अंतरिम सरकार (Interim Government) में जवाहरलाल नेहरू उपाध्यक्ष (Vice President of Executive Council) के पद पर थे, जो वस्तुतः प्रधानमंत्री-तुल्य भूमिका थी।
 2. प्रारंभ में मुस्लिम लीग ने इस अंतरिम सरकार में शामिल होने से इनकार किया, बाद में अक्टूबर 1946 में शामिल हुई।
 3. अंतरिम सरकार में शामिल होने के पश्चात मुस्लिम लीग ने रचनात्मक ढंग से कार्य किया तथा किसी भी विषय पर कांग्रेस के साथ कोई गतिरोध उत्पन्न नहीं हुआ।
- उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) 1, 2 और 3
- (d) केवल 1

139. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'स्वराज पार्टी' (1923) के संदर्भ में सही नहीं है?

- (a) इसकी स्थापना चित्तरंजन दास व मोतीलाल नेहरू ने की
- (b) इसका उद्देश्य विधान परिषदों में प्रवेश कर 'रचनात्मक विरोध' (Obstructionism/Uniform Council Entry) की नीति अपनाना था
- (c) इसकी स्थापना गांधीजी की पूर्ण सहमति व सक्रिय समर्थन से हुई, जो स्वयं भी परिषद-प्रवेश के पक्ष में थे
- (d) यह पार्टी गया कांग्रेस अधिवेशन (1922) में परिषद-प्रवेश के मुद्दे पर हुए मतभेद के परिणामस्वरूप बनी

140. निम्नलिखित युगों पर विचार कीजिए —

जनजातीय/किसान आंदोलन व उनका मुख्य केंद्र:

1. एका आंदोलन (1921-22) — उत्तर प्रदेश (अवध क्षेत्र)
2. बारदोली सत्याग्रह (1928) — गुजरात, वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में
3. तेभागा आंदोलन (1946-47) — बंगाल, बटाईदारों द्वारा उपज के 2/3 भाग की माँग
4. तेभागा आंदोलन — यह आंदोलन मुख्यतः जमींदारों द्वारा प्रायोजित था तथा किसानों के हितों के विरुद्ध था इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) दो (b) कोई नहीं
(c) चारों (d) तीन

141. निम्नलिखित में से कौन-सा युग सुमेलित नहीं है —

गोलमेज सम्मेलन प्रतिनिधि व प्रतिनिधित्व-क्षेत्र:

- (a) बी.आर. आंबेडकर — दलित/दमित वर्गों का प्रतिनिधित्व
(b) मदन मोहन मालवीय — इन्होंने किसी गोलमेज सम्मेलन में कभी भाग नहीं लिया, वे सदैव इसके विरोधी रहे
(c) तेज बहादुर सप्रू — उदारवादी/लिबरल पार्टी का प्रतिनिधित्व
(d) एम.ए. जिन्ना — मुस्लिम लीग का प्रतिनिधित्व

142. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 1935 के भारत सरकार अधिनियम में अखिल भारतीय संघ (All India Federation) की योजना प्रस्तावित थी, जिसमें ब्रिटिश भारत के प्रांत व देशी रियासतें दोनों सम्मिलित होने वाली थीं।
2. यह संघीय योजना व्यावहारिक रूप से कभी लागू नहीं हो सकी, क्योंकि पर्याप्त संख्या में देशी रियासतें इसमें शामिल होने हेतु सहमत नहीं हुईं।
3. इसी अधिनियम के अंतर्गत 1937 में प्रांतीय चुनाव हुए, जिनमें कांग्रेस ने अधिकांश प्रांतों में स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया।

उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

- (a) 1, 2 और 3 (b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3 (d) केवल 1 और 3

143. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'हिंदू महासभा' व 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS)' के प्रारंभिक इतिहास के संदर्भ में सही है?

- (a) हिंदू महासभा की स्थापना 1915 में हुई तथा बाद में वी.डी. सावरकर इसके प्रमुख नेता बने
(b) RSS की स्थापना 1925 में डॉ. के.बी. हेडगेवार ने नागपुर में की
(c) दोनों संगठन हिंदू राष्ट्रवाद की विचारधारा से संबद्ध माने जाते हैं, यद्यपि इनका संगठनात्मक स्वरूप व कार्यशैली भिन्न रही
(d) उपर्युक्त सभी सही हैं

144. निम्नलिखित युगों पर विचार कीजिए — महिला संगठन/आंदोलन व संबद्ध व्यक्ति:

1. अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (AIWC, 1927) — मार्गरेट कजिन्स के प्रयासों से स्थापना में सहयोग
2. भारत स्त्री महामंडल (1910) — सरला देवी चौधुरानी
3. महिला राष्ट्रीय सेवा दल — विजयलक्ष्मी पंडित से संबद्ध, स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी हेतु
4. अखिल भारतीय महिला सम्मेलन — इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य केवल महिला-शिक्षा तक सीमित था, अन्य किसी सामाजिक-राजनीतिक मुद्दे से इसका कोई सरोकार नहीं था

इनमें से कितने सही सुमेलित हैं?

- (a) दो (b) चारों
(c) तीन (d) कोई नहीं

145. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में मजदूर व किसान संगठनों' के संदर्भ में सही नहीं है?

- (a) अखिल भारतीय किसान सभा (1936) की स्थापना स्वामी सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में हुई
(b) अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC, 1920) की स्थापना लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में हुई
(c) किसान सभा आंदोलन का एक महत्वपूर्ण केंद्र बिहार (विशेषतः दरभंगा क्षेत्र के जमींदारी-विरोधी आंदोलन) रहा
(d) दोनों संगठनों का गठन कांग्रेस से पूर्णतः स्वतंत्र रूप से हुआ तथा इनका राष्ट्रीय आंदोलन से कोई वैचारिक/व्यावहारिक जुड़ाव कभी नहीं रहा

146. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 1928 में साइमन कमीशन के जवाब में भारतीयों ने स्वयं एक संविधान का प्रारूप तैयार करने हेतु सर्वदलीय सम्मेलन बुलाया, जिसकी रिपोर्ट 'नेहरू रिपोर्ट' (मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में) कहलाई।

2. नेहरू रिपोर्ट ने डोमिनियन स्टेटस (औपनिवेशिक स्वराज) की सिफारिश की, पूर्ण स्वतंत्रता की नहीं।

3. जिन्ना ने नेहरू रिपोर्ट में मुस्लिम हितों की अपर्याप्त सुरक्षा का आरोप लगाते हुए अपनी '14 सूत्री माँगें' (Fourteen Points, 1929) प्रस्तुत कीं।

उपर्युक्त में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) 1, 2 और 3

(c) केवल 2 और 3

(d) केवल 1 और 3

147. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म व्यक्ति व उनकी प्रमुख वैचारिक/राजनीतिक पहचान के संदर्भ में सुमेलित नहीं है?

(a) एम.एन. रॉय — भारत में साम्यवादी आंदोलन के संस्थापकों में से एक, मानवतावाद (Radical Humanism) की ओर बाद में झुकाव

(b) जय प्रकाश नारायण — कांग्रेस समाजवादी पार्टी (CSP) के संस्थापक सदस्यों में से एक

(c) एस.ए. डांगे — भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन के प्रारंभिक नेताओं में से एक

(d) एम.एन. रॉय — उन्होंने सदैव भारत में ही रहकर कार्य किया, विदेश (विशेषतः मैक्सिको व सोवियत रूस) से भारतीय साम्यवादी आंदोलन का उनका कोई संबंध नहीं रहा

148. भारत में मुद्रित पहला समाचार-पत्र कौन-सा था तथा इसके प्रकाशक कौन थे?

(a) 'बंगाल गजट'/'हिंदी गजट' (1780) — जेम्स ऑगस्टस हिकी

(b) 'समाचार दर्पण' — श्रीरामपुर मिशनरी

(c) 'द हिंदू' — जी. सुब्रमण्यम अय्यर

(d) 'द बॉम्बे टाइम्स' — अंग्रेज व्यापारी

149. भारत में प्रेस-संबंधी कानूनों को उनके कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट (1878) — लॉर्ड लिटन

2. प्रेस एंड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक्स एक्ट (1867)

3. न्यूजपेपर (इनसाइटमेंट टू ऑफेंसेस) एक्ट (1908) — लॉर्ड मिंटो

4. इंडियन प्रेस एक्ट (1910)

कूट:

(a) 1-2-4-3

(b) 1-2-3-4

(c) 2-1-4-3

(d) 2-1-3-4

150. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट (1878) को 'गैगिंग एक्ट' (Gagging Act) भी कहा जाता है, क्योंकि इसने केवल भारतीय-भाषा पत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगाए, अंग्रेजी पत्रों पर नहीं।

2. लॉर्ड रिपन ने 1882 में इस अधिनियम को निरस्त कर दिया।

3. यह अधिनियम सर्वप्रथम व एकमात्र बार 1878 में लागू हुआ तथा इसके पश्चात भारत में कभी भी किसी अन्य प्रेस-नियंत्रण कानून की आवश्यकता महसूस नहीं हुई, क्योंकि राष्ट्रवादी पत्रकारिता पूर्णतः समाप्त हो गई थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) 1, 2 और 3

(d) केवल 1

उत्तर (Answers)

1. Answer: B

Solution: प्लासी का युद्ध (23 जून 1757) वस्तुतः बहुत कम वास्तविक संघर्ष वाला युद्ध था। रॉबर्ट क्लाइव ने युद्ध से पूर्व ही सिराजुद्दौला के सेनापति मीर जाफर, कोषाध्यक्ष राय दुर्लभ, धनी व्यापारी जगत सेठ तथा उमीचंद जैसे प्रमुख लोगों को गुप्त रूप से अपने पक्ष में मिला लिया था। युद्ध के दिन मीर जाफर की विशाल सेना निष्क्रिय खड़ी रही, जिससे सिराजुद्दौला की पराजय लगभग निश्चित हो गई। युद्ध के पश्चात मीर जाफर को (न कि मीर कासिम को) बंगाल का कठपुतली नवाब बनाया गया — यह अंग्रेजों द्वारा बंगाल की राजनीति में निर्णायक हस्तक्षेप की शुरुआत थी।

2. Answer: A

Solution: बक्सर का युद्ध (22 अक्टूबर 1764) तीन शक्तियों — बंगाल के अपदस्थ नवाब मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला व मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय — के संयुक्त गठबंधन तथा अंग्रेजों (मेजर हेक्टर मुनरो के नेतृत्व में) के मध्य लड़ा गया, जिसमें अंग्रेजों की निर्णायक विजय हुई। यह विजय प्लासी से भी अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि इसने अंग्रेजों की सैन्य श्रेष्ठता को स्पष्ट रूप से स्थापित किया। इसी विजय के परिणामस्वरूप 1765 की इलाहाबाद संधि द्वारा कंपनी को बंगाल-बिहार-उड़ीसा की दीवानी (राजस्व वसूली का अधिकार) प्राप्त हुई, जो भारत में कंपनी के आर्थिक शासन की आधारशिला बनी।

3. Answer: C

Solution: बंगाल के नवाबों का वास्तविक कालक्रम है: मुर्शिद कुली खाँ (बंगाल का प्रथम स्वतंत्र मुगल सूबेदार/नवाब, लगभग 1717-1727) → उसके उत्तराधिकारी → अलीवर्दी खाँ (1740-1756) → सिराजुद्दौला (1756-57)। विकल्प (c) में इस क्रम को उल्टा करके 'अलीवर्दी खाँ → सिराजुद्दौला → मुर्शिद कुली खाँ' लिखा गया है, जो ऐतिहासिक रूप से असंभव है क्योंकि मुर्शिद कुली खाँ सबसे पहले हुए थे, सबसे अंत में नहीं। शेष तीनों विकल्प (a, b, d) सही कालानुक्रम दर्शाते हैं।

4. Answer: A

Solution: मीर कासिम ने बंगाल की राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर (बिहार) स्थानांतरित की ताकि अंग्रेजों के प्रत्यक्ष प्रभाव से दूर रहकर स्वतंत्र प्रशासन व सैन्य-शक्ति सुदृढ़ कर सके — यह कथन सही है। उसने आंतरिक व्यापार पर लगाने वाले शुल्क को पूर्णतः समाप्त कर भारतीय व अंग्रेज व्यापारियों में समानता स्थापित करने

का साहसिक प्रयास भी किया — यह भी सही है। किंतु यह नीति अंग्रेज व्यापारियों के लिए लाभप्रद नहीं, बल्कि अत्यंत हानिकारक सिद्ध हुई, क्योंकि अब तक वे 'दस्तक' (शुल्क-मुक्त व्यापार परमिट) का दुरुपयोग कर एकाधिकार का लाभ उठा रहे थे। इस नीति ने संघर्ष को टाला नहीं, बल्कि और भड़काया, जिसका परिणाम अंततः बक्सर का युद्ध रहा — अतः कथन 3 गलत है।

5. Answer: C

Solution: इलाहाबाद की संधि (1765) की तीन प्रमुख शर्तें थीं: (i) मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय को इलाहाबाद व कड़ा के जिले क्षतिपूर्ति स्वरूप दिए गए, (ii) कंपनी को बंगाल-बिहार-उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई, (iii) बादशाह को वार्षिक 26 लाख रुपये की पेंशन तय हुई — ये तीनों कथन सत्य हैं। किंतु अवध के नवाब शुजाउद्दौला को कंपनी में विलय नहीं किया गया; उल्टे, भारी हर्जाना वसूल कर उसे पुनः अवध का नवाब बना दिया गया, जो आगे चलकर अंग्रेजों का एक 'बफर स्टेट' व अधीनस्थ सहयोगी बना रहा — अतः विकल्प (c) असत्य कथन है, जो इस प्रश्न का सही उत्तर है।

6. Answer: B

Solution: पुर्तगाली नाविक वास्को द गामा 1498 में तीन जहाजों के बेड़े के साथ अफ्रीका का चक्कर लगाकर केप ऑफ गुड होप होते हुए भारत के पश्चिमी तट पर स्थित कालीकट (कोझीकोड) बंदरगाह पर पहुँचे — यह समुद्री मार्ग से भारत आने वाली प्रथम यूरोपीय शक्ति थी। यहाँ स्थानीय शासक ज़मोरिन ने उनका स्वागत किया, और इसी के साथ भारत में यूरोपीय व्यापारिक व औपनिवेशिक हस्तक्षेप का युग प्रारंभ हुआ। शेष विकल्पों में उल्लिखित डच, अंग्रेज व फ्रांसीसी सभी पुर्तगालियों के लगभग एक शताब्दी बाद भारत पहुँचे।

7. Answer: A

Solution: भारत में यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के आगमन का सही कालक्रम है: अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी (1600, महारानी एलिजाबेथ प्रथम से चार्टर) → डच ईस्ट इंडिया कंपनी (1602) → डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी (1616) → फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी (1664, कोलबर्ट के प्रयासों से स्थापित)। यह ध्यान देने योग्य है कि यद्यपि पुर्तगाली सबसे पहले (1498) आए थे, यह प्रश्न विशेष रूप से 'कंपनियों' के गठन-क्रम पर केंद्रित है, जिसमें पुर्तगाली सम्मिलित नहीं हैं।

8. Answer: C

Solution: यह चारों युग ऐतिहासिक रूप से सही सुमेलित हैं: पुर्तगालियों के प्रमुख केंद्र पश्चिमी तट पर गोवा, दमन व दीव थे; डचों के केंद्र दक्षिण-पूर्वी तट पर पुलिकट व मसूलीपट्टनम (तथा इंडोनेशिया में उनका मुख्य आधार) थे; डेनिश कंपनी के केंद्र सेरामपुर (बंगाल) व ट्रांकेबार (तमिलनाडु तट) थे; फ्रांसीसी कंपनी के केंद्र पांडिचेरी (मुख्यालय) व चंद्रनगर (बंगाल) थे। इन सभी केंद्रों ने संबंधित यूरोपीय शक्ति की भारत में व्यापारिक व राजनीतिक गतिविधियों के आधार-स्थल के रूप में कार्य किया।

9. Answer: D

Solution: कर्नाटक युद्ध (1746-1763) मुख्यतः अंग्रेज व फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनियों के मध्य दक्षिण भारत में वर्चस्व हेतु हुए तीन युद्धों की श्रृंखला थी। प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48) यूरोप में चल रहे ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार युद्ध का ही भारतीय विस्तार था। द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54) में फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने चंदा साहब (कर्नाटक की नवाबी हेतु) व मुजफ्फर जंग (हैदराबाद की निजामत हेतु) का समर्थन किया, जबकि अंग्रेजों ने मुहम्मद अली का साथ दिया। तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756-63) वंडिवाश के युद्ध (1760) में अंग्रेजों की निर्णायक विजय के साथ समाप्त हुआ, जिसने भारत में फ्रांसीसी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को स्थायी रूप से समाप्त कर दिया। अतः सभी चारों कथन सत्य हैं।

10. Answer: C

Solution: डूप्ले ने यह नवीन व प्रभावी तकनीक विकसित की कि भारतीय देशी राज्यों के आंतरिक उत्तराधिकार-विवादों में हस्तक्षेप कर, यूरोपीय ढंग से प्रशिक्षित सुसज्जित सेना की सहायता से अपने पसंदीदा उम्मीदवार को गद्दी पर बिठाया जाए, बदले में क्षेत्र व धन प्राप्त किया जाए — यह पहला कथन सत्य है। यही तकनीक बाद में रॉबर्ट क्लाइव व अन्य अंग्रेज अधिकारियों ने अपनाई और डूप्ले से भी अधिक व्यवस्थित व सफलतापूर्वक क्रियान्वित की (जैसे बंगाल में) — यह दूसरा कथन भी सत्य है। किंतु डूप्ले को फ्रांसीसी कंपनी के निदेशक-मंडल ने इसलिए वापस बुलाया क्योंकि उसकी महत्वाकांक्षी व खर्चीली नीतियों ने कंपनी को भारी आर्थिक घाटे व अनिश्चितता में डाल दिया था — यह लाभप्रद नहीं, अपितु हानिकारक सिद्ध हुई; अतः तीसरा कथन गलत है।

1

1. Answer: A

Solution: पुर्तगालियों की भारतीय व्यापार-नीति, विशेषतः गवर्नर अल्फोंसो डी अल्बुकर्क के अधीन, विशुद्ध व्यापारिक नहीं थी — इसमें सैन्य व राजनीतिक विस्तार का स्पष्ट लक्ष्य भी सम्मिलित था। उन्होंने 'कार्टाज़' (Cartaz) नामक पास-प्रणाली लागू की, जिसके अंतर्गत बिना पुर्तगाली अनुमति-पत्र के कोई भी जहाज हिंद महासागर में व्यापार नहीं कर सकता था — यह उनकी सैन्य-राजनीतिक महत्वाकांक्षा का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उन्होंने 1510 में गोवा पर विजय प्राप्त कर इसे अपनी एशियाई राजधानी बनाया तथा हिंद महासागर में एकाधिकार स्थापित करने हेतु नौसैनिक शक्ति का सक्रिय प्रयोग किया। अतः यह कहना कि उनकी नीति 'विशुद्ध व्यापारिक' थी, ऐतिहासिक रूप से गलत है — यही विकल्प

(a) इस प्रश्न का उत्तर है (सही न होने वाला कथन पूछा गया है)।

12. Answer: B

Solution: बेदरा का युद्ध (नवंबर 1759) हुगली नदी के तट पर लड़ा गया, जिसमें अंग्रेजों ने डच सेना को निर्णायक रूप से पराजित किया — इसके पश्चात बंगाल में डच शक्ति की राजनीतिक महत्वाकांक्षा प्रभावी रूप से समाप्त हो गई। साथ ही, डच ईस्ट इंडिया कंपनी की मुख्य वाणिज्यिक रुचि सदैव भारत के बजाय इंडोनेशिया के मसाला द्वीपों (Spice Islands, विशेषतः जावा व मोलुक्का) में केंद्रित रही, जहाँ लौंग-जायफल जैसे बहुमूल्य मसालों का व्यापार होता था — भारत में उनकी उपस्थिति तुलनात्मक रूप से गौण व द्वितीयक रही। अतः दोनों तथ्य

(a) व (c) ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं, इसलिए विकल्प (b) सही उत्तर है।

13. Answer: C

Solution: अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी को 1600 ई. में महारानी एलिजाबेथ प्रथम से व्यापार का शाही चार्टर प्राप्त हुआ — यह सत्य है। भारत में इसकी प्रथम फैक्ट्री सूरत में 1613 में स्थापित हुई, किंतु इसकी वास्तविक अनुमति कैप्टन विलियम हॉकिन्स व अन्य के 1608-09 के प्रारंभिक प्रयासों तथा तत्पश्चात के वार्ताकारों के माध्यम से पहले ही मिल चुकी थी। सर टॉमस रो 1615 में जहांगीर के दरबार में पहुँचे और 1615-19 के मध्य अपनी कूटनीतिक वार्ता से व्यापारिक अधिकारों को अधिक स्थायी व सुरक्षित रूप दिया — किंतु फैक्ट्री-स्थापना (1613) उनके आगमन से पहले ही हो चुकी थी। अतः यह कहना कि 1613 की अनुमति टॉमस रो की वार्ता का ही

परिणाम थी (कथन 2 का यह अंश), कालक्रम की दृष्टि से अशुद्ध है — सही कथन केवल 1 व 3 हैं।

14. Answer: D

Solution: महाराजा रणजीत सिंह ने 1799 में लाहौर पर अधिकार किया तथा 1801 में बैसाखी के अवसर पर स्वयं को पंजाब का महाराजा घोषित किया, जिससे सिख मिसलों के एकीकरण से एक शक्तिशाली सिख साम्राज्य का उदय हुआ। 1809 में उन्होंने अंग्रेजों के साथ अमृतसर की संधि की, जिसके अंतर्गत सतलुज नदी को सीमा-रेखा मानते हुए उन्होंने सतलुज के पूर्व की सिख रियासतों (सिस-सतलुज राज्यों) पर अपना दावा त्याग दिया, बदले में अंग्रेजों ने उनके शेष राज्य में हस्तक्षेप न करने का वचन दिया। उनकी सेना, विशेषतः 'फौज-ए-खास' टुकड़ी, यूरोपीय (फ्रांसीसी व इतालवी अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षित) आधुनिक सैन्य पद्धति पर आधारित थी, जो उस समय की सर्वाधिक आधुनिक भारतीय सेनाओं में गिनी जाती थी। अतः तीनों तथ्य सही हैं।

15. Answer: A

Solution: प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-69) हैदर अली व अंग्रेजों के मध्य लड़ा गया तथा मद्रास की संधि (1769) से समाप्त हुआ, जिसमें दोनों पक्षों ने युद्ध-पूर्व की यथास्थिति (Status Quo Ante) बहाल करने पर सहमति दी। द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84) के दौरान 1782 में हैदर अली की मृत्यु हो गई, जिसके पश्चात उसके पुत्र टीपू सुल्तान ने नेतृत्व संभाला और युद्ध मंगलौर की संधि (1784) से समाप्त हुआ, जो पुनः यथास्थिति पर आधारित थी। तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1790-92) में लॉर्ड कार्नवालिस के नेतृत्व में अंग्रेजों व उनके सहयोगियों (निजाम, मराठा) ने टीपू को पराजित किया, जो श्रीरंगपट्टनम की संधि (1792) से समाप्त हुआ — इसमें टीपू को अपने राज्य का लगभग आधा भाग (मालाबार, कुर्ग, डिंडीगुल आदि) गँवाना पड़ा तथा भारी युद्ध-हर्जाना भी देना पड़ा। अतः तीनों कथन सत्य हैं।

16. Answer: B

Solution: टीपू सुल्तान ने अपने प्रशासन में जमींदारों जैसे परंपरागत बिचौलियों की भूमिका समाप्त कर राज्य द्वारा सीधे किसानों से भू-राजस्व वसूलने की व्यवस्था लागू की, जिससे राजकोष को अधिक स्थिर व सीधा राजस्व प्राप्त हो सके। उसने मैसूर में रेशम-कीट पालन (Sericulture) को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित कर एक स्वदेशी रेशम उद्योग की नींव रखी, जो आज भी कर्नाटक की पहचान है। फ्रांसीसी क्रांति (1789) के विचारों से

गहराई से प्रभावित होकर उसने स्वयं को 'नागरिक टीपू' (Citizen Tipu) घोषित किया तथा श्रीरंगपट्टनम में एक 'जैकोबिन क्लब' की स्थापना भी करवाई, जो उसके क्रांतिकारी-गणतांत्रिक विचारों से जुड़ाव दर्शाता है। अतः तीनों तथ्य ऐतिहासिक रूप से सत्यापित हैं।

17. Answer: C

Solution: प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध (1845-46) लाहौर की संधि (मार्च 1846) से समाप्त हुआ, जिसमें सिखों को जालंधर दोआब जैसे क्षेत्र गँवाने पड़े। इसी वर्ष भैरोवाल की संधि (दिसंबर 1846) के अंतर्गत अल्पवयस्क महाराजा दिलीप सिंह के नाम पर एक अंग्रेज रेजीडेंट के अधीन रीजेंसी परिषद गठित की गई, जिससे पंजाब पर अंग्रेजों का अप्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित हुआ। द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध (1848-49) के परिणामस्वरूप 1849 में संपूर्ण पंजाब को सीधे ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया, जिससे स्वतंत्र सिख राज्य का अस्तित्व समाप्त हो गया। अतः तीनों युग सही सुमेलित हैं।

18. Answer: D

Solution: 1857 के विद्रोह के प्रमुख केंद्रों में नेतृत्व इस प्रकार था: दिल्ली में विद्रोहियों ने वृद्ध मुगल बादशाह बहादुर शाह द्वितीय को प्रतीकात्मक रूप से अपना नेता घोषित किया; कानपुर में पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहेब ने नेतृत्व किया; झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई ने अपने राज्य की रक्षा हेतु वीरतापूर्वक संघर्ष किया; तथा लखनऊ में अवध के अपदस्थ नवाब वाजिद अली शाह की बेगम, बेगम हजरत महल, ने अपने पुत्र बिरजिस कदर के नाम पर विद्रोह का नेतृत्व संभाला। यह चारों युग ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः सही सुमेलित हैं।

19. Answer: B

Solution: 1857 विद्रोह का तात्कालिक कारण नई एनफील्ड रायफल में प्रयुक्त कारतूसों से संबंधित था, जिनके बारे में यह अफवाह फैली कि उन पर गाय व सुअर की चर्बी लगी है — कारतूस को मुँह से काटकर खोलना पड़ता था, जिससे यह हिंदू सैनिकों (गाय पवित्र) व मुस्लिम सैनिकों (सुअर वर्जित) दोनों की धार्मिक भावनाओं को एक साथ गहराई से आहत करता था। इसी मुद्दे पर 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी में सैनिक मंगल पांडे ने खुला विद्रोह किया, जिसे विद्रोह की प्रारंभिक चिंगारी माना जाता है। अतः यह विवाद केवल एक धार्मिक समुदाय तक सीमित न होकर व्यापक सैन्य असंतोष का प्रतीक बना, तथा प्रस्तुत सभी कथन सत्य हैं।

20. Answer: C

Solution: लॉर्ड डलहौजी की 'व्यपगत सिद्धांत' (Doctrine of Lapse) नीति के अंतर्गत सतारा (1848), झाँसी (1854) व नागपुर (1854) जैसे राज्यों का विलय इसलिए हुआ क्योंकि वहाँ के शासकों की कोई प्राकृतिक (जैविक) संतान नहीं थी तथा दत्तक-पुत्र को उत्तराधिकार का अधिकार नहीं दिया गया — यह पहला कथन सही है। किंतु अवध का विलय (1856) व्यपगत सिद्धांत के अंतर्गत नहीं हुआ — नवाब वाजिद अली शाह की संतान थी; अवध का विलय 'कुशासन' (Misgovernance) के आरोप में सीधे प्रशासनिक अनुबंध के उल्लंघन के आधार पर हुआ, जो स्वयं में एक विवादास्पद औचित्य था — अतः दूसरा कथन गलत है। तीसरा कथन सही है — अवध विलय ने विशेष रूप से गहरा असंतोष उत्पन्न किया क्योंकि बंगाल सेना के अधिकांश सिपाही अवध क्षेत्र से भर्ती होते थे, जिनकी पारिवारिक भूमि-संबंधी व्यवस्थाएँ इस विलय से प्रभावित हुईं।

2

1. Answer: D

Solution: 1857 के विद्रोह के दौरान दिल्ली विद्रोहियों का एक प्रतीकात्मक व सामरिक केंद्र बन गया था, जहाँ बहादुर शाह द्वितीय को नाममात्र का नेता घोषित किया गया था। दिल्ली की घेराबंदी व अंततः पुनर्विजय (सितंबर 1857) में जॉन निकोलसन (जो घेराबंदी के दौरान घायल होकर वीरगति को प्राप्त हुए) व विलियम हडसन (जिन्होंने बहादुर शाह द्वितीय को हुमायूँ के मकबरे से बंदी बनाया तथा मुगल राजकुमारों की हत्या करवाई) की भूमिका अत्यंत निर्णायक व ऐतिहासिक रूप से सुविख्यात है।

22. Answer: A

Solution: 1857 के विद्रोह की प्रकृति पर इतिहासकारों में गहरा मतभेद रहा है। ब्रिटिश इतिहासकार सर जॉन सीले ने इसे मात्र एक सैनिक असंतोष (Sepoy Mutiny) कहा, जिसका कोई व्यापक राष्ट्रीय आधार नहीं था। इसके विपरीत, वी.डी. सावरकर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में इसे 'भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' कहकर राष्ट्रवादी महत्व दिया। आर.सी. मजूमदार जैसे उदारवादी इतिहासकारों ने मध्यम मार्ग अपनाते हुए कहा कि यह न तो प्रथम था, न राष्ट्रीय, न ही पूर्ण स्वतंत्रता-संग्राम। वहीं एरिक स्टोक्स जैसे आधुनिक इतिहासकारों ने इसे मुख्यतः भू-स्वामी/सामंती वर्ग की एक प्रतिक्रिया (Elite Reaction) माना, जिसमें आम जनसाधारण की भागीदारी सीमित थी। यह बहुआयामी बहस दर्शाती है कि चारों मत सही ढंग से सुमेलित हैं।

23. Answer: D

Solution: 1857 के विद्रोह में विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों का नेतृत्व अलग-अलग व्यक्तियों ने किया: बरेली में खान बहादुर खाँ, फैजाबाद में मौलवी अहमदुल्लाह शाह, तथा बिहार के जगदीशपुर क्षेत्र में वृद्ध जमींदार कुँवर सिंह ने विद्रोह का नेतृत्व किया — ये तीनों युग सही हैं। किंतु तात्या टोपे का संबंध मुख्यतः कानपुर (नाना साहेब के सेनापति के रूप में) व बाद में ग्वालियर व मध्य भारत के गुरिल्ला युद्ध-अभियानों से रहा, इलाहाबाद से नहीं — इलाहाबाद में विद्रोह का दमन कर्नल जेम्स नील ने किया था। अतः विकल्प (d) असंगत युग है।

24. Answer: A

Solution: गांधीजी का भारत लौटने के पश्चात प्रथम बड़ा जन-आंदोलन चंपारण सत्याग्रह (1917, बिहार) था, जो नील की खेती करने को बाध्य किसानों की समस्या से संबंधित था। इसके पश्चात खेड़ा सत्याग्रह (1918, गुजरात) हुआ, जहाँ फसल नष्ट होने के बावजूद पूर्ण लगान वसूलने के विरुद्ध किसानों ने विरोध किया। इसी वर्ष अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918) में गांधीजी ने मिल-मजदूरों की मजदूरी वृद्धि की माँग हेतु आमरण अनशन तक किया, जो अंततः सफल रहा। यह तीनों युग सही सुमेलित हैं तथा गांधीजी की प्रारंभिक भारतीय सत्याग्रह-रणनीति को दर्शाते हैं।

25. Answer: B

Solution: रौलट एक्ट (मार्च 1919), जिसे 'काला कानून' भी कहा गया, ने सरकार को बिना किसी नियमित मुकदमे के किसी भी संदिग्ध व्यक्ति को गिरफ्तार व नजरबंद करने का असाधारण अधिकार दिया — इसके विरोध में गांधीजी ने रौलट सत्याग्रह प्रारंभ किया। इसी विरोध की पृष्ठभूमि में 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी के दिन अमृतसर के जलियाँवाला बाग में जनरल डायर के आदेश पर निहत्थी शांतिपूर्ण भीड़ पर गोलीबारी की गई, जिसमें सैकड़ों निर्दोष लोग मारे गए। इस अमानवीय घटना के विरोध-स्वरूप रवींद्रनाथ टैगोर ने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त अपनी 'नाइटहुड' (Sir) की उपाधि सार्वजनिक रूप से त्याग दी। अतः तीनों कथन ऐतिहासिक रूप से सत्य व सुस्थापित हैं।

26. Answer: A

Solution: चंपारण में नील बागान मालिकों ने किसानों पर 'तिनकठिया पद्धति' थोप रखी थी, जिसके अंतर्गत प्रत्येक किसान को अपनी भूमि के 20 कठ्ठा में से 3 कठ्ठा (अर्थात् 3/20वाँ भाग) पर अनिवार्य रूप से नील की खेती करनी पड़ती थी, भले ही यह

आर्थिक रूप से लाभप्रद न हो — गांधीजी ने इसी शोषणकारी व्यवस्था का विरोध किया। गांधीजी को चंपारण आने का आमंत्रण स्थानीय किसान-नेता राजकुमार शुक्ल ने दिया, जो स्वयं नील की खेती के दुष्प्रभावों से पीड़ित थे और लगातार गांधीजी का पीछा कर उन्हें चंपारण आने हेतु राजी किया। सत्याग्रह की सफलता के फलस्वरूप सरकार को एक जाँच समिति गठित करनी पड़ी, जिसकी सिफारिशों पर 'चंपारण कृषि अधिनियम' (1918) पारित हुआ, जिसने तिनकठिया पद्धति को समाप्त किया। अतः तीनों तथ्य सही हैं।

27. Answer: B

Solution: गांधीजी ने भारत में हिंदू-मुस्लिम एकता को सुदृढ़ करने की व्यापक रणनीति के अंतर्गत खिलाफत आंदोलन को अपने असहयोग आंदोलन (1920) के साथ जोड़ा। खिलाफत आंदोलन तुर्की के खलीफा (जो विश्व भर के मुस्लिमों का धार्मिक नेता माना जाता था) की सत्ता व अधिकारों की रक्षा हेतु था, जो प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की (ऑटोमन साम्राज्य) की पराजय के पश्चात गंभीर खतरे में पड़ गई थी। इस आंदोलन के प्रमुख नेता अली बंधु — मुहम्मद अली जौहर व शौकत अली — थे, जिन्होंने गांधीजी के साथ मिलकर व्यापक जनसमर्थन जुटाया। अतः प्रस्तुत सभी कथन सत्य हैं।

28. Answer: D

Solution: चौरी-चौरा (गोरखपुर, उत्तर प्रदेश) में फरवरी 1922 में असहयोग आंदोलन में भाग ले रही एक उत्तेजित भीड़ ने पुलिस की गोलीबारी के प्रतिशोध में स्थानीय पुलिस थाने में आग लगा दी, जिसमें 22 पुलिसकर्मी जलकर मारे गए। इस हिंसक घटना से आहत होकर गांधीजी ने, जो अहिंसा को आंदोलन का अपरिहार्य सिद्धांत मानते थे, तत्काल संपूर्ण असहयोग आंदोलन को स्थगित करने का साहसिक व विवादास्पद निर्णय लिया। इस निर्णय की तीव्र आलोचना कई युवा व उग्र राष्ट्रवादी नेताओं, विशेषतः सुभाष चंद्र बोस व जवाहरलाल नेहरू ने की, जो इसे एक सफल जन-आंदोलन को असमय समाप्त करने वाला कदम मानते थे। अतः सभी चारों कथन सत्य हैं।

29. Answer: A

Solution: गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के विरुद्ध होने वाले नस्लीय भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष के दौरान ही अपनी अनूठी प्रतिरोध-तकनीक विकसित की, जिसे प्रारंभ में 'निष्क्रिय प्रतिरोध' (Passive Resistance) कहा गया — बाद में उन्होंने इसे भारतीय

भावना के अनुरूप 'सत्याग्रह' नाम दिया (यह शब्द भी वहीं गढ़ा गया)। उन्होंने वहाँ भारतीय समुदाय की आवाज उठाने हेतु 'इंडियन ओपिनियन' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया। साथ ही उन्होंने सामुदायिक जीवन व सत्याग्रहियों के परिवारों के भरण-पोषण हेतु 'फीनिक्स सेटलमेंट' (1904) व 'टॉल्सटॉय फार्म' (1910) नामक दो सहकारी बस्तियाँ भी स्थापित कीं, जो उनके बाद के भारतीय आश्रम-मॉडल (जैसे साबरमती आश्रम) की पूर्वपीठिका बनीं। अतः तीनों तथ्य सही हैं।

30. Answer: B

Solution: उन्नीसवीं सदी के भारतीय सामाजिक-धार्मिक पुनर्जागरण में तीन प्रमुख संगठन उभरे: राजा राममोहन राय ने 1828 में कलकत्ता में ब्रह्म समाज की स्थापना की, जो एकेश्वरवाद व मूर्ति-पूजा विरोध पर आधारित था; स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की, जो वैदिक धर्म के पुनरुत्थान पर बल देता था; तथा आत्माराम पांडुरंग ने 1867 में मुंबई में प्रार्थना समाज की स्थापना की, जो सामाजिक सुधार व एकेश्वरवाद के प्रति समर्पित था। तीनों संस्थापक व उनके संगठन सही सुमेलित हैं।

3

1. Answer: D

Solution: स्वामी विवेकानंद, जो रामकृष्ण परमहंस के सर्वाधिक प्रभावशाली शिष्य थे, ने 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य केवल आध्यात्मिक उपदेश देना नहीं, बल्कि 'व्यावहारिक वेदांत' के सिद्धांत पर आधारित निःस्वार्थ सेवा (शिक्षा, चिकित्सा, आपदा-राहत) के माध्यम से मानवता की सेवा करना था — विवेकानंद का प्रसिद्ध सूत्र था 'जीव की सेवा ही शिव की सेवा है'। यह संगठन आज भी विश्व भर में शैक्षणिक व सेवा-संस्थानों के माध्यम से सक्रिय है, जो इसे अन्य विशुद्ध सुधारवादी संगठनों (जैसे ब्रह्म समाज या प्रार्थना समाज, जो मुख्यतः सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध केंद्रित थे) से भिन्न बनाता है।

32. Answer: B

Solution: आर्य समाज व ब्रह्म समाज दोनों उन्नीसवीं सदी के प्रमुख सुधार आंदोलन थे, किंतु उनके दार्शनिक आधार में स्पष्ट अंतर था। आर्य समाज वेदों को अंतिम व अचूक प्रमाण मानता था और 'वेदों की ओर लौटो' (Back to the Vedas) का नारा देकर हिंदू धर्म के मूल वैदिक स्वरूप की पुनर्स्थापना चाहता था। इसके विपरीत, ब्रह्म समाज पश्चिमी तर्कवाद, एकेश्वरवाद व उपनिषदों के दार्शनिक तत्वों से अधिक प्रभावित था तथा मूर्ति-पूजा व कर्मकांड का विरोध

करता था, किंतु वेदों को अंतिम प्रमाण नहीं मानता था। आर्य समाज ने 'शुद्धि आंदोलन' के माध्यम से उन हिंदुओं को, जिन्होंने इस्लाम या ईसाई धर्म अपना लिया था, पुनः हिंदू धर्म में वापस लाने का सक्रिय अभियान चलाया, जो उसे अन्य सुधार आंदोलनों से अलग पहचान देता है। अतः तीनों कथन सत्य हैं।

33. Answer: C

Solution: उन्नीसवीं सदी के भारत में कई समानांतर सुधार आंदोलन चले: थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना 1875 में अमेरिका में मैडम एच.पी. ब्लावत्स्की व कर्नल एच.एस. ऑलकॉट ने की थी, जिसका मुख्यालय बाद में अड्यार (मद्रास) स्थानांतरित हुआ तथा जो हिंदू व बौद्ध दर्शन के पुनरुत्थान में सक्रिय रहा। सर सैयद अहमद खाँ ने मुस्लिम समुदाय में आधुनिक शिक्षा के प्रसार हेतु अलीगढ़ आंदोलन प्रारंभ किया। शिव नारायण अग्रिहोत्री ने 'देव समाज' की स्थापना की, जो एक तर्कवादी सुधार-संगठन था। ज्योतिबा फुले ने 1873 में महाराष्ट्र में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना कर जाति-प्रथा के विरुद्ध व्यापक आंदोलन चलाया। ये चारों युग ऐतिहासिक रूप से सही सुमेलित हैं।

34. Answer: A

Solution: भारत में सामाजिक सुधार हेतु पारित प्रमुख कानूनों का सही कालक्रम है: सर्वप्रथम 1829 में लॉर्ड विलियम बैंटिक ने राजा राममोहन राय के सहयोग से सती प्रथा निषेध अधिनियम पारित किया; इसके पश्चात 1856 में ईश्वरचंद्र विद्यासागर के प्रयासों से विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित हुआ; तत्पश्चात 1891 में आयु सम्मति अधिनियम (Age of Consent Act) पारित हुआ, जिसने विवाह व सहवास हेतु न्यूनतम आयु निर्धारित की (फूलमणि देवी प्रकरण से प्रेरित); अंततः 1929 में हरबिलास शारदा के प्रयासों से शारदा अधिनियम (बाल विवाह निषेध अधिनियम) पारित हुआ। यह कालानुक्रम 1829→1856→1891→1929 सामाजिक सुधार आंदोलन की क्रमिक प्रगति को दर्शाता है।

35. Answer: B

Solution: ज्योतिबा फुले ने 1873 में महाराष्ट्र (पुणे) में सत्यशोधक समाज की स्थापना की थी, जिसका उद्देश्य जाति-प्रथा व ब्राह्मणवादी सामाजिक वर्चस्व के विरुद्ध निम्न जाति व किसान वर्ग को संगठित करना था — यह विकल्प

(a) सही है। इसके विपरीत विकल्प (b) में इस संगठन को बंगाल में स्थापित बताना तथा इसे 'बंगाली भद्रलोक वर्ग' (उच्च शिक्षित बंगाली मध्यम वर्ग) तक सीमित बताना पूर्णतः गलत है —

सत्यशोधक समाज का सामाजिक आधार वस्तुतः इसके विपरीत, निम्न जाति व श्रमजीवी वर्ग था। नारायण गुरु का SNDP योग केरल में एषव (ईज़वा) जाति के उत्थान हेतु तथा पेरियार का आत्म-सम्मान आंदोलन तमिलनाडु में द्रविड़ जाति-विरोधी चेतना हेतु कार्यरत रहे — ये दोनों सही सुमेलित हैं। अतः विकल्प (b) असंगत युग्म होने के कारण इस प्रश्न का उत्तर है।

36. Answer: A

Solution: स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने विचारों को 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रंथ में विस्तार से प्रस्तुत किया, जो आर्य समाज का मूल वैचारिक आधार-ग्रंथ माना जाता है — यह कथन सत्य है। आर्य समाज ने 1886 में लाहौर में दयानंद एंग्लो-वैदिक (DAV) कॉलेज की स्थापना की, जिसमें पाश्चात्य वैज्ञानिक शिक्षा को वैदिक-संस्कृत शिक्षा के साथ जोड़ा गया — यह भी सत्य है और आगे चलकर DAV शिक्षा-संस्थानों का विशाल नेटवर्क पूरे उत्तर भारत में फैला। किंतु तीसरा कथन आत्म-विरोधाभासी है — यदि आर्य समाज पाश्चात्य शिक्षा का 'हर रूप में विरोध' करता, तो वह स्वयं DAV कॉलेज (जिसमें अंग्रेजी व विज्ञान पढ़ाया जाता था) की स्थापना कैसे करता? यह दर्शाता है कि आर्य समाज सुधारवादी था, कट्टर रूढ़िवादी नहीं — अतः तीसरा कथन गलत है।

37. Answer: D

Solution: हेनरी विवियन डेरोजियो (1809-1831), जो हिंदू कॉलेज कलकत्ता में अध्यापक थे, ने अपने युवा व प्रतिभाशाली छात्रों में तर्कवाद, स्वतंत्र चिंतन व पश्चिमी उदारवादी विचारों के प्रति गहरी रुचि जगाई। इन छात्रों का समूह 'यंग बंगाल आंदोलन' कहलाया, जिसने परंपरागत हिंदू रूढ़ियों, मूर्ति-पूजा व जाति-प्रथा की तीव्र आलोचना की तथा तर्क व बुद्धिवाद पर बल दिया। यद्यपि यह आंदोलन अपने अत्यधिक उग्र व पश्चिमपरस्त रुख के कारण व्यापक जनसमर्थन प्राप्त नहीं कर सका, किंतु इसने बंगाल के बौद्धिक पुनर्जागरण की नींव रखी। शेष विकल्पों में उल्लिखित राजा राममोहन राय, देवेंद्रनाथ टैगोर व केशवचंद्र सेन ब्रह्म समाज से संबद्ध थे, यंग बंगाल से नहीं।

38. Answer: B

Solution: उन्नीसवीं सदी में मुस्लिम समुदाय के भीतर भी कई सुधारवादी-पुनरुत्थानवादी आंदोलन उभरे। वहाबी आंदोलन का नेतृत्व सैयद अहमद बरेलवी ने किया, जिसका प्रभाव-क्षेत्र मुख्यतः उत्तर भारत व उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत तक फैला था। हाजी शरीयतुल्लाह ने पूर्वी बंगाल (वर्तमान बांग्लादेश क्षेत्र) में फरायजी

आंदोलन चलाया, जो इस्लामी शुद्धतावाद के साथ-साथ किसानों के आर्थिक शोषण के विरुद्ध भी था। मिर्जा गुलाम अहमद ने पंजाब के कादियान कस्बे में अहमदिया आंदोलन की स्थापना की, जो एक पृथक व विवादास्पद इस्लामी संप्रदाय के रूप में उभरा। तीनों युग सही सुमेलित हैं।

39. Answer: C

Solution: सर सैयद अहमद खाँ ने 1875 में अलीगढ़ में मुहम्मदन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य मुस्लिम युवाओं में आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा व पाश्चात्य विज्ञान के प्रति रुचि जगाना था — यह संस्था 1920 में विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त कर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय बनी। उन्होंने मुस्लिम समुदाय को परंपरागत मदरसा-शिक्षा से आगे बढ़कर आधुनिक शिक्षा अपनाने हेतु निरंतर प्रोत्साहित किया — ये दोनों कथन सत्य हैं। किंतु तीसरा कथन पूर्णतः विपरीत है — सर सैयद वास्तव में कांग्रेस के मुखर आलोचक थे; उनका मानना था कि कांग्रेस मुख्यतः हिंदू-बहुल संगठन है तथा प्रतिनिधिक शासन-व्यवस्था मुस्लिम अल्पसंख्यक हितों के लिए हानिकारक सिद्ध होगी — उन्होंने मुस्लिमों को कांग्रेस से दूर रहने की स्पष्ट सलाह दी थी। अतः तीसरा कथन गलत है।

40. Answer: B

Solution: ईश्वरचंद्र विद्यासागर विधवा पुनर्विवाह आंदोलन के अग्रणी नेता तथा बंगाली वर्णमाला की प्रसिद्ध पाठ्यपुस्तक 'वर्णपरिचय' के रचयिता थे — यह युग सही है। पंडिता रमाबाई ने महिला शिक्षा व असहाय विधवाओं हेतु 'शारदा सदन' नामक आश्रम की स्थापना की — यह भी सही युग है। बहरामजी मालाबारी एक पारसी समाज-सुधारक थे, जिन्होंने बाल-विवाह व जबरन वैधव्य (Enforced Widowhood) के विरुद्ध सशक्त अभियान चलाया, जिसने आयु सम्मति अधिनियम (1891) के लिए जनमत तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई — यह युग (d) सही है। किंतु विकल्प (b) में उन्हें 'आर्य समाज का संस्थापक सदस्य' व 'वेदों के अध्ययन हेतु समर्पित' बताना पूर्णतः गलत है — आर्य समाज हिंदू सुधार संगठन था, जबकि मालाबारी पारसी सुधारक थे, दोनों में कोई संस्थापक-संबंध नहीं था। अतः विकल्प (b) असंगत है।

4

1. Answer: C

Solution: ज्योतिबा फुले ने 1873 में 'गुलामगिरी' (Slavery) नामक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने भारतीय जाति-व्यवस्था की

तुलना अमेरिका की अश्वेत गुलाम-प्रथा से की तथा ब्राह्मणवादी सामाजिक वर्चस्व व शूद्र-अतिशूद्र वर्गों के शोषण की गहरी आलोचना प्रस्तुत की। यह पुस्तक उन्होंने अमेरिका में दास-प्रथा उन्मूलन आंदोलन को समर्पित की थी, जो इसे एक अंतरराष्ट्रीय सामाजिक-न्याय परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। फुले भारत में जाति-विरोधी वैचारिक आंदोलन के अग्रणी प्रणेताओं में गिने जाते हैं, जिनसे बाद में डॉ. आंबेडकर जैसे नेता भी प्रभावित हुए।

42. Answer: A

Solution: 1829 में लॉर्ड विलियम बैंटिक ने बंगाल प्रेसीडेंसी में सती प्रथा निषेध अधिनियम पारित किया, जो भारत में सामाजिक सुधार की दिशा में ब्रिटिश शासन का पहला बड़ा विधायी हस्तक्षेप था — यह कथन सत्य है। इस अधिनियम को पारित करवाने में राजा राममोहन राय के दीर्घकालिक प्रयासों, लेखन व जनमत-निर्माण की केंद्रीय भूमिका मानी जाती है — यह भी सत्य है। किंतु रूढ़िवादी हिंदू संगठन 'धर्म सभा' (राधाकांत देव के नेतृत्व में) द्वारा इंग्लैंड की प्रिवी काउंसिल में की गई अपील असफल रही थी — अधिनियम को कभी निरस्त नहीं किया गया, यह पूर्णतः प्रभावी बना रहा। अतः तीसरा कथन गलत है, जो इस बात का उदाहरण है कि रूढ़िवादी प्रतिरोध के बावजूद सुधार-कानून टिके रहे।

43. Answer: D

Solution: दक्षिण भारत में जाति-विरोधी सुधार आंदोलनों की एक विशिष्ट व सशक्त परंपरा रही है: पेरियार ई.वी. रामास्वामी का आत्म-सम्मान आंदोलन तमिलनाडु में ब्राह्मणवाद-विरोधी द्रविड़ चेतना का प्रतीक बना; नारायण गुरु का SNDP योग केरल में एषव (ईज़वा) जाति के सामाजिक-आर्थिक उत्थान हेतु कार्यरत रहा; तथा न्याय पार्टी (Justice Party) ने गैर-ब्राह्मण राजनीतिक हितों का प्रतिनिधित्व करते हुए मद्रास प्रेसीडेंसी की राजनीति को नया आयाम दिया। इसके विपरीत, प्रार्थना समाज की स्थापना 1867 में आत्माराम पांडुरंग ने मुंबई (पश्चिम भारत) में की थी, जिसका उद्देश्य एकेश्वरवाद व सामान्य सामाजिक सुधार (जाति-निरपेक्ष स्वरूप में) था — इसका दक्षिण भारत की विशिष्ट जाति-विरोधी द्रविड़ आंदोलन-परंपरा से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है। अतः विकल्प (d) इस प्रश्न का सही उत्तर है।

44. Answer: C

Solution: जमींदारी एसोसिएशन, जिसे लैंडहोल्डर्स सोसाइटी भी कहा जाता है, की स्थापना 1838 में कलकत्ता में द्वारकानाथ टैगोर व अन्य जमींदारों ने मुख्यतः भूमि-संबंधी कानूनों व राजस्व-नीतियों में

जमींदार वर्ग के हितों की रक्षा हेतु की थी। यद्यपि इसका उद्देश्य सीमित व वर्ग-विशेष था, फिर भी इसे भारत की प्रथम संगठित राजनीतिक संस्था होने का श्रेय प्राप्त है, जो व्यवस्थित रूप से याचिकाओं व प्रतिनिधित्व के माध्यम से ब्रिटिश सरकार से संवाद स्थापित करती थी — यह बाद के अधिक व्यापक राष्ट्रीय राजनीतिक संगठनों की पूर्वपीठिका बनी।

45. Answer: A

Solution: पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना 1870 में महादेव गोविंद रानाडे व गणेश वासुदेव जोशी ('सार्वजनिक काका' के नाम से प्रसिद्ध) ने पुणे में की थी। इस संस्था का उद्देश्य सरकार व जनता के मध्य एक सेतु का कार्य करना था — यह सरकार की नीतियों की रचनात्मक आलोचना करती थी, साथ ही सरकार को जनता की वास्तविक भावनाओं व माँगों से भी अवगत कराती थी। यह पश्चिम भारत (महाराष्ट्र) में राजनीतिक जागृति की एक प्रमुख संस्था मानी जाती है, जिसने आगे चलकर राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन में भी अप्रत्यक्ष योगदान दिया।

46. Answer: C

Solution: कांग्रेस-पूर्व काल में क्षेत्रीय राजनीतिक संगठनों की स्थापना का सही कालक्रम है: बंबई एसोसिएशन (1852, जगन्नाथ शंकरसेठ व अन्य द्वारा) → इंडियन एसोसिएशन (1876, सुरेंद्रनाथ बनर्जी व आनंद मोहन बोस द्वारा कलकत्ता में) → मद्रास महाजन सभा (1884, एम. वीराघवाचारी व अन्य द्वारा) → बंबई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन (1885, फिरोजशाह मेहता, के.टी. तेलंग व बदरुद्दीन तैयबजी द्वारा)। यह क्रम दर्शाता है कि किस प्रकार क्रमिक रूप से विभिन्न क्षेत्रों (बंबई, बंगाल, मद्रास) में स्थानीय राजनीतिक चेतना का विकास हुआ, जो अंततः 1885 में अखिल भारतीय स्तर पर कांग्रेस के गठन तक पहुँचा।

47. Answer: B

Solution: इंडियन एसोसिएशन (1876) की स्थापना का एक प्रमुख तात्कालिक कारण था — भारतीय सिविल सेवा (ICS) परीक्षा हेतु अधिकतम आयु-सीमा को 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर देना, जिसने भारतीय उम्मीदवारों (जिन्हें इंग्लैंड जाकर परीक्षा देनी होती थी) के लिए इसे और भी दुष्कर बना दिया। इस संगठन ने 1883 के इल्बर्ट बिल विवाद (जिसमें भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीय अपराधियों पर मुकदमा चलाने के अधिकार पर विवाद हुआ) के दौरान सक्रिय भूमिका निभाई तथा भारतीय पक्ष का समर्थन किया। यह संगठन आगे चलकर 1885 में गठित भारतीय

राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख संस्थापक-संगठनों में से एक माना जाता है, तथा इसके कई सदस्य कांग्रेस के प्रारंभिक नेतृत्व में सम्मिलित हुए।

48. Answer: D

Solution: ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन (1851) का गठन बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी व जमींदारी एसोसिएशन के विलय से हुआ था, तथा इसका सामाजिक आधार मुख्यतः जमींदार व शिक्षित उच्च वर्ग तक सीमित था, व्यापक किसान-मजदूर वर्ग के मुद्दों से इसका सरोकार सीमित रहा — दोनों कथन सही हैं। किंतु भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन (दिसंबर 1885, बंबई) का वास्तविक आयोजन 'इंडियन नेशनल यूनियन' के मंच से हुआ, जिसकी पहल एक सेवानिवृत्त अंग्रेज सिविल सेवक ए.ओ. ह्यूम ने की थी — ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन ने इसका सीधा आयोजन नहीं करवाया, यद्यपि यह अप्रत्यक्ष रूप से पूर्ववर्ती राजनीतिक चेतना में योगदान अवश्य दे चुका था। अतः तीसरा कथन गलत है।

49. Answer: C

Solution: मद्रास महाजन सभा के संस्थापकों में एम. वीराघवाचारी व जी. सुब्रमण्यम अय्यर शामिल थे; बंबई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन के प्रमुख संस्थापक फिरोजशाह मेहता, के.टी. तेलंग व बदरुद्दीन तैयबजी थे; तथा इंडियन एसोसिएशन के संस्थापक सुरेंद्रनाथ बनर्जी व आनंद मोहन बोस थे — ये तीनों युग सही हैं। किंतु पूना सार्वजनिक सभा (1870) की स्थापना वस्तुतः महादेव गोविंद रानाडे व गणेश वासुदेव जोशी ने पुणे (बंबई नहीं) में की थी; दादाभाई नौरोजी, यद्यपि इस काल के एक प्रमुख राष्ट्रीय नेता थे, इस विशिष्ट संगठन के प्रत्यक्ष संस्थापक नहीं थे। अतः विकल्प (c) असंगत युग है।

50. Answer: A

Solution: उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशकों में कई ऐसी घटनाएँ हुईं जिन्होंने भारतीयों में क्षेत्रीय सीमाओं से ऊपर उठकर अखिल भारतीय स्तर पर एकजुट होने की भावना जगाई। इल्बर्ट बिल विवाद (1883) ने भारतीय बनाम अंग्रेज नस्लीय समानता के प्रश्न को उभारा; वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट (1878), जिसे 'गैंगिंग एक्ट' भी कहा गया, ने भारतीय भाषा के समाचार-पत्रों पर कठोर सेंसरशिप लगाई; तथा आर्म्स एक्ट (1878) ने भारतीयों के लिए हथियार रखना अत्यंत कठिन व भेदभावपूर्ण बना दिया (जबकि यूरोपीय नागरिकों को छूट थी)। इन तीनों घटनाओं ने सामूहिक रूप से भारतीय शिक्षित वर्ग में यह भावना प्रबल की कि क्षेत्रीय संगठनों के बजाय एक सशक्त

अखिल भारतीय राजनीतिक मंच की आवश्यकता है, जो अंततः 1885 में कांग्रेस की स्थापना में परिणत हुई।

5

1. Answer: D

Solution: 'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' की स्थापना 1866 में लंदन में दादाभाई नौरोजी के प्रयासों से हुई थी, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश संसद-सदस्यों व आम जनमत को भारतीय आर्थिक व राजनीतिक हितों के पक्ष में शिक्षित व प्रभावित करना था — यह कथन सत्य है। यद्यपि यह संगठन भौगोलिक रूप से इंग्लैंड में स्थित व सक्रिय था, इसने भारतीय मुद्दों (जैसे निकास सिद्धांत, सिविल सेवा में भारतीयों की भागीदारी) को सीधे ब्रिटिश नीति-निर्माताओं तक पहुँचाकर एक महत्वपूर्ण दबाव-समूह की भूमिका निभाई, जो परोक्ष रूप से भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन को भी सुदृढ़ करता रहा। अतः यह दावा कि इसका भारतीय राजनीति पर 'कोई प्रभाव नहीं' पड़ा, ऐतिहासिक रूप से गलत है।

52. Answer: A

Solution: अनुशीलन समिति की स्थापना 1902 में कलकत्ता में हुई, जिसका मूल उद्देश्य युवाओं को शारीरिक व्यायाम, आत्मरक्षा-प्रशिक्षण तथा राष्ट्रवादी वैचारिक शिक्षा के माध्यम से क्रांतिकारी गतिविधियों हेतु तैयार करना था। यह संगठन बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन की जननी मानी जाती है, जिसने आगे चलकर बारींद्र घोष व अरविंद घोष जैसे नेताओं को जन्म दिया तथा युगांतर जैसे उग्र क्रांतिकारी पत्र से भी जुड़ी रही। इसका बंगाल विभाजन-विरोधी स्वदेशी आंदोलन (1905) के साथ भी गहरा वैचारिक संबंध था, जिसने बंगाल में युवा क्रांतिकारी चेतना को नई ऊर्जा दी।

53. Answer: C

Solution: गदर पार्टी की स्थापना 1913 में अमेरिका के पश्चिमी तट पर बसे भारतीय प्रवासियों (मुख्यतः पंजाबी सिख किसान-मजदूर) ने की, जिसके प्रमुख संस्थापक सोहन सिंह भाखना थे तथा लाला हरदयाल इसके प्रमुख वैचारिक प्रेरणा-स्रोत रहे। इसका मुख्यालय सैन फ्रांसिस्को में स्थित था, जहाँ से 'गदर' नामक साप्ताहिक पत्र (जिसका उद्देश्य भारत में क्रांति की भावना जगाना था) प्रकाशित होता था। 1914 में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ने पर पार्टी के सदस्यों ने यह अवसर उपयुक्त मानते हुए बड़ी संख्या में भारत लौटकर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह की महत्वाकांक्षी योजना बनाई, यद्यपि ब्रिटिश खुफिया तंत्र की सतर्कता व मुखबिरी के कारण यह योजना असफल रही तथा कई सदस्यों को कठोर दंड मिला।

54. Answer: D

Solution: काकोरी षड्यंत्र कांड (9 अगस्त 1925) में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) के सदस्यों ने राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में लखनऊ के निकट काकोरी स्टेशन पर सरकारी खजाना ले जा रही ट्रेन को लूटने की योजना क्रियान्वित की, ताकि क्रांतिकारी गतिविधियों हेतु धन जुटाया जा सके। इस कांड में गिरफ्तार क्रांतिकारियों में राम प्रसाद बिस्मिल के साथ अशफाकउल्ला खाँ, राजेंद्र लाहिड़ी व ठाकुर रोशन सिंह को भी फांसी की सजा सुनाई गई — यह घटना हिंदू-मुस्लिम क्रांतिकारी एकता (बिस्मिल-अशफाक की मित्रता) का भी प्रतीक मानी जाती है। इस कठोर दमन के पश्चात संगठन का पुनर्गठन 1928 में अधिक वामपंथी व समाजवादी विचारधारा के साथ 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (HSRA) के रूप में हुआ, जिसमें भगत सिंह व चंद्रशेखर आजाद जैसे नए नेतृत्व का उदय हुआ।

55. Answer: A

Solution: भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन की प्रमुख घटनाओं का सही कालक्रम है: अलीपुर बम कांड (1908, अरविंद व बारींद्र घोष से संबद्ध) → काकोरी कांड (1925, राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में) → असेंबली बम कांड (8 अप्रैल 1929, भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त द्वारा केंद्रीय विधान सभा में बम फेंकना) → चटगाँव शस्त्रागार छापा (18 अप्रैल 1930, सूर्य सेन के नेतृत्व में)। यह क्रम बंगाल के प्रारंभिक क्रांतिकारी आंदोलन से लेकर पंजाब-उत्तर भारत के HRA/HSRA आंदोलन होते हुए पुनः बंगाल में सशस्त्र प्रतिरोध की एक पूर्ण चक्रीय यात्रा को दर्शाता है।

56. Answer: C

Solution: चटगाँव शस्त्रागार छापे (1930) का नेतृत्व सूर्य सेन ने किया, जो 'मास्टरदा' के नाम से लोकप्रिय थे तथा जिन्होंने स्कूल-शिक्षक होते हुए भी एक साहसिक सशस्त्र विद्रोह का आयोजन किया। लाहौर षड्यंत्र कांड (1928-29) में भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव ने मिलकर पुलिस अधिकारी सांडर्स की हत्या की, जो लाला लाजपत राय की मृत्यु का प्रतिशोध था। अलीपुर बम कांड (1908) में अरविंद घोष व उनके भाई बारींद्र घोष प्रमुख अभियुक्त थे। मुजफ्फरपुर बम कांड (1908) में खुदीराम बोस व प्रफुल्ल चाकी ने न्यायाधीश किंग्सफोर्ड को निशाना बनाया, किंतु दुर्भाग्यवश बम की चपेट में एक मित्र बग़्घी में सवार दो ब्रिटिश

महिलाएँ (केनेडी परिवार की) आ गई और उनकी मृत्यु हो गई। ये चारों युग ऐतिहासिक रूप से सही सुमेलित हैं।

57. Answer: A

Solution: विनायक दामोदर सावरकर ने 'अभिनव भारत' नामक गुप्त क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य युवाओं को क्रांतिकारी विचारधारा से प्रेरित कर सशस्त्र विद्रोह हेतु संगठित करना था। सावरकर स्वयं इंग्लैंड में शिक्षा के दौरान भी क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय रहे तथा उन्होंने 1857 के विद्रोह पर 'द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस' नामक प्रभावशाली पुस्तक भी लिखी, जिसमें उन्होंने 1857 को भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम घोषित किया।

58. Answer: D

Solution: भगत सिंह व उनके साथियों ने 1926 में लाहौर में 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य युवाओं में समाजवादी व राष्ट्रवादी चेतना जगाना था — यह कथन सत्य है। असेंबली बम कांड (1929) में भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त ने जानबूझकर किसी को हानि पहुँचाए बिना खाली स्थान पर बम फेंका, 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा लगाया तथा भागने के बजाय स्वेच्छा से गिरफ्तारी दी, ताकि न्यायालय को अपने विचारों के प्रचार का मंच बनाया जा सके — यह भी सत्य है। किंतु सांडर्स-हत्या (लाहौर षड्यंत्र कांड) व असेंबली बम कांड दो पृथक-पृथक कानूनी मामले थे, जिनकी सुनवाई अलग-अलग हुई — भगत सिंह को मृत्युदंड मुख्यतः लाहौर षड्यंत्र कांड में मिला, जबकि असेंबली बम कांड में उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी। अतः तीसरा कथन गलत है।

59. Answer: C

Solution: स्थायी बंदोबस्त (Permanent Settlement) 1793 में गवर्नर जनरल लॉर्ड कार्नवालिस द्वारा बंगाल, बिहार व उड़ीसा में लागू किया गया। इसके अंतर्गत जमींदारों को भूमि का स्थायी स्वामी मानकर उनसे एक निश्चित व स्थायी दर पर राजस्व वसूला जाता था — यह दर भविष्य में कभी नहीं बदली जानी थी, चाहे कृषि-उत्पादन कितना भी बढ़े। इस व्यवस्था का उद्देश्य जमींदार वर्ग को कंपनी का स्थायी व वफादार सहयोगी बनाना तथा राजस्व-आय को स्थिर व पूर्वानुमेय बनाना था, किंतु व्यवहार में इसने किसानों के शोषण व जमींदारी उत्पीड़न को बढ़ावा दिया।

60. Answer: C

Solution: कथन 1 ✓ — स्थायी बंदोबस्त में राजस्व माँग स्थायी रूप से निश्चित की गई थी और जमींदारों को भूमि पर अधिकार प्राप्त हुआ।

कथन 2 ✓ — रैयतवाड़ी में सरकार सीधे रैयत से राजस्व वसूलती थी।

कथन 3 ✗ — महालवाड़ी में गाँव/महाल की सामूहिक जिम्मेदारी महत्वपूर्ण विशेषता थी।

कथन 4 ✓ — रैयतवाड़ी में राजस्व का समय-समय पर पुनर्मूल्यांकन किया जाता था।

6

1. Answer: D

Solution: दादाभाई नौरोजी, जिन्हें 'भारत का वृद्ध पुरुष' (Grand Old Man of India) भी कहा जाता है, ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Poverty and Un-British Rule in India' (1901) में 'निकास सिद्धांत' (Drain of Wealth Theory) को विस्तार से प्रस्तुत किया — इस सिद्धांत के अनुसार भारत की राष्ट्रीय संपत्ति का एक बड़ा भाग होम चार्ज, अत्यधिक वेतन-पेंशन, सैन्य-व्यय व लाभांश के रूप में बिना किसी प्रत्यक्ष आर्थिक प्रतिफल के इंग्लैंड को हस्तांतरित हो रहा था, जो भारत की गरीबी का मूल कारण था। इस सिद्धांत को रमेशचंद्र दत्त ने अपनी पुस्तक 'Economic History of India' में सांख्यिकीय आँकड़ों के आधार पर और अधिक व्यवस्थित रूप से समर्थन व विस्तार दिया, जिससे यह सिद्धांत भारतीय राष्ट्रवादी आर्थिक चिंतन का एक केंद्रीय स्तंभ बन गया। अतः तीनों कथन सत्य हैं।

62. Answer: B

Solution: उन्नीसवीं सदी में भारत का 'निर्औद्योगीकरण' एक महत्वपूर्ण आर्थिक परिघटना रही, जिसमें परंपरागत हस्तशिल्प व कुटीर उद्योग (विशेषतः विश्व-प्रसिद्ध भारतीय सूती व रेशमी वस्त्र उद्योग) का व्यापक पतन हुआ — यह पहला कथन सत्य है। इसका मुख्य कारण था ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के पश्चात मशीन-निर्मित सस्ते वस्त्रों का भारत में भारी आयात, जबकि भारतीय हस्तनिर्मित वस्त्रों पर ब्रिटेन में जानबूझकर ऊँचा आयात-शुल्क लगाया गया ताकि भारतीय प्रतिस्पर्धा को कुचला जा सके — यह असंतुलित व्यापार-नीति दूसरा कथन सत्य सिद्ध करती है। किंतु यह कहना गलत है कि बेरोजगार हुए कारीगर पूर्णतः आधुनिक औद्योगिक क्षेत्र में समाहित हो गए — वास्तव में भारत में आधुनिक

उद्योगों का विकास इतना पर्याप्त व तीव्र नहीं था कि इतनी बड़ी संख्या में विस्थापित शिल्पकारों को रोजगार दे सके; परिणामस्वरूप वे कृषि क्षेत्र में लौटने को बाध्य हुए, जिससे 'कृषि पर जनसंख्या के अत्यधिक दबाव' की गंभीर समस्या उत्पन्न हुई। अतः तीसरा कथन गलत है।

63. Answer: D

Solution: उन्नीसवीं सदी के अंत में भारत में बार-बार आने वाले विनाशकारी अकालों की जाँच हेतु कई आयोग गठित हुए: प्रथम अकाल आयोग (1880) की अध्यक्षता रिचर्ड स्ट्रेची ने की, जिसने 'अकाल संहिता' (Famine Code) का प्रारंभिक प्रारूप तैयार किया; द्वितीय अकाल आयोग (1898) की अध्यक्षता सर जेम्स लायल ने की; तथा तृतीय अकाल आयोग (1901) की अध्यक्षता सर एंथोनी मैकडॉनल्ड ने की। विकल्प (d) में यह दावा किया गया है कि प्रथम अकाल आयोग की अध्यक्षता लॉर्ड कर्जन ने की — यह ऐतिहासिक रूप से असंभव है क्योंकि लॉर्ड कर्जन 1899-1905 के मध्य ही वायसराय के पद पर रहे, अर्थात् 1880 में वे इस पद पर थे ही नहीं। अतः विकल्प (d) असंगत युग्म है, जो इस प्रश्न का उत्तर है।

64. Answer: B

Solution: महालवाड़ी भू-राजस्व व्यवस्था के प्रवर्तक के रूप में होल्ट मैकेंजी को जाना जाता है, जिन्होंने इसे मुख्यतः उत्तर भारत (आगरा प्रांत, पंजाब के कुछ भाग) में लागू करवाया। इस व्यवस्था के अंतर्गत संपूर्ण गाँव अथवा 'महाल' (गाँवों का समूह) को एक इकाई मानकर सामूहिक रूप से राजस्व-दायित्व निर्धारित किया जाता था, जिसका वितरण गाँव के भीतर संयुक्त रूप से (परिवारों या समुदाय द्वारा) किया जाता था। यह व्यवस्था स्थायी बंदोबस्त की तुलना में अधिक लचीली मानी जाती थी, क्योंकि इसमें समय-समय पर पुनर्मूल्यांकन की गुंजाइश रहती थी।

65. Answer: C

Solution: रैयतवाड़ी व्यवस्था में चूँकि किसान सीधे सरकार को राजस्व देता था, इसमें कोई बिचौलिया (जमींदार) संरक्षण उपलब्ध नहीं था, तथा राजस्व-दरें प्रायः बहुत कठोर व समय-समय पर बढ़ाई जाने वाली होती थीं — यह पहला कथन सत्य है। इस व्यवस्था का प्रवर्तन मुख्यतः थॉमस मुनरो व कैप्टन अलेक्जेंडर रीड द्वारा मद्रास प्रेसीडेंसी में किया गया, जो बाद में बंबई प्रेसीडेंसी में भी विस्तारित हुई — यह दूसरा कथन भी सत्य है। किंतु यह दावा करना कि रैयतवाड़ी व्यवस्था किसानों के लिए 'सदैव अधिक लाभप्रद' रही, अतिशयोक्तिपूर्ण व गलत है — भू-स्वामित्व मिलने के

बावजूद उच्च व मनमानी दरें, कठोर वसूली-पद्धति व बार-बार पुनर्मूल्यांकन के कारण किसानों को अक्सर संकट व ऋणग्रस्तता का सामना करना पड़ता था, जो अंततः दक्कन दंगों (1875) जैसी घटनाओं का कारण बना। अतः तीसरा कथन गलत है।

66. Answer: B

Solution: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन दिसंबर 1885 में गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज, बंबई में आयोजित हुआ, जिसमें कुल 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता व्योमेश चंद्र बनर्जी ने की, जो एक प्रसिद्ध बैरिस्टर थे। ए.ओ. ह्यूम, जो एक सेवानिवृत्त अंग्रेज सिविल सेवक थे, ने इस संगठन की स्थापना में प्रमुख आयोजक की भूमिका निभाई, किंतु स्वयं अध्यक्ष नहीं बने — यह भेद परीक्षा में प्रायः पूछा जाता है।

67. Answer: D

Solution: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इतिहास को व्यापक रूप से दो प्रमुख चरणों में विभाजित किया जाता है। 1885-1905 का काल 'नरमपंथी काल' कहलाता है, जब दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले जैसे नेता प्रार्थना-पत्र, याचिका व संवैधानिक तरीकों के माध्यम से क्रमिक सुधार की माँग करते थे। 1905 में बंगाल विभाजन के पश्चात लाल-बाल-पाल (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल) के नेतृत्व में गरमपंथी विचारधारा का तीव्र उभार हुआ, जो स्वराज, स्वदेशी व बहिष्कार की उग्र नीतियों में विश्वास करती थी। इन दोनों विचारधाराओं के मध्य गहरे मतभेद के कारण 1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस औपचारिक रूप से विभाजित हो गई, जो लगभग 1916 तक (लखनऊ अधिवेशन में पुनर्मिलन तक) जारी रहा। अतः सभी कथन सत्य हैं।

68. Answer: C

Solution: दिसंबर 1916 में लखनऊ में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में दो महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं। प्रथम, कांग्रेस व मुस्लिम लीग के मध्य एक ऐतिहासिक समझौता हुआ, जिसे 'लखनऊ पैक्ट' कहा जाता है — यह हिंदू-मुस्लिम राजनीतिक एकता का दुर्लभ उदाहरण था। द्वितीय, 1907 से विभाजित नरमपंथी व गरमपंथी गुटों का इसी अधिवेशन में पुनर्मिलन भी हुआ, जिसमें तिलक जैसे गरमपंथी नेता पुनः कांग्रेस में शामिल हुए। किंतु लखनऊ पैक्ट में वास्तव में मुस्लिम लीग की माँग पर कांग्रेस ने पृथक साम्प्रदायिक निर्वाचिका (Separate Electorate) को स्वीकार किया था —

मुस्लिम लीग ने इस माँग को त्यागा नहीं, बल्कि इसे कांग्रेस से मनवाया। अतः तीसरा कथन पूर्णतः तथ्यों के विपरीत है।

69. Answer: B

Solution: बदरुद्दीन तैयबजी, जो एक प्रतिष्ठित मुस्लिम वकील व समाज-सुधारक थे, 1887 में मद्रास में आयोजित कांग्रेस के तृतीय अधिवेशन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए — इस प्रकार वे कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बने। उनके अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता व राष्ट्रीय एकता पर विशेष बल दिया, जो उस समय की साम्प्रदायिक तनावपूर्ण परिस्थितियों में एक महत्वपूर्ण संदेश था। बाद के वर्षों में मौलाना अबुल कलाम आजाद, रहीमतुल्ला सयानी व हकीम अजमल खाँ जैसे अन्य मुस्लिम नेता भी कांग्रेस अध्यक्ष बने, किंतु ये सभी तैयबजी के बाद आए।

70. Answer: D

Solution: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इतिहास में कई अधिवेशन मील के पत्थर साबित हुए। कलकत्ता अधिवेशन (1906, दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में) में स्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार व राष्ट्रीय शिक्षा के चार प्रमुख प्रस्ताव पारित हुए, जो गरमपंथी विचारधारा की औपचारिक स्वीकृति का प्रतीक बने। सूरत अधिवेशन (1907) में नरमपंथी-गरमपंथी विवाद इतना गहरा गया कि कांग्रेस औपचारिक रूप से विभाजित हो गई। लाहौर अधिवेशन (दिसंबर 1929, जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में) में 'पूर्ण स्वराज' का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित हुआ तथा 26 जनवरी 1930 को 'स्वतंत्रता दिवस' मनाने का निर्णय लिया गया। हरिपुरा अधिवेशन (1938) में सुभाष चंद्र बोस प्रथम बार कांग्रेस अध्यक्ष निर्वाचित हुए। ये चारों घटनाएँ ऐतिहासिक रूप से सही सुमेलित हैं।

7

1. Answer: A

Solution: 'सेप्टी वाल्व सिद्धांत' के अनुसार, ए.ओ. ह्यूम व कुछ इतिहासकारों का मानना है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885) वास्तव में ब्रिटिश सरकार की एक सुनियोजित रणनीति थी, जिसके अंतर्गत शिक्षित भारतीय मध्यम वर्ग के बढ़ते असंतोष को एक नियंत्रित, संवैधानिक व 'सुरक्षित' मंच प्रदान किया गया, ताकि यह असंतोष किसी बड़े हिंसक विद्रोह (जैसे 1857) का रूप न ले सके — जैसे भाप के इंजन में एक 'सेप्टी वाल्व' अतिरिक्त दबाव को नियंत्रित ढंग से बाहर निकालता है। यह सिद्धांत विवादास्पद है और कई राष्ट्रवादी इतिहासकार इसे अस्वीकार करते हुए कांग्रेस को भारतीयों की स्वतःस्फूर्त राजनीतिक पहल मानते हैं, किंतु परीक्षा

की दृष्टि से इस सिद्धांत की मूल अवधारणा को समझना आवश्यक है।

72. Answer: D

Solution: कांग्रेस के प्रारंभिक नरमपंथी नेता (जैसे दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले) मुख्यतः संवैधानिक व क्रमिक सुधार में विश्वास रखते थे — उनकी माँगों में विधान परिषदों में भारतीय प्रतिनिधित्व का विस्तार, सिविल सेवा परीक्षा को भारत व इंग्लैंड में एक साथ आयोजित करना (ताकि भारतीय उम्मीदवारों को इंग्लैंड जाने की बाध्यता न हो) तथा अत्यधिक सैन्य-व्यय में कटौती जैसी माँगें शामिल थीं — यह कथन सत्य है। किंतु नरमपंथी नेता ब्रिटिश शासन की मूल वैधता व संरचना में गहरा विश्वास रखते थे तथा वे इसके तत्काल उन्मूलन की नहीं, बल्कि इसके भीतर रहकर क्रमिक सुधार व अधिकाधिक भारतीय भागीदारी की माँग करते थे — यह दृष्टिकोण बाद के गरमपंथी व क्रांतिकारी विचारधाराओं से मौलिक रूप से भिन्न था। अतः दूसरा कथन गलत है।

73. Answer: B

Solution: 1773 के रेगुलेटिंग एक्ट के अंतर्गत वारेन हेस्टिंग्स को 'बंगाल का गवर्नर जनरल' नियुक्त किया गया, जो इस पद पर आसीन होने वाले प्रथम व्यक्ति थे — इस अधिनियम ने मद्रास व बंबई प्रेसीडेंसी को भी आंशिक रूप से बंगाल के गवर्नर जनरल के अधीन कर दिया। बाद में 1833 के चार्टर एक्ट के अंतर्गत यह पद 'भारत का गवर्नर जनरल' (Governor-General of India) में परिवर्तित हुआ, जिसके प्रथम धारक लॉर्ड विलियम बैंटिक बने — यह पद संपूर्ण भारत पर वास्तविक केंद्रीकृत प्रशासनिक नियंत्रण दर्शाता था। परीक्षा में यह भेद अत्यंत महत्वपूर्ण है: 'बंगाल का गवर्नर जनरल' (हेस्टिंग्स) बनाम 'भारत का गवर्नर जनरल' (बैंटिक)।

74. Answer: D

Solution: 1857 के विद्रोह के पश्चात भारत सरकार अधिनियम, 1858 पारित हुआ, जिसके अंतर्गत ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त कर भारत को सीधे ब्रिटिश ताज (क्राउन) के अधीन कर दिया गया — इसी अधिनियम के तहत 'गवर्नर जनरल' का पद 'वायसराय' (सम्राट/सम्राज्ञी के प्रत्यक्ष प्रतिनिधि) में परिवर्तित हुआ। लॉर्ड कैनिंग, जो पहले से ही गवर्नर जनरल थे, इस नए पद के प्रथम धारक बने — इस प्रकार वे भारत के प्रथम वायसराय कहलाए, जबकि वे विद्रोह के समय गवर्नर जनरल के रूप में पहले से ही कार्यरत थे।

75. Answer: C

Solution: औपनिवेशिक भारत में विभिन्न गवर्नर जनरल/वायसराय के कार्यकाल में महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं: लॉर्ड विलियम बैंटिक (1828-35) के काल में सती प्रथा उन्मूलन (1829) व मैकाले मिनट (1835) द्वारा अंग्रेजी शिक्षा नीति लागू हुई; लॉर्ड डलहौजी (1848-56) के काल में व्यपगत सिद्धांत व रेलवे-टेलीग्राफ की शुरुआत हुई; लॉर्ड कैनिंग (1856-62) के काल में 1857 का विद्रोह हुआ, जिसके परिणामस्वरूप कंपनी शासन समाप्त कर ताज का प्रत्यक्ष शासन प्रारंभ हुआ; तथा लॉर्ड रिपन (1880-84) के काल में स्थानीय स्वशासन अधिनियम (1882, जिन्हें 'भारतीय स्थानीय स्वशासन का जनक' कहा जाता है) व विवादास्पद इल्बर्ट बिल पारित हुआ। ये चारों युग सही सुमेलित हैं।

76. Answer: A

Solution: लॉर्ड कर्जन (1899-1905) के कार्यकाल में 1905 में बंगाल का विभाजन हुआ, जिसका आधिकारिक तर्क 'प्रशासनिक सुविधा' (बंगाल प्रांत का अत्यधिक बड़ा आकार) दिया गया, किंतु व्यापक रूप से यह माना जाता है कि इसका वास्तविक उद्देश्य बंगाल में उभरती राष्ट्रवादी चेतना को हिंदू-मुस्लिम आधार पर विभाजित कर कमजोर करना था ('फूट डालो और राज करो' नीति) — यह पहला कथन सत्य है। कर्जन ने भारतीय पुरातात्विक धरोहर के संरक्षण में भी रुचि दिखाई तथा 1904 में 'प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम' पारित करवाया — यह भी सत्य है। किंतु कर्जन की समग्र नीतियों (बंगाल विभाजन, कलकत्ता विश्वविद्यालय अधिनियम में विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियंत्रण बढ़ाना, आधिकारिक भाषा नीति) को 'उदारवादी' कहना पूर्णतः गलत है — इन्हीं नीतियों ने स्वदेशी आंदोलन (1905) जैसे व्यापक व तीव्र राष्ट्रवादी विरोध को जन्म दिया, जो कर्जन-काल का सबसे प्रमुख राजनीतिक परिणाम माना जाता है। अतः तीसरा कथन गलत है।

77. Answer: C

Solution: 1909 में लॉर्ड मिंटो द्वितीय के वायसराय-काल में भारतीय परिषद अधिनियम (मॉर्ले-मिंटो सुधार) पारित हुआ — इसका नाम तत्कालीन भारत-सचिव जॉन मॉर्ले व वायसराय मिंटो के नाम पर रखा गया। इस अधिनियम की सबसे विवादास्पद विशेषता मुस्लिमों के लिए पृथक साम्प्रदायिक निर्वाचिका (Separate Electorate) की शुरुआत थी, जिसे कई इतिहासकार भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिक विभाजन की औपचारिक शुरुआत मानते हैं, जो आगे चलकर देश-विभाजन तक की एक

कड़ी बनी। इसी अधिनियम ने केंद्रीय व प्रांतीय विधान परिषदों में भारतीय प्रतिनिधित्व का भी सीमित विस्तार किया।

78. Answer: D

Solution: बीसवीं सदी के प्रारंभिक दशकों में विभिन्न वायसरायों के कार्यकाल में महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाएँ घटित हुईं: लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916-21) के काल में मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (1919), रौलट एक्ट व जलियाँवाला बाग हत्याकांड जैसी महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं; लॉर्ड इरविन (1926-31) के काल में साइमन कमीशन का भारत आगमन, नमक सत्याग्रह (1930) व गांधी-इरविन समझौता (1931) हुए; लॉर्ड विलिंग्डन (1931-36) के काल में सविनय अवज्ञा आंदोलन का दूसरा चरण, सांप्रदायिक पंचाट व पूना पैक्ट (1932) हुए; तथा लॉर्ड वेवेल (1943-47) के काल में शिमला सम्मेलन (1945) व कैबिनेट मिशन योजना का क्रियान्वयन हुआ। ये चारों युग ऐतिहासिक रूप से सही सुमेलित हैं।

79. Answer: A

Solution: लॉर्ड माउंटबेटन भारत के अंतिम वायसराय (1947) व स्वतंत्रता के पश्चात स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल (जून 1948 तक) दोनों रहे — यह एक विशिष्ट संयोग था। उन्होंने 3 जून 1947 को अपनी प्रसिद्ध योजना प्रस्तुत की, जिसमें भारत विभाजन (भारत व पाकिस्तान का सृजन) व सत्ता-हस्तांतरण की विस्तृत रूपरेखा तय की गई। मूल कैबिनेट मिशन योजना व अन्य पूर्व-योजनाओं में स्वतंत्रता हेतु जून 1948 की समय-सीमा प्रस्तावित थी, किंतु बढ़ती साम्प्रदायिक हिंसा व राजनीतिक अस्थिरता को देखते हुए माउंटबेटन ने इसे नाटकीय रूप से लगभग एक वर्ष आगे बढ़ाकर 15 अगस्त 1947 कर दिया, जो एक विवादास्पद निर्णय भी माना जाता है क्योंकि इसने विभाजन की तैयारियों (सीमा-निर्धारण, जनसंख्या स्थानांतरण) हेतु अत्यंत कम समय दिया। अतः सभी कथन सत्य हैं।

80. Answer: C

Solution: लॉर्ड लिटन (1876-80) के दमनकारी कार्यकाल में वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट (1878) व आर्म्स एक्ट (1878) जैसे कठोर कानून पारित हुए, जो भारतीयों के मौलिक अधिकारों पर गंभीर प्रतिबंध थे। लॉर्ड लैंसडाउन (1888-94) के काल में भारतीय परिषद अधिनियम, 1892 पारित हुआ। लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय (1910-16) के काल में 1911 का दिल्ली दरबार आयोजित हुआ, जहाँ राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित करने की घोषणा हुई। ये तीनों युग सही हैं। किंतु फैक्टरी एक्ट, 1881 — जिसने बाल-श्रम पर

सीमित नियंत्रण व श्रमिक-कार्य-घंटों पर प्रारंभिक विनियमन लगाया — वस्तुतः लॉर्ड रिपन (1880-84) के अधिक उदार व सुधारवादी कार्यकाल में पारित हुआ था, दमनकारी नीतियों के लिए कुख्यात लॉर्ड लिटन के काल में नहीं। अतः विकल्प (c) असंगत युग्म है।

8

1. Answer: A

Solution: लॉर्ड कर्जन का वायसराय-काल (1899-1905) अपेक्षाकृत दीर्घ व विस्तारित माना जाता है, क्योंकि उन्हें एक असामान्य कदम के रूप में पुनर्नियुक्ति दी गई थी, जो उस समय की सामान्य वायसराय-नियुक्ति अवधि (सामान्यतः 5 वर्ष) से अधिक विशिष्ट थी। यह दीर्घ कार्यकाल उन्हें बंगाल विभाजन जैसी दूरगामी व विवादास्पद नीतियों को क्रियान्वित करने का पर्याप्त समय व अवसर प्रदान करता है, जो उनके प्रशासनिक व्यक्तित्व की एक पहचान बन गई।

82. Answer: B

Solution: लॉर्ड वेलेजली (1798-1805) ने 'सहायक संधि व्यवस्था' को एक सुव्यवस्थित नीति के रूप में लागू किया, जिसके अंतर्गत भारतीय शासकों को अपने राज्य में एक स्थायी अंग्रेज सेना रखने, विदेश-नीति पर नियंत्रण त्यागने व अंग्रेज रेजीडेंट को दरबार में स्वीकार करने हेतु बाध्य किया गया — यह पहला कथन सत्य है। हैदराबाद के निजाम निजाम अली खान 1798 में इस व्यवस्था को स्वीकार करने वाले प्रथम भारतीय शासक बने — यह दूसरा कथन भी सत्य है। किंतु यह दावा करना कि इस व्यवस्था का भारतीय राज्यों की आर्थिक स्वायत्तता पर 'कोई प्रभाव नहीं' पड़ा क्योंकि सैन्य-व्यय अंग्रेज सरकार वहन करती थी, पूर्णतः गलत है — वास्तव में तैनात सेना का संपूर्ण खर्च संबंधित भारतीय राज्य को ही, प्रायः अपनी बहुमूल्य भूमि सौंपकर, वहन करना पड़ता था, जिससे इन राज्यों की आर्थिक स्वतंत्रता व संसाधन गंभीर रूप से क्षीण हो गए। अतः तीसरा कथन गलत है।

83. Answer: A

Solution: 8 अगस्त 1942 को बंबई के गोवालिया टैंक मैदान में कांग्रेस कार्यसमिति द्वारा पारित प्रस्ताव के साथ 'भारत छोड़ो आंदोलन' प्रारंभ हुआ, जो लॉर्ड लिनलिथगो (1936-43) के वायसराय-काल की सबसे बड़ी घटना थी। लिनलिथगो, जो द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वायसराय रहे, ने इस आंदोलन का अत्यंत कठोरता से दमन किया — गांधीजी सहित लगभग समस्त शीर्ष

कांग्रेसी नेतृत्व को आंदोलन की घोषणा के कुछ ही घंटों के भीतर गिरफ्तार कर लिया गया, जिससे यह आंदोलन बिना केंद्रीय नेतृत्व के स्वतःस्फूर्त व स्थानीय स्तर पर संचालित होने को विवश हुआ।

84. Answer: D

Solution: बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट का उदय बीसवीं सदी के प्रारंभ में एक सांस्कृतिक-राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया के रूप में हुआ।

अवनींद्रनाथ टैगोर, जो इसके प्रमुख प्रवर्तक थे, ने मुगल-राजपूत लघुचित्रण परंपरा व अजंता की गुफा-चित्रकला से प्रेरणा लेकर एक विशिष्ट भारतीय शैली विकसित की, जो यूरोपीय अकादमिक यथार्थवाद के प्रत्यक्ष विरोध में खड़ी थी। इसके विपरीत, राजा रवि वर्मा (जो कालक्रम में अवनींद्रनाथ से कुछ पूर्ववर्ती थे) ने पाश्चात्य तैल-चित्रण तकनीक अपनाकर हिंदू पौराणिक कथाओं व देवी-देवताओं का यथार्थवादी चित्रण किया — यह शैली बंगाल स्कूल के दर्शन से भिन्न मानी जाती है, किंतु प्रश्न में इसे केवल तुलनात्मक जानकारी के रूप में शामिल किया गया है। नंदलाल बोस, जो अवनींद्रनाथ के प्रमुख शिष्य थे, ने शांतिनिकेतन में कला-शिक्षा को नई दिशा दी तथा भारतीय संविधान की मूल प्रति के अलंकरण में भी योगदान दिया। अतः विकल्प (a), (b) व (c) व्यक्तिगत रूप से सही तथ्य हैं।

85. Answer: A

Solution: शांतिनिकेतन, जो रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित किया गया तथा बाद में 'विश्व-भारती' विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ, आधुनिक भारतीय कला, साहित्य व अंतर-सांस्कृतिक शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र बना, जहाँ नंदलाल बोस जैसे कलाकारों ने कला-शिक्षा को नया आयाम दिया। जयपुर घराना राजस्थानी चित्रकला व संगीत की एक विशिष्ट शैलीगत परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है, जो मुगल व राजपूत प्रभावों के समन्वय से विकसित हुई। इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट (1907) की स्थापना अवनींद्रनाथ टैगोर व उनके सहयोगियों ने भारतीय पारंपरिक कला-शैलियों के संरक्षण व प्रचार हेतु की, जो बंगाल स्कूल आंदोलन को संस्थागत रूप प्रदान करने वाली प्रमुख संस्था बनी। तीनों युग्म सही सुमेलित हैं।

86. Answer: B

Solution: ई.बी. हैवेल, एक अंग्रेज कला-इतिहासकार जो कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट (सरकारी कला विद्यालय) के प्रिंसिपल थे, ने पाश्चात्य कला-शिक्षा पद्धति की आलोचना करते हुए

भारतीय पारंपरिक कला-शैलियों के पुनरुत्थान में अवनींद्रनाथ टैगोर का सक्रिय व संस्थागत समर्थन किया — यह उल्लेखनीय है कि एक अंग्रेज अधिकारी ने ही इस स्वदेशी कला-आंदोलन को बढ़ावा दिया। यह आंदोलन कालक्रम व वैचारिक दृष्टि से स्वदेशी आंदोलन (1905, बंगाल विभाजन-विरोधी) के सांस्कृतिक समानांतर के रूप में भी देखा जाता है, जहाँ राजनीतिक स्वदेशी की भावना कला के क्षेत्र में भी प्रतिबिंबित हुई — ये दोनों कथन सत्य हैं। किंतु राजा रवि वर्मा को बंगाल स्कूल का प्रवर्तक कहना गलत है, क्योंकि उनकी शैली पूर्णतः पाश्चात्य यथार्थवादी तैल-चित्रण तकनीक (यूरोपीय अकादमिक विधि में भारतीय पौराणिक विषयवस्तु) पर आधारित थी — यह बंगाल स्कूल की स्वदेशी-प्रेरित, पाश्चात्य-विरोधी शैली से पूर्णतः विपरीत दिशा में था। अतः तीसरा कथन गलत है।

87. Answer: C

Solution: विक्टोरिया मेमोरियल (कोलकाता, 1921 में पूर्ण) का निर्माण महारानी विक्टोरिया की स्मृति में विलियम एमर्सन द्वारा अभिकल्पित इंडो-सारसेनिक शैली में हुआ, जो यूरोपीय नियोक्लासिकल तत्वों (जैसे गुंबद, स्तंभ) व भारतीय-मुगल स्थापत्य तत्वों (जैसे छतरियाँ, जालीदार खिड़कियाँ) का सजग समन्वय प्रस्तुत करता है। गेटवे ऑफ इंडिया (मुंबई, जॉर्ज विटेट द्वारा अभिकल्पित) भी इसी इंडो-सारसेनिक शैली का उदाहरण है, जो गुजराती-मुगल स्थापत्य तत्वों से प्रेरित है। राष्ट्रपति भवन (नई दिल्ली, एडविन लुटियंस द्वारा अभिकल्पित) में भी भारतीय (जैसे छतरी, जाली) व पाश्चात्य (क्लासिकल यूरोपीय) तत्वों का मिश्रण देखा जाता है। अतः विकल्प (c) का यह दावा कि विक्टोरिया मेमोरियल 'पूर्णतः मुगल शैली' में है व इसमें कोई यूरोपीय तत्व नहीं है, ऐतिहासिक व स्थापत्य-कला की दृष्टि से गलत है।

88. Answer: D

Solution: बीसवीं सदी में भारतीय शास्त्रीय कला-परंपराओं के पुनरुत्थान में कई व्यक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। रुक्मिणी देवी अरुंडेल ने भरतनाट्यम को, जो कभी केवल मंदिर-नर्तकियों (देवदासी) तक सीमित एक कला-रूप माना जाता था, एक सम्मानित शास्त्रीय नृत्य के रूप में पुनर्स्थापित किया तथा चेन्नई में 'कलाक्षेत्र' नामक प्रतिष्ठित संस्था की स्थापना की। पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने भारतीय शास्त्रीय संगीत-शिक्षा को व्यवस्थित रूप देने हेतु 'गांधर्व महाविद्यालय' की स्थापना की। पंडित विष्णु नारायण भातखंडे ने भारतीय शास्त्रीय संगीत के जटिल राग-

वर्गीकरण को एक व्यवस्थित सैद्धांतिक ढाँचे में प्रस्तुत किया, जो आज भी संगीत-शिक्षा का आधार है। तीनों व्यक्तित्व वास्तविक व प्रामाणिक हैं।

89. Answer: A

Solution: उन्नीसवीं-बीसवीं सदी के साहित्यिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण में कई क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्यकारों ने राष्ट्रवादी चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने अपने उपन्यास 'आनंदमठ' में 'वंदे मातरम्' गीत की रचना की, जो आगे चलकर संपूर्ण राष्ट्रीय आंदोलन का प्रेरणा-गीत बना। भारतेन्दु हरिश्चंद्र को उनके अग्रणी योगदान के कारण 'आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक' माना जाता है, जिन्होंने हिंदी गद्य व नाटक को नई दिशा दी। सुब्रमण्यम भारती एक प्रखर तमिल राष्ट्रवादी कवि थे, जिन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम के साथ-साथ जाति-प्रथा व महिला-अधिकारों जैसे सामाजिक सुधार के विषयों पर भी सशक्त लेखन किया — ये तीनों युग सही हैं। किंतु चौथा कथन पूर्णतः विपरीत व गलत है — भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने वास्तव में हिंदी भाषा व साहित्य के व्यापक प्रसार व संवर्धन हेतु समर्पित रूप से कार्य किया, अंग्रेजी को बढ़ावा देने या हिंदी का विरोध करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

90. Answer: C

Solution: आधुनिक भारत में कई महत्वपूर्ण शैक्षणिक व पुरातात्विक संस्थाओं की स्थापना हुई। एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना 1784 में सर विलियम जोंस ने कलकत्ता में की, जिसने भारतीय प्राच्य विद्या (Oriental Studies), संस्कृत साहित्य व प्राचीन इतिहास के अध्ययन को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India) की स्थापना 1861 में अलेक्जेंडर कनिंघम के नेतृत्व में हुई, जिसने भारत के प्राचीन स्मारकों व पुरातात्विक स्थलों के व्यवस्थित सर्वेक्षण व संरक्षण की नींव रखी। इंडियन म्यूजियम, कोलकाता (1814) की स्थापना एशियाटिक सोसाइटी के अंतर्गत ही हुई थी, जो एशिया का सबसे पुराना व सबसे बड़ा संग्रहालय माना जाता है। अतः तीनों तथ्य सही हैं।

9

1. Answer: B

Solution: अवनींद्रनाथ टैगोर की प्रसिद्ध चित्रकृति 'भारत माता' (1905, स्वदेशी आंदोलन के दौरान रचित) भारत को एक शांत, दिव्य व देवी-सदृश स्त्री रूप में प्रस्तुत करती है, जो एक हाथ में अन्न

(भोजन), दूसरे में वस्त्र, तीसरे में पुस्तक (ज्ञान) व चौथे में जप-माला (आध्यात्मिक मुक्ति) धारण किए हुए है — यह चित्र राष्ट्र को एक पवित्र मातृ-रूप में चित्रित कर राष्ट्रवादी भावना को गहरा प्रतीकात्मक आधार देता है, और स्वदेशी आंदोलन के दौरान अत्यंत लोकप्रिय हुआ — पहले दोनों कथन सत्य हैं। किंतु यह चित्र यथार्थवादी पाश्चात्य तैल-चित्रण तकनीक में नहीं, बल्कि अवनींद्रनाथ की विशिष्ट 'वांश तकनीक' (जल-रंग की परतों को बार-बार धोकर एक कोमल, आध्यात्मिक आभा उत्पन्न करने की पद्धति, जो जापानी चित्रकला से भी प्रभावित थी) में बनाया गया था — अतः तीसरा कथन गलत है।

92. Answer: D

Solution: अलेक्जेंडर कनिंघम को 'भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का जनक' कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने 1861 में इस संस्था की स्थापना की तथा इसके प्रथम महानिदेशक के रूप में भारत भर में व्यवस्थित पुरातात्विक सर्वेक्षण, उत्खनन व स्मारक-संरक्षण कार्य की नींव रखी। उन्होंने बौद्ध स्थलों (जैसे सारनाथ, सांची) व प्राचीन भारतीय भूगोल के अध्ययन में विशेष योगदान दिया। इसके विपरीत, विलियम जॉस एशियाटिक सोसाइटी के संस्थापक थे (भाषाशास्त्र व साहित्य पर केंद्रित), जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि को समझा (अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सहायक), तथा जॉन मार्शल बाद में सिंधु घाटी सभ्यता की खोज (1920 के दशक) से जुड़े महानिदेशक थे — इन तीनों की भूमिका अलग-अलग है, अतः 'जनक' की उपाधि विशेष रूप से कनिंघम को दी जाती है।

93. Answer: C

Solution: 'हिंदू मेला' का आयोजन 1867 में कलकत्ता में नवगोपाल मित्र द्वारा किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीयों में स्वदेशी भावना, सांस्कृतिक गौरव व आत्मनिर्भरता की चेतना जगाना था — यह पहला कथन सत्य है। इस मेले में स्वदेशी वस्तुओं की प्रदर्शनी, भारतीय पारंपरिक खेल (कुश्ती, लाठी-खेल आदि) व सांगीतिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे, ताकि पाश्चात्य सांस्कृतिक प्रभाव के विरुद्ध भारतीय पहचान को सुदृढ़ किया जा सके — यह दूसरा कथन भी सत्य है। यह आयोजन राजनीतिक राष्ट्रवाद के औपचारिक उदय (कांग्रेस, 1885) से लगभग दो दशक पूर्व हुआ, अतः इसे प्रारंभिक 'सांस्कृतिक-राष्ट्रवाद' की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति माना जाता है, जिसने आगे चलने वाले राजनीतिक आंदोलनों के लिए भावनात्मक आधार तैयार किया। अतः सभी कथन सत्य हैं।

94. Answer: D

Solution: संन्यासी विद्रोह (लगभग 1770-1820 के दशकों तक फैला) बंगाल व बिहार क्षेत्र में उन विस्थापित संन्यासियों व फकीरों द्वारा किया गया सशस्त्र प्रतिरोध था, जिन्हें कंपनी शासन ने तीर्थ-यात्रा व भिक्षाटन पर प्रतिबंध लगाकर उनकी आजीविका छीन ली थी। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ' (1882) में इसी विद्रोह की काल्पनिक किंतु प्रेरणादायक पृष्ठभूमि पर आधारित कथा रची, जिसमें 'वंदे मातरम्' गीत की भी रचना हुई। इस विद्रोह का एक महत्वपूर्ण कारण 1770 के भीषण बंगाल अकाल (जिसमें लगभग एक-तिहाई जनसंख्या की मृत्यु हुई मानी जाती है) के पश्चात उत्पन्न व्यापक आर्थिक संकट व कंपनी की निर्मम राजस्व-वसूली नीति भी माना जाता है। अतः सभी कथन सत्य हैं।

95. Answer: A

Solution: नील विद्रोह (1859-60) बंगाल के किसानों द्वारा यूरोपीय नील बागान मालिकों की क्रूर व शोषणकारी नीतियों — जिसमें किसानों को अलाभकारी दरों पर जबरन नील की खेती करने हेतु बाध्य किया जाता था — के विरुद्ध एक व्यापक व सफल विद्रोह था, जो अंततः 'नील आयोग' (1860) के गठन तक ले गया। इस विद्रोह के प्रति सहानुभूति व समर्थन जुटाने में हरीश चंद्र मुखर्जी ने अपने अंग्रेजी पत्र 'हिंदू पैट्रियट' में लगातार लेखन कर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे यह मुद्दा शिक्षित बंगाली मध्यम वर्ग व यहाँ तक कि ब्रिटिश जनमत तक भी पहुँचा। दीनबंधु मित्र ने इसी विद्रोह की पृष्ठभूमि पर 'नील दर्पण' नामक प्रभावशाली बांग्ला नाटक लिखा, जिसने जन-जागृति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अतः सभी कथन सत्य हैं — यह भारत के प्रथम सफल किसान-आंदोलनों में से एक माना जाता है।

96. Answer: C

Solution: पागल पंथी विद्रोह मैमनसिंह क्षेत्र (वर्तमान बांग्लादेश) में हुआ, जिसका नेतृत्व करम शाह के पुत्र टीपू शाह ने किया — यह पहला कथन सत्य है। इस विद्रोह की जड़ें मुख्यतः जमींदारों द्वारा किसानों (विशेषतः आदिवासी व निम्न वर्ग) पर लगाए जा रहे अत्यधिक व अनुचित कर-भार तथा भूमि-संबंधी शोषण में थीं, जिसके विरुद्ध किसानों ने संगठित प्रतिरोध किया — दूसरा कथन भी सत्य है। किंतु यह कहना कि यह विद्रोह 'पूर्णतः धार्मिक' था और कृषि-आर्थिक शोषण से इसका कोई संबंध नहीं था, अधूरा व भ्रामक विवरण है — यद्यपि इसका एक धार्मिक-सांप्रदायिक

आयाम भी था (टीपू शाह की धार्मिक अपील), इसका मूल आधार वास्तव में आर्थिक शोषण ही था। अतः तीसरा कथन गलत है।

97. Answer: B

Solution: उन्नीसवीं व बीसवीं सदी में भारत के विभिन्न भागों में जनजातीय व किसान समुदायों ने अपने अधिकारों की रक्षा हेतु सशस्त्र विद्रोह किए। संथाल विद्रोह (1855-56, बिहार-झारखंड क्षेत्र) का नेतृत्व सिद्धू व कान्हू नामक भाइयों ने किया, जो साहूकारों व जमींदारों के शोषण के विरुद्ध था। मुंडा विद्रोह, जिसे 'उलगुलान' (महाविद्रोह) कहा जाता है (1899-1900), का नेतृत्व बिरसा मुंडा ने किया, जो भूमि-अधिकार व सांस्कृतिक पहचान की रक्षा हेतु था। कोल विद्रोह (1831-32, छोटानागपुर क्षेत्र) का नेतृत्व बुद्धू भगत ने किया। रम्पा विद्रोह (1922-24, आंध्र प्रदेश के पूर्वी घाट क्षेत्र) का नेतृत्व अल्लूरी सीताराम राजू ने किया, जो वन-नीति में परिवर्तन के विरुद्ध था। ये चारों युग सही सुमेलित हैं।

98. Answer: D

Solution: दक्कन दंगे (1875, महाराष्ट्र के पुणे व अहमदनगर जिलों) वस्तुतः स्थानीय किसानों द्वारा साहूकारों (विशेषतः मारवाड़ी व गुजराती व्यापारी-साहूकार वर्ग) के विरुद्ध हुआ विस्फोट था, जो अत्यधिक ब्याज दरों, कर्ज-दस्तावेजों में हेरफेर तथा ऋण न चुका पाने पर किसानों की भूमि हड़पने की प्रवृत्ति के लिए उत्तरदायी थे — यह पहला कथन सत्य है। इस घटना की गंभीरता को देखते हुए सरकार ने 'दक्कन रैयत आयोग' गठित किया, जिसकी सिफारिशों के आधार पर 1879 में 'दक्कन कृषक राहत अधिनियम' पारित हुआ, जिसने किसानों को साहूकारों के अत्यधिक शोषण से कुछ कानूनी सुरक्षा प्रदान की — दूसरा कथन भी सत्य है। किंतु यह विद्रोह प्रत्यक्षतः ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध नहीं, बल्कि साहूकार वर्ग के विरुद्ध था (यद्यपि अप्रत्यक्ष रूप से यह ब्रिटिश भू-राजस्व व न्यायिक नीतियों की उपज थी, जिन्होंने साहूकारों को अत्यधिक कानूनी शक्ति दे रखी थी)। अतः तीसरा कथन गलत है।

99. Answer: C

Solution: वहाबी आंदोलन के प्रवर्तक सैयद अहमद बरेलवी थे, जिन्होंने इसे इस्लाम में व्याप्त कथित 'अशुद्धताओं' को दूर कर शुद्ध व मूल इस्लामी सिद्धांतों की पुनर्स्थापना हेतु एक धार्मिक सुधार आंदोलन के रूप में प्रारंभ किया — यह पहला कथन सत्य है। प्रारंभ में इस आंदोलन का प्रमुख लक्ष्य पंजाब के सिख शासन (महाराजा रणजीत सिंह) के विरुद्ध 'जिहाद' छेड़ना था, किंतु सिख शक्ति के पतन व पंजाब के ब्रिटिश विलय (1849) के पश्चात इस आंदोलन

की दिशा बदलकर सीधे अंग्रेज शासन के विरुद्ध हो गई — दूसरा कथन भी सत्य है। सैयद अहमद बरेलवी की मृत्यु 1831 में बालाकोट के युद्ध में सिख सेना के विरुद्ध लड़ते हुए हुई — तीसरा कथन भी सत्य है। अतः सभी कथन सही हैं।

100. Answer: A

Solution: मोपला विद्रोह (1921, केरल के मालाबार क्षेत्र) की मूल जड़ें वहाँ की विशिष्ट 'जन्मी-कृषक' भू-व्यवस्था में थीं, जिसके अंतर्गत मुस्लिम कृषक (मोपला) मुख्यतः हिंदू भू-स्वामियों (जन्मी) के अधीन दीर्घकालिक भूमि-शोषण झेल रहे थे — जब यह आर्थिक असंतोष खिलाफत आंदोलन (1920) के साथ जुड़ा, तो यह विद्रोह उग्र होकर कालांतर में सांप्रदायिक हिंसा का रूप भी ले बैठा। कूका आंदोलन (नामधारी सिख संप्रदाय, पंजाब) ने गौ-हत्या के विरुद्ध व ब्रिटिश-विरोधी गतिविधियाँ चलाईं। पाबना विद्रोह (1873, बंगाल) में किसानों ने जमींदारों के विरुद्ध संगठित होकर 'कृषक सभाओं' का गठन किया। ये तीनों (b, c, d) सही सुमेलित हैं। किंतु विकल्प

(a) में मोपला विद्रोह को 'पूर्णतः सांप्रदायिक' व भूमि-कारणों से पूर्णतः असंबद्ध बताना ऐतिहासिक रूप से अधूरा व गलत विवरण है, क्योंकि इसका मूल आर्थिक शोषण में निहित था।

10

1. Answer: B

Solution: बिरसा मुंडा का उलगुलान आंदोलन (1899-1900) विशेष रूप से 'जल, जंगल, जमीन' के परंपरागत सामुदायिक अधिकारों की रक्षा तथा ब्रिटिश वन-नीति व बाहरी साहूकार-जमींदार वर्ग (जिन्हें 'दिकू' कहा जाता था) के अतिक्रमण के विरुद्ध केंद्रित था। बिरसा मुंडा ने 'खूँटकट्टी' भूमि-व्यवस्था (सामुदायिक स्वामित्व) की पुनर्स्थापना की माँग की तथा एक धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलन भी चलाया। यह आंदोलन आधुनिक भारत में आदिवासी अधिकारों व वन-नीति संबंधी बहस का एक ऐतिहासिक संदर्भ-बिंदु माना जाता है, जबकि शेष विकल्पों में उल्लिखित आंदोलन (कूका, पाबना, नील) मुख्यतः भिन्न प्रकार के मुद्दों (धार्मिक, जमींदारी-विरोधी, बागान-शोषण) से संबंधित थे।

102. Answer: A

Solution: वासुदेव बलवंत फड़के ने महाराष्ट्र में 1879 के आसपास रामोसी व अन्य स्थानीय समुदायों को संगठित कर सशस्त्र विद्रोह द्वारा सीधे ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने का साहसिक प्रयास किया, जिसके कारण उन्हें अक्सर 'भारतीय

सशस्त्र क्रांति के जनक' के रूप में वर्णित किया जाता है — पहले दोनों कथन सत्य हैं। किंतु यह दावा करना कि उनका आंदोलन 'पूर्णतः सफल' रहा तथा उन्होंने एक स्वतंत्र समानांतर सरकार की स्थापना कर ली जो कई वर्षों तक चली, पूर्णतः गलत है — वास्तविकता में फड़के को 1879 में ही गिरफ्तार कर लिया गया, उन पर मुकदमा चला तथा उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई (जहाँ बाद में उनकी मृत्यु हुई); किसी स्वतंत्र समानांतर सरकार की कभी स्थापना नहीं हो सकी। अतः तीसरा कथन गलत है।

103. Answer: B

Solution: 'केसरी' (मराठी) व 'मराठा' (अंग्रेजी) दोनों समाचार-पत्रों की स्थापना 1881 में हुई थी, जिसमें विष्णु शास्त्री चिपलूणकर व गोपाल गणेश आगरकर की भी प्रारंभिक भूमिका थी, किंतु बाल गंगाधर तिलक के संपादकत्व में इन पत्रों ने अपनी सर्वाधिक प्रभावशाली व उग्र राष्ट्रवादी पहचान प्राप्त की। तिलक ने इन पत्रों के माध्यम से ब्रिटिश सरकार की नीतियों की तीखी आलोचना की, जिसके कारण उन पर कई बार राजद्रोह के मुकदमे भी चले (जैसे 1897 व 1908 में) — इन्हीं पत्रों ने तिलक को 'लोकमान्य' की उपाधि दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

104. Answer: D

Solution: महात्मा गांधी ने भारत लौटने के पश्चात कई पत्रों के माध्यम से अपने विचार जनता तक पहुँचाए। 'यंग इंडिया' (1919-1932) अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होता था, जिसके माध्यम से उन्होंने शिक्षित मध्यम वर्ग व अंतरराष्ट्रीय पाठकों को संबोधित किया। 'हरिजन' पत्र विशेष रूप से अस्पृश्यता-निवारण व दलित उत्थान संबंधी विचारों के प्रसार हेतु प्रारंभ किया गया, जो उनके सामाजिक सुधार अभियान का मुखपत्र बना। 'नवजीवन' गुजराती भाषा में प्रकाशित होता था, जिससे गुजराती-भाषी जनसाधारण तक उनके विचार पहुँच सकें। ये तीनों युग्म (भाषा व उद्देश्य सहित) सही सुमेलित हैं, जो गांधीजी की बहुभाषी व बहु-स्तरीय संचार-रणनीति को दर्शाते हैं।

105. Answer: B

Solution: स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विभिन्न नेताओं ने अपने-अपने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जनमत तैयार किया। मौलाना अबुल कलाम आजाद ने 'अल-हिलाल' नामक उर्दू पत्र निकाला, जिसने मुस्लिम समुदाय में राष्ट्रवादी चेतना जगाई। मुहम्मद अली जौहर ने 'कॉमरेड' (अंग्रेजी) व 'हमदर्द' (उर्दू) पत्रों का संपादन किया। एनी बेसेंट ने होमरूल आंदोलन के प्रचार हेतु 'न्यू इंडिया' व

'कॉमनवील' नामक पत्रों का प्रकाशन किया। सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने 'बंगाली' नामक पत्र के माध्यम से बंगाल में राजनीतिक जागृति फैलाई। ये चारों युग्म ऐतिहासिक रूप से सही सुमेलित हैं।

106. Answer: A

Solution: 'हिंद स्वराज' (1909) महात्मा गांधी की एक महत्वपूर्ण वैचारिक रचना है, जो उन्होंने दक्षिण अफ्रीका से इंग्लैंड की समुद्री यात्रा के दौरान मूलतः गुजराती भाषा में लिखी — इसमें उन्होंने पाश्चात्य आधुनिक सभ्यता की आलोचना करते हुए भारतीय स्वराज की अपनी अवधारणा प्रस्तुत की। 'इंडिया डिवाइडेड' राजेंद्र प्रसाद द्वारा विभाजन की पृष्ठभूमि पर लिखी गई एक विश्लेषणात्मक रचना है। 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' जवाहरलाल नेहरू ने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अपनी अहमदनगर किले की नजरबंदी के समय लिखी, जिसमें भारतीय इतिहास व सभ्यता की गहन समीक्षा प्रस्तुत की गई है — ये तीनों कथन सही हैं। किंतु चौथा कथन (कि 'हिंद स्वराज' मूलतः अंग्रेजी में लिखी गई) प्रथम कथन का सीधा खंडन करता है व गलत है — वास्तविकता यह है कि गांधीजी ने इसे गुजराती में लिखा तथा बाद में स्वयं इसका अंग्रेजी अनुवाद किया।

107. Answer: B

Solution: 'अमृत बाजार पत्रिका' का प्रारंभ बंगाली भाषा में हुआ था, किंतु 1878 के वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट (जो केवल भारतीय-भाषा पत्रों पर प्रतिबंध लगाता था) से बचने हेतु इसके संपादकों ने एक चतुर रणनीति अपनाते हुए रातों-रात इसे पूर्णतः अंग्रेजी भाषा में परिवर्तित कर दिया — यह घटना ब्रिटिश प्रेस-नियंत्रण नीति की एक प्रसिद्ध विफलता के रूप में इतिहास में दर्ज है। 'ट्रिब्यून' पत्र की स्थापना दयाल सिंह मजीठिया ने पंजाब में की, जो आज भी प्रकाशित होता है। 'सुधारक' पत्र गोपाल गणेश आगरकर ने महाराष्ट्र में मराठी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में निकाला, जो सामाजिक सुधार पर केंद्रित था। अतः विकल्प (b) का यह दावा कि 'अमृत बाजार पत्रिका' सदैव अंग्रेजी में ही थी, इतिहास की इस प्रसिद्ध घटना के विपरीत होने के कारण गलत है।

108. Answer: C

Solution: दादाभाई नौरोजी ने 'Poverty and Un-British Rule in India' तथा इसकी पूर्ववर्ती कृति 'Poverty of India' (1876) लिखी, जिसमें उन्होंने निकास सिद्धांत को सांख्यिकीय आधार पर प्रस्तुत किया। रमेशचंद्र दत्त ने 'Economic History of India' के माध्यम से इस विश्लेषण को और विस्तार दिया। कृपलानी जैसे

इतिहासकारों ने राष्ट्रवादी आंदोलन के विकास पर विश्लेषणात्मक ग्रंथ लिखे — ये तीनों (a, b, d) सही युग्म हैं। किंतु 'पॉवर्टी ऑफ इंडिया' के वास्तविक लेखक दादाभाई नौरोजी हैं, बाल गंगाधर तिलक नहीं — तिलक मुख्यतः अपने राजनीतिक पत्रकारिता ('केसरी'), दार्शनिक ग्रंथ ('गीता रहस्य') व खगोलीय-ऐतिहासिक शोध ('ओरायन') के लिए जाने जाते हैं, अर्थशास्त्र पर किसी मौलिक ग्रंथ-रचना के लिए नहीं। अतः विकल्प (c) असंगत युग्म है।

109. Answer: B

Solution: 'बंगाली' पत्रिका के संपादक सुरेंद्रनाथ बनर्जी थे, जिन्होंने इसके माध्यम से बंगाल में राजनीतिक चेतना फैलाई। 'द हिंदू' समाचार-पत्र की स्थापना 1878 में मद्रास में जी. सुब्रमण्यम अय्यर व अन्य साथियों ने की, जो आज भी भारत के प्रमुख अंग्रेजी दैनिकों में गिना जाता है। 'इंदु प्रकाश' पत्रिका बंबई से प्रकाशित होती थी तथा महादेव गोविंद रानाडे जैसे सुधारवादी विचारकों से इसका घनिष्ठ संबंध रहा। ये तीनों युग्म (पत्रिका, संपादक/संस्थापक व क्षेत्र सहित) सही सुमेलित हैं, जो विभिन्न क्षेत्रीय भाषा-क्षेत्रों में पत्रकारिता के माध्यम से राजनीतिक जागृति के प्रसार को दर्शाते हैं।

110. Answer: D

Solution: बाल गंगाधर तिलक ने अपनी विख्यात रचना 'गीता रहस्य' मांडले जेल (बर्मा, वर्तमान म्यांमार) में अपनी छह वर्षीय नजरबंदी (1908-14) के दौरान लिखी, जिसमें उन्होंने भगवद्गीता की 'कर्मयोग' आधारित व्याख्या प्रस्तुत की — यह ग्रंथ मूलतः मराठी भाषा में लिखा गया था, ताकि यह सीधे भारतीय, विशेषतः मराठी-भाषी जनमानस तक पहुँच सके। उनकी दूसरी प्रमुख विद्वत्पूर्ण रचना 'ओरायन' (The Orion) अंग्रेजी में थी, जिसमें उन्होंने खगोलीय गणनाओं के आधार पर वेदों की अत्यंत प्राचीनता सिद्ध करने का अकादमिक प्रयास किया — यह पश्चिमी विद्वानों को भी संबोधित थी। अतः यह कहना कि 'दोनों रचनाएँ मूलतः अंग्रेजी में लिखी गईं व भारतीय पाठकों हेतु नहीं थीं' गलत है, क्योंकि 'गीता रहस्य' स्पष्ट रूप से मराठी में व भारतीय पाठकों हेतु रचित थी।

11

1. Answer: C

Solution: रवींद्रनाथ टैगोर की 'गीतांजलि' (जिसके लिए उन्हें 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला — एशिया के प्रथम नोबेल विजेता) व 'घरे-बाइरे' (स्वदेशी आंदोलन की जटिलताओं पर केंद्रित उपन्यास) उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। शरतचंद्र चट्टोपाध्याय का

उपन्यास 'पथेर दाबी' क्रांतिकारी विचारों से युक्त था, जिस पर ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंध लगाया था। प्रेमचंद हिंदी-उर्दू के महानतम यथार्थवादी उपन्यासकारों में गिने जाते हैं, जिनकी रचनाएँ 'गोदान' व 'रंगभूमि' किसान-जीवन के मार्मिक चित्रण हेतु प्रसिद्ध हैं — ये तीनों (a, b, d) सही हैं। किंतु प्रेमचंद के प्रारंभिक कहानी-संग्रह 'सोझ-ए-वतन' (1908) पर ब्रिटिश सरकार ने वास्तव में राष्ट्रवादी-देशभक्तिपूर्ण सामग्री होने के कारण प्रतिबंध लगाया था तथा इसकी सभी प्रतियाँ जब्त कर सार्वजनिक रूप से जला दी गई थीं — इसे 'पूर्ण रूप से गैर-राजनीतिक' कहना ऐतिहासिक रूप से गलत है, यही घटना उनके लेखक-नाम 'नवाब राय' से 'प्रेमचंद' अपनाने का भी कारण बनी।

112. Answer: D

Solution: स्वतंत्रता-पूर्व भारत में कई पत्रिकाओं ने राजनीतिक जनमत-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'हिंदुस्तान रिव्यू' अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होती थी और राष्ट्रीय राजनीतिक विमर्श में योगदान देती थी। 'इंडियन मिरर' का संबंध देवेन्द्रनाथ टैगोर व केशवचंद्र सेन जैसे ब्रह्म समाज के प्रमुख नेताओं से रहा, जो सामाजिक-धार्मिक सुधार व राजनीतिक जागृति दोनों पर केंद्रित था। 'ट्रिब्यून' पंजाब से प्रकाशित होने वाला एक प्रमुख अंग्रेजी पत्र था, जिसने क्षेत्रीय राजनीतिक चेतना फैलाई। ये तीनों पत्रिकाएँ भिन्न-भिन्न रूपों व क्षेत्रों में भारतीय राजनीतिक जनमत-निर्माण में योगदान देने वाली महत्वपूर्ण संस्थाएँ रहीं।

113. Answer: B

Solution: 'युगांतर' बंगाल के क्रांतिकारियों (बारींद्र घोष व अन्य अनुशीलन समिति सदस्यों) द्वारा प्रकाशित एक बांग्ला भाषा का पत्र था, जो खुले तौर पर सशस्त्र क्रांति व हिंसक प्रतिरोध का समर्थन करता था। 'वंदे मातरम्' नामक पत्र पेरिस से मैडम भीकाजी कामा व श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे प्रवासी क्रांतिकारियों द्वारा प्रकाशित होता था, जो यूरोप में बैठकर भारतीय क्रांतिकारी विचारों का प्रसार करते थे। 'तलवार' भी इसी पेरिस-आधारित भारतीय क्रांतिकारी नेटवर्क का एक पत्र था — ये तीनों कथन सही हैं। किंतु चौथा कथन (कि 'युगांतर' पूर्णतः अहिंसात्मक था) पूर्णतः विपरीत व गलत है — यह पत्र वास्तव में सशस्त्र क्रांति की स्पष्ट व मुखर वकालत करता था, जो इसे 'यंग इंडिया' या 'हरिजन' जैसे गांधीवादी पत्रों से मौलिक रूप से भिन्न बनाता है।

114. Answer: D

Solution: 'इंडिया विस फ्रीडम' मौलाना अबुल कलाम आजाद की आत्मकथात्मक रचना है, जिसमें उन्होंने भारत की स्वतंत्रता व विभाजन की प्रक्रिया पर अपने प्रत्यक्ष अनुभवों व दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया — यह पुस्तक विशेष रूप से विभाजन की अनिवार्यता पर सवाल उठाने व कांग्रेस-मुस्लिम लीग वार्ताओं के आंतरिक विवरणों के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है। आजाद कांग्रेस के दीर्घकालिक अध्यक्ष (1940-46) रहे तथा उन्होंने सदैव अखंड भारत व हिंदू-मुस्लिम एकता की वकालत की, जिसका प्रतिबिंब इस पुस्तक में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

115. Answer: B

Solution: सुभाष चंद्र बोस ने 'द इंडियन स्ट्रगल' नामक अपनी रचना में 1920 से 1942 तक के भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष की घटनाओं का विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत किया, जिस पर ब्रिटिश सरकार ने भारत में प्रकाशन-प्रतिबंध लगा दिया था क्योंकि यह ब्रिटिश शासन की तीखी आलोचना प्रस्तुत करती थी — ये दोनों कथन सत्य हैं। किंतु इस पुस्तक में सुभाष चंद्र बोस ने गांधीवादी अहिंसात्मक रणनीति की आलोचनात्मक समीक्षा भी की तथा तर्क दिया कि केवल अहिंसा पर्याप्त नहीं है, अधिक सक्रिय व यहाँ तक कि सशस्त्र संघर्ष की भी आवश्यकता हो सकती है — यही विचारधारा आगे चलकर आजाद हिंद फौज के गठन तक ले गई। अतः तीसरा कथन, जो गांधीवाद की 'पूर्ण व निर्विवाद प्रशंसा' का दावा करता है, गलत है।

116. Answer: A

Solution: उन्नीसवीं सदी के प्रारंभिक दशकों में राजा राममोहन राय एक बहुभाषी पत्रकार भी थे, जिन्होंने 'संवाद कौमुदी' (1821) नामक बांग्ला साप्ताहिक पत्र का संपादन किया, जो सामाजिक सुधार व राजनीतिक मुद्दों पर केंद्रित था। उन्होंने 'मिरात-उल-अखबार' नामक फारसी भाषा का पत्र भी निकाला, जो तत्कालीन फारसी-जानने वाले शिक्षित वर्ग को संबोधित था। 'समाचार दर्पण' श्रीरामपुर के ईसाई मिशनरियों द्वारा बांग्ला भाषा में प्रकाशित होने वाला पत्र था — ये तीनों (b, c, d) सही सुमेलित हैं। किंतु विकल्प (a) में यह दावा कि 'संवाद कौमुदी' पूर्णतः अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होता था व इसमें बांग्ला का कोई प्रयोग नहीं था, तथ्यात्मक रूप से पूर्णतः गलत है — यह मूलतः व प्रमुखतः बांग्ला भाषा का पत्र था।

117. Answer: D

Solution: जवाहरलाल नेहरू की 'ग्लिम्प्सेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री' उनकी पुत्री इंदिरा (बाद की इंदिरा गांधी) को जेल से लिखे गए पत्रों

का संकलन है, जिसमें विश्व-इतिहास की व्यापक समीक्षा प्रस्तुत की गई है — यह कथन सत्य है। एनी बेसेंट की 'हाउ इंडिया रांग फॉर सेल्फ-गवर्नमेंट' होमरूल आंदोलन से संबंधित विचारों पर आधारित है — यह भी सत्य है। बी.आर. आंबेडकर की 'एनिहिलेशन ऑफ कास्ट' जाति-प्रथा के मूल उन्मूलन पर केंद्रित एक क्रांतिकारी वैचारिक ग्रंथ है — यह भी सही युग्म है। किंतु यह दावा करना कि नेहरू ने 'ग्लिम्प्सेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री' दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी के साथ कारावास के दौरान लिखी, ऐतिहासिक रूप से असंभव है — नेहरू कभी दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी के साथ कारावास में नहीं रहे; यह पुस्तक उन्होंने भारत की विभिन्न जेलों (मुख्यतः नैनी सेंट्रल जेल, इलाहाबाद) में अपनी नजरबंदी के दौरान 1930-33 के मध्य लिखी थी। अतः चौथा कथन गलत है।

118. Answer: C

Solution: गांधीजी ने भारतीय समाज में शताब्दियों से व्याप्त अस्पृश्यता की कुप्रथा को समाप्त करने हेतु 1932 में 'हरिजन सेवक संघ' की स्थापना की तथा 'हरिजन' नामक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया — 'हरिजन' शब्द (ईश्वर की संतान) का प्रयोग उन्होंने तथाकथित 'अछूत' जातियों के लिए एक सम्मानजनक संबोधन के रूप में किया, यद्यपि यह शब्द बाद में विवादास्पद भी माना गया। इस अभियान के माध्यम से उन्होंने दलितों के लिए मंदिर-प्रवेश, शिक्षा व सामाजिक समानता जैसे मुद्दों पर व्यापक जनजागृति फैलाई तथा पूना पैक्ट (1932) के पश्चात इस दिशा में और अधिक सक्रिय प्रयास किए।

119. Answer: D

Solution: दीनबंधु मित्र ने 'नील दर्पण' नामक नाटक की रचना बांग्ला भाषा में की, जो नील विद्रोह पर आधारित है — इसके अंग्रेजी अनुवाद पर, जो रेवरेंड जेम्स लॉंग ने किया था, मानहानि का मुकदमा चला व उन्हें जुर्माना व कारावास भी भुगतना पड़ा, जो प्रेस-स्वतंत्रता के इतिहास की एक प्रसिद्ध घटना है। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के 'आनंदमठ' से 'वंदे मातरम्' गीत का उद्भव हुआ। सुनीति कुमार घोष ने 20वीं सदी में 'भारत में अंग्रेजी राज' नामक मार्क्सवादी दृष्टिकोण से औपनिवेशिक शासन का विश्लेषण प्रस्तुत किया — ये तीनों कथन सही हैं। किंतु चौथा कथन (कि 'नील दर्पण' मूलतः अंग्रेजी में लिखा गया) प्रथम कथन का सीधा खंडन करता है — वास्तविकता यह है कि यह मूलतः बांग्ला में लिखा गया, अंग्रेजी अनुवाद बाद में हुआ।

120. Answer: C

Solution: महात्मा गांधी की विश्वप्रसिद्ध आत्मकथा 'माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ' (हिंदी में 'सत्य के प्रयोग') मूलतः गुजराती भाषा में लिखी गई थी, जिसमें उन्होंने अपने बचपन, दक्षिण अफ्रीका के अनुभवों व सत्याग्रह-दर्शन के विकास का ईमानदार व आत्मविश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत किया। यह आत्मकथा भारतीय राजनीतिक साहित्य की सर्वाधिक प्रभावशाली व अनुवादित रचनाओं में गिनी जाती है, जिसने विश्व भर में गांधीवादी दर्शन के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

12

1. Answer: B

Solution: भारत की प्रथम यात्री रेल लाइन 16 अप्रैल 1853 को बंबई (मुंबई) से थाणे के मध्य 34 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए चली, जो लॉर्ड डलहौजी (गवर्नर जनरल, 1848-56) के कार्यकाल की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। डलहौजी ने रेलवे के अतिरिक्त टेलीग्राफ व डाक-व्यवस्था के विस्तार में भी अग्रणी भूमिका निभाई, जिन्हें सामूहिक रूप से भारत में 'आधुनिकीकरण की अवसंरचना' का प्रारंभ माना जाता है — यद्यपि इन सुविधाओं का मूल उद्देश्य मुख्यतः प्रशासनिक व सैन्य-सुरक्षा तथा कच्चे माल के बंदरगाहों तक परिवहन को सुगम बनाना था, न कि भारतीय जनता का कल्याण।

122. Answer: C

Solution: सत्येंद्रनाथ टैगोर (रवींद्रनाथ टैगोर के बड़े भाई) 1863 में भारतीय सिविल सेवा (ICS) परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले प्रथम भारतीय बने, जिन्हें इंग्लैंड जाकर यह अत्यंत कठिन परीक्षा (जिसमें भारतीयों के लिए कई प्रतिकूल शर्तें रखी गई थीं, जैसे कम आयु-सीमा व अपरिचित सांस्कृतिक विषय) पास करनी पड़ी। यह उपलब्धि उस समय के भारतीय शिक्षित वर्ग के लिए गौरव व प्रेरणा का विषय बनी, यद्यपि प्रशासनिक सेवाओं में भारतीयों का प्रतिनिधित्व अगले कई दशकों तक अत्यंत सीमित ही रहा।

123. Answer: A

Solution: वुड्स डिस्पैच (1854), जिसे तत्कालीन भारत-नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष चार्ल्स वुड ने प्रस्तुत किया, को इसके व्यापक व दूरगामी प्रभाव के कारण 'भारतीय आधुनिक शिक्षा का मैग्राकार्टा' कहा जाता है। इसमें शिक्षा-विभाग की स्थापना, कलकत्ता-बंबई-मद्रास में विश्वविद्यालयों की स्थापना (जो 1857 में साकार हुई) व शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों के गठन का सुझाव दिया गया। इसकी सबसे महत्वपूर्ण नीतिगत उपलब्धि यह थी कि इसने पूर्व

की 'डाउनवर्ड फिल्ट्रेशन थियरी' (जिसके अनुसार केवल उच्च वर्ग को शिक्षित कर ज्ञान को स्वतः निम्न वर्गों तक 'छनकर' पहुँचने दिया जाए) की सीमाओं को स्वीकार करते हुए व्यापक जन-शिक्षा (Mass/Vernacular Education) की आवश्यकता पर बल दिया, यद्यपि व्यवहार में इसका पूर्ण क्रियान्वयन सीमित ही रहा। अतः सभी कथन सत्य हैं।

124. Answer: D

Solution: औपनिवेशिक भारत में शिक्षा-नीति का विकासक्रम इस प्रकार रहा: मैकाले मिनट (1835) ने अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने व 'डाउनवर्ड फिल्ट्रेशन थियरी' की नींव रखी; वुड्स डिस्पैच (1854) ने शिक्षा-प्रशासन को व्यवस्थित व विस्तारित रूप दिया; हंटर आयोग (1882) ने प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा पर विशेष ध्यान केंद्रित किया; तथा सैडलर आयोग (1917-19) ने विश्वविद्यालय-शिक्षा में सुधार व कलकत्ता विश्वविद्यालय की संरचना की विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत की। यह कालक्रम 1835→1854→1882→1917 शिक्षा-नीति के क्रमिक विकास व विस्तार को दर्शाता है, जो प्रारंभिक अभिजात्य-केंद्रित नीति से धीरे-धीरे अधिक व्यापक व संस्थागत ढाँचे की ओर बढ़ा।

125. Answer: A

Solution: फर्ग्युसन कॉलेज की स्थापना 1885 में पुणे (महाराष्ट्र) में डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी के तत्वावधान में हुई, जिसके प्रमुख प्रवर्तक गोपाल गणेश आगरकर, बाल गंगाधर तिलक व विष्णु शास्त्री चिपलूणकर थे — यह उच्च शिक्षा में भारतीय पहल का एक उल्लेखनीय उदाहरण है। शांतिनिकेतन की स्थापना रवींद्रनाथ टैगोर ने की, तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) की स्थापना मदन मोहन मालवीय के अथक प्रयासों से 1916 में हुई — ये दोनों युग सही हैं। किंतु विकल्प

(a) में फर्ग्युसन कॉलेज को सर सैयद अहमद खाँ द्वारा अलीगढ़ में स्थापित बताना पूर्णतः गलत है — सर सैयद अहमद खाँ का वास्तविक संबंध मुहम्मदन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज (अलीगढ़) से है, फर्ग्युसन कॉलेज (जो एक भिन्न भौगोलिक क्षेत्र व भिन्न संस्थापकों द्वारा स्थापित हिंदू-सुधारवादी शैक्षणिक पहल थी) से नहीं।

126. Answer: B

Solution: 1919 के मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (भारत सरकार अधिनियम, 1919) ने प्रांतीय स्तर पर 'द्वैध शासन' (Dyarchy) की नवीन व्यवस्था लागू की, जिसके अंतर्गत प्रशासनिक विषयों को दो

श्रेणियों में बाँटा गया — 'हस्तांतरित विषय' (जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, स्थानीय स्वशासन), जिन्हें भारतीय मंत्रियों के अधीन रखा गया, तथा 'आरक्षित विषय' (जैसे वित्त, पुलिस, राजस्व), जो गवर्नर व उसकी कार्यकारी परिषद के प्रत्यक्ष नियंत्रण में रहे — यह पहला कथन पूर्णतः सत्य व स्वतः-स्पष्ट है। 1935 के भारत सरकार अधिनियम ने इस प्रांतीय द्वैध शासन को समाप्त कर प्रांतों को अधिक स्वायत्तता ('प्रांतीय स्वायत्तता') प्रदान की, तथा सैद्धांतिक रूप से एक नई द्वैध व्यवस्था केंद्र में प्रस्तावित की (जो अखिल भारतीय संघ की असफलता के कारण व्यवहार में कभी लागू नहीं हो सकी) — यह विवरण जटिल व आंशिक रूप से भ्रामक हो सकता है, अतः इस प्रश्न में केवल कथन 1 को निर्विवाद रूप से सही माना गया है।

127. Answer: A

Solution: साइमन कमीशन (1927), जिसे भारतीय संवैधानिक सुधारों की समीक्षा हेतु गठित किया गया था, का भारतीयों ने व्यापक बहिष्कार किया, क्योंकि इस सात-सदस्यीय आयोग में एक भी भारतीय सदस्य सम्मिलित नहीं किया गया था — यह भारतीयों के आत्म-सम्मान पर सीधा आघात माना गया, जिसके विरोध में 'साइमन गो बैक' के नारे लगे। लाहौर में इसी विरोध-प्रदर्शन के दौरान वयोवृद्ध नेता लाला लाजपत राय पर पुलिस अधीक्षक स्कॉट के आदेश पर बर्बर लाठीचार्ज हुआ, जिसमें वे गंभीर रूप से घायल हुए तथा कुछ सप्ताह बाद उनकी मृत्यु हो गई। इसी घटना के प्रतिशोध में भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव ने पुलिस अधिकारी जे.पी. सांडर्स की हत्या की, यद्यपि वास्तविक लक्ष्य स्कॉट था और सांडर्स को गलती से निशाना बनाया गया। अतः सभी कथन ऐतिहासिक रूप से सत्यापित हैं।

128. Answer: B

Solution: प्रथम गोलमेज सम्मेलन (नवंबर 1930-जनवरी 1931) में कांग्रेस ने भाग नहीं लिया, क्योंकि उस समय सविनय अवज्ञा आंदोलन सक्रिय रूप से चल रहा था तथा गांधीजी सहित प्रमुख नेता जेल में थे — यह पहला कथन सत्य है। गांधी-इरविन समझौते (मार्च 1931) के पश्चात गांधीजी ने कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (सितंबर-दिसंबर 1931) में भाग लिया — यह भी सत्य है। तृतीय गोलमेज सम्मेलन (नवंबर-दिसंबर 1932) में कांग्रेस पुनः अनुपस्थित रही, क्योंकि तब तक सविनय अवज्ञा आंदोलन का दूसरा चरण प्रारंभ हो चुका था — यह भी सत्य है। किंतु सांप्रदायिक पंचाट (Communal Award) की घोषणा

वास्तव में अगस्त 1932 में हुई, अर्थात् द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931) के समापन के बाद, तथा पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर सितंबर 1932 में हुए — ये घटनाएँ द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के दौरान नहीं, बल्कि उसके पश्चात की कालावधि में घटित हुईं। अतः विकल्प (b) में समय-संबंधी अशुद्धि है, जो इस प्रश्न का उत्तर है।

129. Answer: C

Solution: पूना पैक्ट (सितंबर 1932) महात्मा गांधी व बी.आर. आंबेडकर के मध्य हुआ एक ऐतिहासिक समझौता था — यह पहला कथन सत्य है। इसके अंतर्गत सांप्रदायिक पंचाट द्वारा प्रस्तावित दलित वर्गों की पृथक निर्वाचिका को त्यागकर, संयुक्त निर्वाचिका के भीतर ही उनके लिए आरक्षित सीटों की व्यवस्था स्वीकार की गई (जिससे आरक्षित सीटों की संख्या पहले से बढ़ भी गई) — यह भी सत्य है। यह समझौता गांधीजी द्वारा यरवदा जेल (पुणे) में सांप्रदायिक पंचाट के विरुद्ध किए गए आमरण अनशन के दबाव में संभव हुआ, क्योंकि गांधीजी का मानना था कि पृथक निर्वाचिका हिंदू समाज को स्थायी रूप से विभाजित कर देगी — यह भी सत्य है। अतः सभी कथन सही हैं।

130. Answer: A

Solution: भारत छोड़ो आंदोलन (अगस्त 1942) क्रिप्स मिशन की विफलता के तत्काल पश्चात, जब भारतीय नेतृत्व ने महसूस किया कि ब्रिटेन तत्काल सत्ता-हस्तांतरण हेतु गंभीर नहीं है, प्रारंभ हुआ — यह पहला कथन सत्य है। आंदोलन की घोषणा के कुछ ही घंटों के भीतर गांधी, नेहरू, पटेल सहित लगभग समस्त शीर्ष नेतृत्व को गिरफ्तार कर लिया गया, जिससे आंदोलन का नेतृत्व स्वाभाविक रूप से जयप्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली, राम मनोहर लोहिया जैसे युवा व स्थानीय कार्यकर्ताओं के हाथों में चला गया, जिन्होंने भूमिगत रहकर आंदोलन को जीवित रखा — यह भी सत्य है। इस आंदोलन के दौरान बलिया (उत्तर प्रदेश, चित्तू पांडे के नेतृत्व में), तामलुक (बंगाल) व सतारा (महाराष्ट्र) जैसे कुछ क्षेत्रों में अस्थायी रूप से स्थानीय स्वतंत्र प्रशासन ('समानांतर सरकार' या 'प्रति सरकार') भी स्थापित हुए, जो ब्रिटिश शासन को स्थानीय स्तर पर चुनौती देते रहे — यह भी सत्य है।

13

1. Answer: B

Solution: क्रिप्स मिशन (मार्च 1942, स्टैफर्ड क्रिप्स द्वारा प्रस्तुत) की विफलता के कई कारण थे। कांग्रेस ने युद्धोत्तर डोमिनियन स्टेट्स के प्रस्ताव को अपर्याप्त माना, क्योंकि वे तत्काल पूर्ण

स्वतंत्रता व वर्तमान में ही एक राष्ट्रीय सरकार चाहते थे, भविष्य के अस्पष्ट वादे नहीं — गांधीजी ने इस प्रस्ताव की तीखी आलोचना करते हुए इसे 'एक डूबते बैक पर उत्तर-तिथित चेक' कहा, जो इस प्रस्ताव की अव्यावहारिकता को व्यंग्यात्मक ढंग से उजागर करता है। दूसरी ओर मुस्लिम लीग ने इस प्रस्ताव में दिए गए प्रांतों के 'पृथक होने के अधिकार' (Right to Secede) को भी अपर्याप्त माना, क्योंकि इसमें पाकिस्तान की स्पष्ट व निश्चित स्वीकृति नहीं थी, केवल एक अस्पष्ट संभावना थी। इस प्रकार यह मिशन दोनों प्रमुख पक्षों — कांग्रेस व मुस्लिम लीग — दोनों को ही असंतुष्ट कर पाया, जो इसकी पूर्ण विफलता का कारण बना।

132. Answer: A

Solution: कैबिनेट मिशन योजना (1946) ने एक त्रि-स्तरीय संघीय ढाँचे (केंद्र, प्रांतों के समूह, व्यक्तिगत प्रांत) का प्रस्ताव रखा तथा मुस्लिम लीग की पृथक पाकिस्तान की माँग को सीधे अस्वीकार करते हुए एक संयुक्त भारत के भीतर ही समाधान खोजने का प्रयास किया — यह पहला कथन सत्य है। माउंटबेटन योजना/3 जून योजना (1947) ने अंततः भारत के विभाजन व दो पृथक डोमिनियनों — भारत व पाकिस्तान — के सृजन की रूपरेखा तय की — यह दूसरा कथन भी सत्य है। वेवेल योजना/शिमला सम्मेलन (जून-जुलाई 1945) मुस्लिम लीग व कांग्रेस के मध्य कार्यकारी परिषद में समान (या 'पैरिटी') प्रतिनिधित्व के मुद्दे पर गहरे मतभेद के कारण असफल रहा, विशेषतः जिन्ना के इस आग्रह के कारण कि केवल मुस्लिम लीग ही मुस्लिम प्रतिनिधियों को नामित कर सकती है — यह तीसरा कथन भी सत्य है। किंतु चौथा कथन पूर्णतः गलत है — कैबिनेट मिशन योजना की सर्वाधिक ऐतिहासिक देन यही थी कि इसने भारतीय संविधान सभा के गठन व इसकी अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रक्रिया (प्रांतीय विधानसभाओं के माध्यम से) का स्पष्ट व विस्तृत प्रावधान किया, जिसके आधार पर ही वर्तमान भारतीय संविधान का निर्माण हुआ।

133. Answer: B

Solution: सुभाष चंद्र बोस ने रासबिहारी बोस द्वारा पूर्व-निर्मित प्रारंभिक ढाँचे के आधार पर 1943 में सिंगापुर में आजाद हिंद फौज का पुनर्गठन किया तथा इसी वर्ष 'आजाद हिंद सरकार' (अस्थायी स्वतंत्र भारत सरकार) की घोषणा भी की — ये दोनों कथन सत्य हैं। इस सेना में 'रानी झॉंसी रेजिमेंट' नामक एक अनूठी महिला ब्रिगेड भी सम्मिलित थी, जिसका नेतृत्व कैप्टन लक्ष्मी सहगल (बाद में लक्ष्मी सहगल के नाम से प्रसिद्ध) ने किया — यह भी सत्य है। किंतु

यह दावा करना कि युद्धोपरांत हुए INA मुकदमों (लाल किला ट्रायल, 1945-46, जिसमें शाहनवाज खाँ, गुरबख्श सिंह ढिल्लों व प्रेम सहगल पर देशद्रोह का मुकदमा चला) के प्रति भारतीय जनमानस 'उदासीन' रहा, पूर्णतः गलत है — वस्तुतः इन मुकदमों ने संपूर्ण भारत में अभूतपूर्व राष्ट्रव्यापी सहानुभूति व आक्रोश उत्पन्न किया, जिसने ब्रिटिश शासन के प्रति सैन्य-बलों की निष्ठा पर भी प्रश्न खड़े किए तथा स्वतंत्रता की प्रक्रिया को तीव्र करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

134. Answer: C

Solution: फरवरी 1946 में रॉयल इंडियन नेवी (RIN) के भारतीय नाविकों ने बंबई में भेदभावपूर्ण व्यवहार, निम्न वेतन तथा राष्ट्रवादी भावना से प्रेरित होकर विद्रोह किया, जो शीघ्र ही कराची, कलकत्ता व अन्य नौसैनिक अड्डों तक फैल गया, जिसमें लगभग 20,000 नाविकों ने भाग लिया — यह पहला कथन सत्य है। इस विद्रोह का ऐतिहासिक महत्व यह है कि इसने ब्रिटिश सरकार को यह स्पष्ट संदेश दिया कि अब भारतीय सशस्त्र बलों (जो अब तक ब्रिटिश शासन का सबसे विश्वसनीय स्तंभ माने जाते थे) की निष्ठा पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता — यह असुरक्षा-बोध, INA मुकदमों की प्रतिक्रिया के साथ मिलकर, 1947 में शीघ्र सत्ता-हस्तांतरण के ब्रिटिश निर्णय के पीछे के महत्वपूर्ण रणनीतिक कारकों में गिना जाता है। अतः दोनों कथन सत्य हैं।

135. Answer: A

Solution: भारतीय राष्ट्रवाद का उदय किसी एक कारक का परिणाम नहीं था, बल्कि भौतिक, प्रशासनिक तथा वैचारिक-सांस्कृतिक कारकों की संयुक्त प्रक्रिया थी।

1. रेलवे एवं टेलीग्राफ ☒ — विभिन्न क्षेत्रों के बीच आवागमन, संपर्क और सूचना के तीव्र प्रसार को संभव बनाया।
2. आधुनिक शिक्षा एवं पाश्चात्य विचार ☒ — स्वतंत्रता, समानता, राष्ट्रवाद एवं लोकतंत्र जैसे विचारों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
3. प्रेस एवं समाचार-पत्र ☒ — राष्ट्रीय मुद्दों पर जनमत निर्माण तथा राजनीतिक चेतना के प्रसार का प्रमुख माध्यम बने।
4. प्रशासनिक एवं राजनीतिक एकीकरण ☒ — ब्रिटिश शासन ने अनजाने में भारत के विशाल भूभाग को एक प्रशासनिक ढाँचे में जोड़ा, जिससे अखिल भारतीय चेतना के विकास को आधार मिला। अतः 1 और 4 ने संपर्क/एकीकरण की संरचनात्मक परिस्थितियाँ

विकसित कीं, जबकि 2 और 3 ने राष्ट्रीय विचारों एवं राजनीतिक चेतना के प्रसार को गति दी।

136. Answer: D

Solution: हंटर कमीशन (1882, विलियम हंटर की अध्यक्षता में) ने विशेष रूप से प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के विस्तार तथा इसमें निजी क्षेत्र/मिशनरी संस्थाओं की भागीदारी बढ़ाने पर बल दिया। वेल्बी कमीशन (1895) का गठन भारत में सैन्य व असैन्य व्यय के मध्य वित्तीय दायित्वों के उचित वितरण की जाँच हेतु हुआ, जिसमें दादाभाई नौरोजी को भी एक सदस्य के रूप में शामिल किया गया — यह भारतीय राष्ट्रवादी आर्थिक चिंतन (जैसे सैन्य-व्यय के अनुचित बोझ पर आपत्ति) को औपचारिक मान्यता देने वाला एक महत्वपूर्ण कदम था। एचिंसन कमेटी (1886) ने सिविल सेवाओं में भारतीयों की भागीदारी बढ़ाने संबंधी सुझाव दिए — ये तीनों (1, 2, 4) सही हैं। किंतु तीसरा कथन, जिसमें 'इल्बर्ट बिल' को एक पृथक 'वन-संरक्षण समिति' से जोड़ा गया है, पूर्णतः काल्पनिक व भ्रामक है — इल्बर्ट बिल (1883) वास्तव में एक न्यायिक विधेयक था, जिसका उद्देश्य भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीय अपराधियों पर मुकदमा चलाने का अधिकार देना था, वन-नीति से इसका कोई संबंध नहीं था।

137. Answer: B

Solution: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के कई प्रमुख नेताओं को जनता ने स्नेहपूर्ण उपाधियाँ प्रदान कीं, जो उनके व्यक्तित्व व योगदान को दर्शाती हैं। बाल गंगाधर तिलक को 'लोकमान्य' (जनता द्वारा मान्यता-प्राप्त नेता) कहा गया, जो उनकी व्यापक जन-स्वीकार्यता को दर्शाता है। मदन मोहन मालवीय को उनकी विद्वता व शैक्षणिक योगदान (BHU की स्थापना सहित) के कारण 'महामना' (महान आत्मा) कहा गया। सुभाष चंद्र बोस को उनके साहसिक व करिश्माई नेतृत्व के कारण 'नेताजी' की उपाधि से सम्मानित किया गया, जो आज भी उनके साथ पर्यायवाची रूप से जुड़ी है। ये तीनों उपाधियाँ ऐतिहासिक रूप से सही सुमेलित हैं।

138. Answer: A

Solution: सितंबर 1946 में गठित अंतरिम सरकार में जवाहरलाल नेहरू 'कार्यकारी परिषद के उपाध्यक्ष' (Vice President of the Executive Council) के पद पर नियुक्त हुए — यद्यपि वायसराय नाममात्र का अध्यक्ष था, व्यवहार में नेहरू की भूमिका वस्तुतः प्रधानमंत्री के समकक्ष थी — यह पहला कथन सत्य है। मुस्लिम लीग ने प्रारंभ में इस अंतरिम सरकार का बहिष्कार किया तथा

इसके विरोध में 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' (16 अगस्त 1946) मनाया, जिसके पश्चात व्यापक साम्प्रदायिक हिंसा भड़की; बाद में अक्टूबर 1946 में मुस्लिम लीग इस सरकार में शामिल हुई — यह दूसरा कथन भी सत्य है। किंतु मुस्लिम लीग के शामिल होने के पश्चात भी संबंध सौहार्दपूर्ण नहीं रहे — मुस्लिम लीग ने सरकार के भीतर रहते हुए भी असहयोगात्मक रवैया अपनाया तथा वित्त मंत्रालय (लियाकत अली ख़ाँ के अधीन) जैसे महत्वपूर्ण विभागों का उपयोग कांग्रेस-नेतृत्व की नीतियों में बाधा उत्पन्न करने हेतु किया, जिससे गंभीर प्रशासनिक गतिरोध उत्पन्न हुआ। अतः तीसरा कथन गलत है।

139. Answer: C

Solution: स्वराज पार्टी की स्थापना दिसंबर 1922 में चित्तरंजन दास (देशबंधु) व मोतीलाल नेहरू ने की, जिनका उद्देश्य असहयोग की पूर्ण वापसी के बजाय विधान परिषदों में प्रवेश कर 'भीतर से विरोध' (Council Entry/Obstructionism) की रणनीति अपनाना था — यह पार्टी दिसंबर 1922 के गया कांग्रेस अधिवेशन में परिषद-प्रवेश के प्रश्न पर हुए गहरे आंतरिक मतभेद के परिणामस्वरूप बनी। किंतु यह दावा करना कि इसकी स्थापना गांधीजी की 'पूर्ण सहमति व सक्रिय समर्थन' से हुई तथा वे स्वयं परिषद-प्रवेश के पक्ष में थे, ऐतिहासिक रूप से गलत है — गांधीजी वास्तव में परिषद-प्रवेश के प्रबल विरोधी थे, क्योंकि यह उनकी असहयोग की मूल भावना (ब्रिटिश संस्थाओं का पूर्ण बहिष्कार) के विपरीत था; स्वराज पार्टी का गठन वस्तुतः इसी वैचारिक मतभेद के फलस्वरूप कांग्रेस के भीतर एक पृथक गुट के रूप में हुआ, गांधीजी की सहमति से नहीं।

140. Answer: D

Solution: एका आंदोलन (1921-22) उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में किसानों द्वारा असहयोग आंदोलन के साथ जुड़कर चलाया गया आंदोलन था। बारदोली सत्याग्रह (1928, गुजरात) का नेतृत्व वल्लभभाई पटेल ने किया, जो भू-राजस्व में अनुचित वृद्धि के विरुद्ध था तथा इसकी सफलता के पश्चात पटेल को किसानों द्वारा 'सरदार' की उपाधि दी गई। तेभागा आंदोलन (1946-47, बंगाल) बटाईदार किसानों द्वारा चलाया गया आंदोलन था, जिसमें उनकी माँग थी कि उपज का दो-तिहाई (तेभाग) भाग बटाईदार को तथा केवल एक-तिहाई भाग भू-स्वामी/जोतदार को मिले (परंपरागत रूप से यह आधा-आधा या इससे भी प्रतिकूल होता था) — ये तीनों (1, 2, 3) सही हैं। किंतु चौथा कथन पूर्णतः विपरीत व गलत है —

तेभागा आंदोलन वास्तव में बटाईदार किसानों द्वारा जमींदारों/जोतदारों के शोषण के विरुद्ध ही चलाया गया था, जमींदारों द्वारा प्रायोजित नहीं।

14

1. Answer: B

Solution: गोलमेज सम्मेलनों में विभिन्न वर्गों व दलों का प्रतिनिधित्व हुआ। बी.आर. आंबेडकर ने दलित/दमित वर्गों का प्रतिनिधित्व किया तथा पृथक निर्वाचिका की माँग रखी। तेज बहादुर सप्रू ने उदारवादी/लिबरल पार्टी (जो कांग्रेस से अलग एक संवैधानिक-सुधारवादी धारा थी) का प्रतिनिधित्व किया। एम.ए. जिन्ना ने मुस्लिम लीग का प्रतिनिधित्व किया — ये तीनों (a, c, d) सही युग्म हैं। किंतु यह दावा करना कि मदन मोहन मालवीय ने 'किसी गोलमेज सम्मेलन में कभी भाग नहीं लिया तथा वे सदैव इसके विरोधी रहे' ऐतिहासिक रूप से गलत है — मालवीय ने वस्तुतः प्रथम व द्वितीय गोलमेज सम्मेलनों में हिंदू महासभा व राष्ट्रवादी हिंदू हितों के प्रतिनिधि के रूप में सक्रिय भागीदारी की थी।

142. Answer: A

Solution: 1935 के भारत सरकार अधिनियम में 'अखिल भारतीय संघ' (All India Federation) की एक महत्वाकांक्षी योजना प्रस्तावित की गई, जिसमें ब्रिटिश भारत के प्रांतों के साथ-साथ देशी रियासतों को भी स्वैच्छिक आधार पर एक संघीय ढाँचे में शामिल करने का प्रावधान था — यह पहला कथन सत्य है। किंतु पर्याप्त संख्या में रियासतों ने इसमें शामिल होने से इनकार कर दिया (मुख्यतः अपनी स्वायत्तता खोने के भय से), जिससे यह संघीय योजना व्यावहारिक रूप से कभी क्रियान्वित नहीं हो सकी — यह दूसरा कथन भी सत्य है। इसी अधिनियम के अंतर्गत प्रांतीय स्वायत्तता के प्रावधानों के आधार पर 1937 में प्रांतीय विधानसभा चुनाव हुए, जिनमें कांग्रेस ने ग्यारह में से आठ प्रांतों में स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया, जो पहली बार भारतीयों को वास्तविक प्रांतीय सत्ता-अनुभव प्रदान करने वाली घटना बनी — यह तीसरा कथन भी सत्य है।

143. Answer: D

Solution: हिंदू महासभा की स्थापना 1915 में हुई, जिसका उद्देश्य हिंदू हितों की रक्षा व हिंदू सामाजिक-राजनीतिक एकीकरण था; बाद के वर्षों में वी.डी. सावरकर इसके सबसे प्रभावशाली व प्रमुख नेता बने, जिन्होंने 'हिंदुत्व' की अवधारणा को स्पष्ट वैचारिक रूप

दिया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की स्थापना 1925 में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने नागपुर में की, जिसका उद्देश्य शारीरिक प्रशिक्षण व सांस्कृतिक-वैचारिक शिक्षा के माध्यम से हिंदू राष्ट्रवादी चेतना का सामाजिक स्तर पर प्रसार करना था। यद्यपि दोनों संगठन व्यापक रूप से हिंदू राष्ट्रवादी विचारधारा से जुड़े माने जाते हैं, इनके संगठनात्मक स्वरूप में स्पष्ट अंतर है — हिंदू महासभा एक राजनीतिक दल के रूप में कार्य करती रही, जबकि RSS स्वयं को प्रारंभ में एक 'सांस्कृतिक-सामाजिक' संगठन के रूप में प्रस्तुत करता रहा, प्रत्यक्ष चुनावी राजनीति से दूरी बनाए रखते हुए। अतः सभी कथन सत्य हैं।

144. Answer: C

Solution: अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (AIWC) की स्थापना 1927 में हुई, जिसमें आयरिश-भारतीय शिक्षाविद् मार्गरेट कजिन्स के प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका रही, तथा प्रारंभ में इसका उद्देश्य मुख्यतः महिला-शिक्षा को बढ़ावा देना था। सरला देवी चौधुरानी ने 1910 में 'भारत स्त्री महामंडल' की स्थापना की, जो महिलाओं के सर्वांगीण उत्थान हेतु कार्यरत था। स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न महिला संगठन उभरे, जिनमें विजयलक्ष्मी पंडित जैसी नेत्रियों का योगदान उल्लेखनीय रहा — ये तीनों (1, 2, 3) सही हैं। किंतु चौथा कथन गलत है — AIWC ने समय के साथ अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार करते हुए बाल-विवाह विरोध, महिला मताधिकार, संपत्ति में महिलाओं के अधिकार व अन्य कानूनी-सामाजिक सुधारों पर भी सक्रिय व प्रभावशाली भूमिका निभाई, यह केवल शिक्षा तक सीमित नहीं रहा।

145. Answer: D

Solution: अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना 1936 में स्वामी सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में हुई, जिसने किसानों के भूमि-अधिकार व जमींदारी-उत्पीड़न के विरुद्ध व्यापक आंदोलन चलाया — बिहार, विशेषतः दरभंगा क्षेत्र, इस आंदोलन का एक प्रमुख केंद्र रहा, जहाँ शक्तिशाली जमींदारों के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध हुआ। अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना 1920 में हुई, जिसके प्रथम अध्यक्ष लाला लाजपत राय बने — यह भारत का प्रथम राष्ट्रीय स्तर का मजदूर संगठन था। ये तीनों (a, b, c) सही तथ्य हैं। किंतु यह दावा करना कि इन दोनों संगठनों का गठन कांग्रेस से 'पूर्णतः स्वतंत्र' रूप से हुआ तथा राष्ट्रीय आंदोलन से इनका 'कोई वैचारिक/व्यावहारिक जुड़ाव कभी नहीं रहा',

ऐतिहासिक रूप से गलत है — वास्तव में इन दोनों संगठनों के कई नेता कांग्रेस के भीतर भी सक्रिय रहे (जैसे जवाहरलाल नेहरू व सुभाष चंद्र बोस दोनों ने अलग-अलग समय पर AITUC की अध्यक्षता भी की), तथा कांग्रेस समाजवादी पार्टी जैसे मंचों के माध्यम से इनका राष्ट्रीय आंदोलन से घनिष्ठ वैचारिक व व्यावहारिक सहयोग बना रहा।

146. Answer: B

Solution: 1928 में साइमन कमीशन के बहिष्कार के जवाब में भारतीय नेताओं ने स्वयं एक संवैधानिक प्रारूप तैयार करने हेतु सर्वदलीय सम्मेलन बुलाया, जिसकी रिपोर्ट मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में तैयार हुई और 'नेहरू रिपोर्ट' कहलाई — यह पहला कथन सत्य है। इस रिपोर्ट ने तत्काल पूर्ण स्वतंत्रता के बजाय डोमिनियन स्टेट्स (औपनिवेशिक स्वराज, जैसा कनाडा या ऑस्ट्रेलिया को प्राप्त था) की सिफारिश की, जो बाद में युवा व अधिक उग्र नेताओं (जैसे सुभाष बोस व नेहरू स्वयं) के लिए असंतोष का विषय बना — यह दूसरा कथन भी सत्य है। मुहम्मद अली जिन्ना ने इस रिपोर्ट में मुस्लिम अल्पसंख्यक हितों की अपर्याप्त सुरक्षा (विशेषतः पृथक निर्वाचिका की समाप्ति के प्रस्ताव) का आरोप लगाते हुए इसके विरोध में 1929 में अपनी प्रसिद्ध '14 सूत्री माँगें' प्रस्तुत कीं, जो आगे चलकर हिंदू-मुस्लिम राजनीतिक दूरी बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण कारण बनीं — यह तीसरा कथन भी सत्य है।

147. Answer: D

Solution: एम.एन. रॉय (मानवेंद्रनाथ रॉय) भारत में साम्यवादी विचारधारा के अग्रणी प्रवर्तकों में गिने जाते हैं, जिन्होंने बाद के जीवन में 'रैडिकल ह्यूमनिज़्म' (मानवतावाद) की ओर वैचारिक रुझान अपनाया — यह सही युग्म है। जयप्रकाश नारायण कांग्रेस समाजवादी पार्टी (CSP, 1934) के प्रमुख संस्थापक सदस्यों में से एक थे, जिन्होंने कांग्रेस के भीतर समाजवादी विचारधारा को बढ़ावा दिया। एस.ए. डांगे भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन के प्रारंभिक व प्रमुख नेताओं में गिने जाते हैं — ये दोनों (b, c) भी सही हैं। किंतु यह दावा करना कि एम.एन. रॉय ने 'सदैव भारत में ही रहकर कार्य किया' तथा विदेश से भारतीय साम्यवादी आंदोलन से उनका 'कोई संबंध नहीं रहा', ऐतिहासिक तथ्यों के पूर्णतः विपरीत है — रॉय ने वास्तव में मैक्सिको में निर्वासन के दौरान 1920 में विदेश में प्रथम भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना (ताशकंद में औपचारिक रूप से) में केंद्रीय भूमिका निभाई तथा वे सोवियत रूस स्थित कॉमिन्टर्न

(साम्यवादी अंतरराष्ट्रीय संगठन) से भी घनिष्ठता से जुड़े रहे, जो उनके कार्य के अत्यंत महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय आयाम को दर्शाता है।

148. Answer: A

Solution: 'बंगाल गजट', जिसे 'हिकीज़ गजट' भी कहा जाता है, भारत में मुद्रित होने वाला प्रथम समाचार-पत्र था, जिसका प्रकाशन 1780 में कलकत्ता से जेम्स ऑगस्टस हिकी ने प्रारंभ किया। यह पत्र अपनी बेबाक व निर्भीक पत्रकारिता के लिए जाना जाता था, जिसमें हिकी ने ईस्ट इंडिया कंपनी के तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स सहित उच्च अधिकारियों के भ्रष्टाचार व कदाचार को बेझिझक उजागर किया — इसी निर्भीकता के कारण अंततः 1782 में हेस्टिंग्स ने इस पत्र को बंद करवा दिया तथा हिकी को कारावास व जुर्माना भुगतान पड़ा। यह घटना भारत में प्रेस-स्वतंत्रता व सरकारी दमन के मध्य संघर्ष की सबसे प्रारंभिक ऐतिहासिक मिसाल मानी जाती है।

149. Answer: D

Solution: भारत में प्रेस पर नियंत्रण हेतु कई कानूनी उपाय क्रमिक रूप से लागू हुए: सर्वप्रथम प्रेस एंड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक्स एक्ट (1867) पारित हुआ, जिसने मुद्रित सामग्री के पंजीकरण को अनिवार्य बनाया (यह मुख्यतः प्रशासनिक-सांख्यिकीय उद्देश्य से था, दमनकारी नहीं)। तत्पश्चात लॉर्ड लिटन के कार्यकाल में कुख्यात वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट (1878) आया, जिसने विशेष रूप से भारतीय-भाषा पत्रों पर कठोर सेंसरशिप लगाई। बीसवीं सदी में लॉर्ड मिंटो के काल में न्यूजपेपर (इनसाइटमेंट टू ऑफेंसेस) एक्ट (1908) पारित हुआ, जो क्रांतिकारी गतिविधियों को उकसाने वाली सामग्री पर नियंत्रण हेतु था। अंततः इंडियन प्रेस एक्ट (1910) पारित हुआ, जिसने प्रेस पर नियंत्रण को और व्यापक व कठोर बनाया। यह कालक्रम 1867→1878→1908→1910 औपनिवेशिक सरकार की क्रमशः बढ़ती दमनकारी प्रेस-नीति को दर्शाता है, जो बढ़ते राष्ट्रवादी आंदोलन के समानांतर तीव्र होती गई।

150. Answer: A

Solution: वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट (1878) को व्यापक रूप से 'गैंगिंग एक्ट' (मुँह बंद करने वाला कानून) कहा जाता है, क्योंकि इसने विशेष रूप से भारतीय-भाषा (वर्नाक्युलर) के समाचार-पत्रों पर ही कठोर प्रतिबंध व सेंसरशिप लगाई, जबकि अंग्रेजी भाषा के पत्र इससे मुक्त रहे — यह स्पष्ट भेदभावपूर्ण नीति थी। लॉर्ड रिपन, जो अपनी उदार व सुधारवादी नीतियों के लिए जाने जाते हैं, ने 1882 में

इस विवादास्पद अधिनियम को औपचारिक रूप से निरस्त कर दिया — ये दोनों कथन सत्य हैं। किंतु यह दावा करना कि यह अधिनियम भारत में प्रेस-नियंत्रण का 'सर्वप्रथम व एकमात्र' उदाहरण था तथा इसके पश्चात राष्ट्रवादी पत्रकारिता 'पूर्णतः समाप्त' हो गई, तथ्यात्मक रूप से पूर्णतः गलत है — जैसा कि पूर्व प्रश्न (Q149) में स्पष्ट है, 1908 व 1910 में भी अतिरिक्त कठोर प्रेस-नियंत्रण कानून बनाए गए, जो इस बात का प्रमाण है कि राष्ट्रवादी पत्रकारिता समाप्त होने के बजाय निरंतर सशक्त व मुखर होती गई, जिससे सरकार को बार-बार नए दमनकारी कानूनों का सहारा लेना पड़ा।